उन्हें सहचर शब्द कहते हैं। वे प्रायः तीन प्रकार के होते हैं—समान अर्थवाले, विपरीत अर्थवाले और सजातीय।

(१) *समान अर्थवाले*—जब एक ही अर्थवाले दो शब्द एक साथ मिलकर आवें। जैसे—हँसी-खुशी, आमोद-प्रमोद, वाद-विवाद, हाट-बाजार।

(२) *विपरीत अर्थवाले*—जब उलटे अर्थवाले दो शब्द एक साथ आ जुटें। जैसे—भला-बुरा, लाभ-हानि, आदि-अन्त, विद्वान्-मूर्ख।

(३) *सजातीय*—जब एक ही जाति के दो शब्द आपस में मिलकर आवें। जैसे—दूध-दही, अजर-अमर।

पर्यायवाची शब्द*

एक ही अर्थ को प्रकट करनेवाले बहुत से शब्द होते हैं। उनमें से किसी विशेष शब्द का किसी विशेष स्थान पर प्रयोग करने से रचना में सुन्दरता आ जाती है। अतः, इन शब्दों को जानना चाहिये। इन शब्दों को जान लेने से कविताओं को समझने में भी बड़ी सुगमता होती है। नीचे कुछ ऐसे शब्द दिये जाते हैं—

आँख—नेत्र, लोचन, नयन, चक्षु, दृग, दृष्टि।

मनुष्य—नर, मानव, मनुज, मानुष।

कमल—जलज, नलिन, अरविन्द, राजीव, पुष्कर, उत्पल और इन्दीवर।

चन्द्र— चन्द्रमा, इन्दु, हिमांशु, सुधांशु, विधु, निशापति।

---

* पर्यायवाची शब्दों की जानकारी शब्द-कोष के निरंतर उपयोग से होती है।

एकार्थक शब्दों में भेद

कुछ पर्यायवाची शब्द व्यवहार में आते ही अलग-अलग अर्थ प्रकट करते हैं। नीचे उनके कुछ उदाहरण दिये जाते हैं—

१. *अज्ञान*—स्वाभाविक बुद्धिहीन।
अनभिज्ञ—जिसे समझने की शक्ति रहते हुए भी किसी बात की जानकारी न हो।

२. *अलौकिक*—जो इस संसार में दुर्लभ हो।
अस्वाभाविक—जो स्वभाव के विरुद्ध हो।

३. *अहंकार*—अपने को उचित से अधिक जानना।
अभिमान—अपने को बड़ा और दूसरे को छोटा जानना।

४. *गर्व*—अपने सच्चे गुणों पर मुग्ध होना।
दर्प—अपने को ऊँचा समझते हुए दूसरे को घृणा की दृष्टि से देखना।

५. *दरिद्र*—जिसके पास आवश्यकता से कम धन हो।
कंगाल—जिसके पास पेट पालने तक का भी धन न हो।

अनेकार्थक शब्द

भाषा में बहुत से ऐसे शब्द हैं जिनके कई अर्थ होते हैं। नीचे कुछ शब्द दिये जाते हैं—

जाति—जन्म, कुल, गोत्र।

जलज—कमल, मोती, मछली, शंख।

तात—भाई, पिता, पुत्र, प्यारा।

कनक—सोना, धतूरा।

चन्द्र—चन्द्रमा, जल, कपूर, सोना।

हि०

प्रा०

भिन्नार्थक शब्द

व्यवहार में आनेवाले अनेक भाषाओं के ऐसे अनेक शब्द हैं जिनकी ध्वनि और उच्चारण समान मालूम पड़ते हैं, लेकिन अर्थ अलग-अलग होते हैं। नीचे लिखे गये उदाहरणों से यह ज्ञात हो जायगा—

१. *आगा* (हिन्दी)—आगे का भाग, अगवाड़ा।
   आगा (फारसी)—सरदार, मुखिया।
२. *आन* (हिन्दी)—लाज, दूसरा।
   आन (फारसी)—समय।
३. *इतवार* (हिन्दी)—रविवार।
   इतवार (फारसी)—विश्वास।
४. *कुल* (संस्कृत)—वंश।
   कुल (अरबी)—सब।
५. *खैर* (हिन्दी)—पान में खाया जानेवाला कत्था।
   खैर (फारसी)—कुशल, कुछ परवाह नहीं।

विपरीतार्थक शब्द

जिस शब्द से किसी शब्द का उलटा अर्थ निकलता है उसे विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहते हैं। जैसे—'शुभ' शब्द का विलोम शब्द 'अशुभ' है। विलोम शब्द कई तरह से बनते हैं। नीचे कुछ उदाहरण दिये जाते हैं—

१. *अ या अन उपसर्ग लगाकर*—कार्य-अकार्य, मंगल-अमंगल, गुण-अवगुण।
२. *उपसर्ग को बदल देने से*—अनुराग-विराग, सरस-नीरस, संयोग-वियोग।

३. शब्दों के पूर्व प्रायः 'अन्' उपसर्ग जोड़कर—आदि-अनादि, आदर-अनादर।

४. शब्दों के लिंग बदल देने से—राजा-रानी, लड़का-लड़की, माता-पिता।

उच्चारण से अर्थ-भेद

कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके उच्चारणों में साधारण भेद मालूम पड़ता है; लेकिन उनके अर्थों में विशेष भेद होता है। नीचे ऐसे शब्दों के कुछ उदाहरण दिये जाते हैं—

१. अंश—हिस्सा। अंस—स्कन्ध, कंधा।
२. चिर—दीर्घ। चीर—कपड़ा।
३. नीर—पानी। नीड़—खोंता, घोंसला।
४. बलि—बलिदान। बली—बलवान।
५. पानी—जल। पाणि—हाथ।

मिश्रित अभ्यास

(१) नीचे लिखे शब्दों के सहचर शब्द बताओ—
खेल, नदी, काम, हिसाब, आय, गरीब, नाच, साग और काला।

(२) नीचे लिखे शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखो—
जल, वायु, आकाश, सूरज।

(३) नीचे के एकार्थक शब्दों में क्या भेद है, उन्हें वाक्यों में व्यवहार कर दिखाओ—
अस्त्र-शस्त्र। दया-कृपा। भक्ति-स्नेह।

(४) नीचे के शब्दों के तुम कितने अर्थ जानते हो?
ताल, शिव, हरि, कर, जीवन, अम्बर।

(५) नीचे भिन्न-भिन्न भाषाओं के समान जान पड़नेवाले शब्दों के जोड़े दिये गये हैं। उनके अर्थ-भेद बताओ—
कंद-कंद। सन-सन्। हार-हार। पर-पर। गौर-गौर।

(६) नीचे के शब्दों के विलोम शब्द बताओ—
संभव, शुभ, सजीव, अनुकूल, उपस्थित, इच्छा, धोबी, घोड़ा और बालक।

(७) नीचे के शब्दों में अर्थ-भेद बताओ—
सुत-सूत। सुर-सूर। अन्न-अन्य। कृत-क्रीत। द्विप-द्वीप।

(८) ऊपर के शब्दों को वाक्यों में व्यवहार करके लिखो।

दूसरा खंड

वाक्य-विचार

जिस शब्द-समूह से पूरा आशय या विचार मालूम हो, उसे वाक्य कहते हैं। जैसे—मैं हँस रहा हूँ। भोर हो गया।

यह याद रखना चाहिये कि शब्दों के सब समूह वाक्य नहीं होते। जैसे—'पानी बरस। अशोक अच्छा।' इन शब्द-समूहों को पढ़ने से स्पष्ट पता चलता है कि इनसे कोई पूरी बात नहीं मालूम होती। यदि इन्हें फिर से लिखा जाय तो इनके रूप इस प्रकार होंगे—'पानी बरस रहा है। अशोक अच्छा लड़का है।' इसलिये यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि वाक्य शब्दों का वह समूह है जिससे एक पूरी बात मालूम हो।

एक बात और। कभी-कभी ऐसा वाक्य भी आता है जिसमें केवल एक ही शब्द होता है। जैसे—आओ। प्रणाम। इन दो वाक्यों में समय और स्थान बचाने के लिये एक-दो शब्द छोड़ दिये गये हैं। यदि इन्हें ठीक से पूरा-पूरा लिखेंगे तो इनके रूप यों होंगे—तुम आओ। आपको प्रणाम करता हूँ।

वाक्यांश—वाक्य के आपस में सम्बन्ध रखनेवाले दो या अधिक शब्दों या शब्द-समूह को, जिनसे किसी बात की पूरी जानकारी नहीं होती, 'वाक्यांश' कहते हैं। जैसे—यह देखते ही। कमरे के बाहर। वह कहता।

उद्देश्य और विधेय

एक शुद्ध और पूरे वाक्य में 'उद्देश्य' और 'विधेय' ये दोनों भाग आवश्यक होते हैं।

दिवाकर पढ़ता है। मेरा भाई आ गया। इन दो वाक्यों में प्रत्येक वाक्य के दो भाग किये जा सकते हैं। जैसे—

प्रथम भाग	द्वितीय भाग
(१) दिवाकर	पढ़ता है।
(२) मेरा भाई	आ गया।

इनमें से प्रथम भाग में 'दिवाकर' और 'मेरा भाई' ऐसे शब्द या शब्द-समूह हैं, जिनके बारे में कुछ कहा गया है। ऐसे खंडों को उद्देश्य कहते हैं।

ऊपर के दो वाक्यों के द्वितीय भाग में 'पढ़ता है' और 'आ गया' ऐसे खंड हैं जो उद्देश्य के बारे में कहे गये हैं। ऐसे खंडों को विधेय कहते हैं।

अभ्यास

(१) वाक्य किसे कहते हैं ? वाक्यों के चार उदाहरण दो।

(२) वाक्यांश से क्या समझते हो ?

(३) वाक्यों के कितने भाग होते हैं ? प्रत्येक का उदाहरण दो।

वाक्य के भेद

स्वरूप के अनुसार—स्वरूप के अनुसार वाक्य तीन प्रकार के होते हैं—साधारण, मिश्र और संयुक्त।

जिस वाक्य में केवल एक उद्देश्य और एक विधेय हों, उसे साधारण वाक्य कहते हैं। जैसे—आलोक खेलता है। वह घोड़े पर बैठा है।

जिस वाक्य में एक साधारण वाक्य और इसीके आश्रित एक या अधिक अंगवाक्य होते हैं उसे मिश्रवाक्य कहते हैं। जैसे—उसने सुना कि कोसी नदी में बाढ़ आ गई है। इसमें 'उसने सुना' यह साधारण वाक्य है और 'कोसी नदी में बाढ़ आ गई है' यह उसका अंग है।

जिस वाक्य में दो या अधिक साधारण या मिश्रवाक्य रहते हैं, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं, क्योंकि वे एक दूसरे के आश्रित नहीं होते। जैसे—(१) आलोक खेलता है और वह घोड़े पर बैठा है। इसमें दो साधारण वाक्य हैं। (२) सुरेश आज देर से उठा, इसलिये जब उसकी माता ने पूछा तब वह लजाकर भाग गया'। इसमें एक साधारण और एक मिश्र वाक्य हैं। (३) 'जब बाप और बेटा दोनों एक घोड़े को लिये जा रहे थे तब उन्हें घोड़े पर सवार न देखकर लोग हँस पड़े और जब बेटे को घोड़े पर बैठाकर बाप पैदल चलने लगा तब दो भलेमानुस कहने लगे कि बड़ी विचित्र बात है।' इसमें दो मिश्र-वाक्य हैं।

अर्थ के अनुसार—अर्थ के अनुसार सभी वाक्य नीचे लिखे आठ रूपों में होते हैं—

१. *प्रश्नबोधक*—जिससे प्रश्न मालूम हो। जैसे—क्या उसने मिठाई खा ली? वे किधर जा रहे हैं?

२. *विस्मयादिबोधक*—जिससे विस्मय आदि मालूम हों। जैसे—वाह! क्या ही अनोखा दृश्य है। हाय राम! तुमने पेंसिल तोड़ दी।

३. सन्देहबोधक—जिससे सन्देह या सम्भव का बोध हो। जैसे—शायद वह लौटे। दिनेश आता होगा।

४. इच्छाबोधक—जिससे इच्छा जानी जाय। जैसे—आपकी उन्नति हो। भगवान् आपका कल्याण करें।

५. आज्ञाबोधक—जिससे आज्ञा का बोध हो। जैसे—इधर आओ। ठीक से बैठो। धूप में मत घूमना।

६. संकेतबोधक—जिससे संकेत समझा जाय। जैसे—यदि तुम समय पर आ जाते तो गाड़ी नहीं छूटती।

७. *विधानबोधक*—जिससे किसी बात का होना देखा जाय। जैसे—नेहरू जी चीन गये। लड़के क्रिकेट खेल रहे हैं।

८. *निषेधबोधक*—जिससे किसी बात का न होना देखा जाय। जैसे—वह अमेरिका नहीं गया। वह झूठ नहीं बोला।

अभ्यास

(१) स्वरूप के अनुसार वाक्य के भेद बताओ और उदाहरण दो।
(२) अर्थ के अनुसार वाक्य के भेद बताओ और प्रत्येक का उदाहरण दो।

वाक्य-परिवर्त्तन

साधारण से मिश्र और मिश्र से साधारण वाक्य

साधारण वाक्य के अंशों को अंगवाक्य में बदल देने से वह मिश्र वाक्य बन जाता है। इसी प्रकार मिश्रवाक्य के अंग-वाक्य को वाक्यांश में बदलने से वह साधारण वाक्य बन जाता है।

हमलोग दो वाक्यों को लें। चिड़िया डाल पर बैठती है। वह बैठते ही चहचहाने लगती है। ये दोनों साधारण वाक्य हुए। इनके बदले हम प्रायः यों कहा करते हैं—जैसे ही चिड़िया डाल पर बैठती है कि वह चहचहाने लगती है। यह मिश्रवाक्य हुआ।

इस प्रकार हमलोग अपने विचारों को ठीक से प्रकट करने के लिये कई वाक्यों को कुछ शब्दों की सहायता से एक वाक्य में प्रकट करते हैं। ऊपर के दो वाक्य 'और' के सहारे एक वाक्य में बदले गये हैं। नीचे कुछ ऐसे ही उदाहरण दिये जाते हैं—

साधारण वाक्य—मेरे पास एक कोट है। वह पुराना है।

मिश्रवाक्य—मेरे पास एक कोट है, परन्तु वह पुराना है।

मिश्रवाक्य—यह कहानी या तो दादी ने सुनाई या नानी ने।

साधारणवाक्य—यह कहानी दादी ने सुनाई। यह कहानी नानी ने सुनाई। दोनों में से किसी एक ने यह कहानी सुनाई।

अभ्यास

(१) नीचे के साधारण वाक्यों को मिश्र-वाक्यों में बदलो—

मेरे बैल के आते ही काली गाय चली जाती है। यात्री ने अपनी रक्षा का कोई उपाय नहीं देखा। होनहार बालक बचपन से ही तेज होते हैं।

(२) नीचे के मिश्रवाक्यों को साधारण वाक्यों में बदलो—

तुम बनारस गये थे, यह हमें क्यों नहीं बतलाया? जिसको धन है वही इस हाथी को खरीदेगा। दिल्ली में लाल किला है, उसे मुगल बादशाह ने बनवाया था।

वाक्य-संयोजन

कई वाक्यों को एक वाक्य में बदलने की विधि को संयोजन कहते हैं। इसके दो नियम हैं। नीचे नियम और उदाहरण दिये जाते हैं—

(१) समापिका क्रिया को असमापिका क्रिया में बदलने से, मिलते हुए पदों का एक ही बार प्रयोग करने से और अव्ययों के व्यवहार से, कई वाक्य एक वाक्य में बदल जाते हैं। जैसे—

कई वाक्य	एक वाक्य
१. मुकुल ने स्नान किया। मुकुल ने कपड़े बदले।	१. मुकुल ने स्नान कर कपड़े बदले।
२. विनोद खिलाड़ी है। विनोद तेज है। विनोद सबों का प्यारा है।	२. यद्यपि विनोद खिलाड़ी है, तथापि तेज होने से सबोंका प्यारा है।

(२) यदि अर्थ समझने में कठिनाई न हो तो वाक्यों के शब्दों को कुछ इधर-उधर करके घटा दिया जा सकता है। जैसे—

कई वाक्य	एक वाक्य
१. महात्मा गाँधी सच्चे वीर थे। उन्होंने सत्य और अहिंसा का पाठ सिखाया। वे हमारे राष्ट्रपिता थे।	१. सत्य और अहिंसा का पाठ सिखानेवाले राष्ट्र-पिता महात्मा गाँधी सच्चे वीर थे।
२. गोस्वामी तुलसीदास ने रामायण लिखी। रामायण हिन्दी का महाकाव्य है। उसकी सर्वत्र पूजा होती है।	२. गोस्वामी तुलसीदास लिखित हिन्दी महाकाव्य रामायण की सर्वत्र पूजा होती है।

अभ्यास

(१) नीचे लिखे वाक्य-समूह को एक वाक्य में बदलो—

मैथिलीशरणगुप्त एक प्रसिद्ध कवि हैं। उनकी प्रशंसा सब करते हैं। गुप्त जी चिरगाँव के रहनेवाले हैं। चिरगाँव झाँसी में है। उनकी प्रशंसा करनेवाले लोग सारे भारत में रहते हैं। सियारामशरणगुप्त उनके छोटे भाई हैं।

वाक्य-वियोजन

वाक्य-संयोजन का उलटा वाक्य-वियोजन होता है। संयो-

जन के नियमों को विपरीत ढंग से काम में लाने से वियोजन होता। जैसे—

एक वाक्य	कई वाक्य
१. रेडियो का बटन घुमाते ही संगीत सुनाई पड़ने लगा।	१. रेडियो का बटन घुमाया। संगीत सुनाई पड़ने लगा।
२. विनोवाजी मंच पर आकर बैठ गये तो चारों ओर तालियाँ बज उठीं।	२. विनोवाजी मंच पर आये। आते ही बैठ गये। चारों ओर तालियाँ बज उठीं।

अभ्यास

(१) नीचे लिखे प्रत्येक वाक्य को कई सुन्दर वाक्यों में बदलो—

महाकवि कालिदास ने एक जगह मनुष्य को 'उत्सव-प्रिय' कहा है। कालिदास का मनुष्य-स्वभाव का ज्ञान गहरा था और इसीसे वह कवि कहलाने के अधिकारी हुए। सभी को अनुभव है कि मनुष्य उत्सव-प्रिय है, लेकिन क्यों प्रिय है?

वाक्यों में शब्दों का प्रयोग

जब हमारे सामने एक ही अर्थ रखनेवाले अनेक शब्द या भिन्न अर्थ रखनेवाले भिन्न शब्द होते हैं तो रचना तैयार करते समय यह प्रश्न आ जाता है कि किन शब्दों को कहाँ रक्खें। ऐसी अवस्था में सोच-विचार कर जिस स्थान पर जिस शब्द की आवश्यकता हो, उसे वहीं रखना चाहिये। नीचे के उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जायगा।

(क) पुस्तक—मैंने यह पुस्तक समाप्त कर ली है। इस पुस्तक में सौ पन्ने हैं। उसने मेरी पुस्तक छीन ली।

(ख) ग्रन्थ—रामायण एक ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के रचयिता तुलसीदास हैं। यह ग्रन्थ बहुत पुराना है।

(ग) हाथ—मेरा हाथ लम्बा है। मुझे एक हाथ कपड़ा चाहिये। उसने मेरा हाथ पकड़ लिया।

(घ) लिखना—कल मैंने पिताजी को एक पत्र लिखा। एक सुन्दर लेख लिखो। गिरीश लाल स्याही से नीले कागज पर लिखता है। उसकी लिखावट सुन्दर है।

(ङ) तुम—अब तुम जा सकते हो। तुमने क्या देखा है कि हँस रहे हो ? मैं तुमको पाँच आने पैसे दूँगा।

अभ्यास

(१) नीचे लिखे वाक्यों को व्यवहार के अनुकूल बनाओ—

गीता एक पुस्तक है। इसमें संस्कृत के दोहे हैं। इसके निर्माता वेदव्यास हैं। उसने मेरा हस्त पकड़ा। बैल जमीन पर शयन कर रहा है। मेरे कक्ष में रोशनी नहीं आती।

अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करना

अशुद्ध वाक्य कानों को खटकते हैं। वाक्यों के भावों पर ध्यान देने से यह बात सहज ही मालूम हो जायगी कि भूल किस कारण हुई है। उन्हें हटा देने से वाक्य शुद्ध रूप में सामने आ जायँगे। नीचे दिये गये उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जायगा।

(१) यह बालक गेंद खेल रहे हैं।

(२) हम पाठशाला जाता हूँ।

(३) यह लड़की रूमाल बना रहा है।

इन वाक्यों को सुनते ही मालूम पड़ता है कि इनमें कहीं-न-कहीं भूलें हैं। इन्हें ध्यान देकर देखने पर यह झलक जायगा कि पहले वाक्य में कर्त्ता और क्रिया के वचन, दूसरे में पुरुष और

तीसरे में लिंग एक-से नहीं हैं। कर्त्ता और क्रिया के वचन में भेद होने से, पुरुष में भेद होने से एवं लिंग में भेद होने से ही ऊपर दिये गये वाक्य अशुद्ध हो गये हैं।

जिन लिंगों, वचनों और पुरुषों में कर्त्ता हैं उन्हीं में यदि क्रियाएँ भी रख दी जायँ; तो वे वाक्य इस तरह शुद्ध दिखाई देंगे—

(१) यह बालक गेंद खेल रहा है।
(२) हम पाठशाला जाते हैं।
(३) यह लड़की रूमाल बना रही है।

अथवा यदि हम क्रिया में कोई भेद न करें और क्रिया के अनुसार कर्त्ता के लिंग, वचन और पुरुष बदल दें, तो वे वाक्य इस प्रकार शुद्ध होंगे—

(१) ये बालक गेंद खेल रहे हैं।
(२) मैं पाठशाला जाता हूँ।
(३) यह लड़का रूमाल बना रहा है।

यह जानने के लिये कि लिंग, वचन और पुरुष कर्त्ता के अनुसार क्रिया के बदले जायँ या क्रिया के अनुसार कर्त्ता के— हमें वाक्य के आशय पर ध्यान देना होगा।

अभ्यास

(१) यदि नीचे लिखे वाक्य अशुद्ध जान पड़ें तो उन्हें शुद्ध करो—
यह लड़का अच्छी परिश्रमी है। गोविन्दी गीत गाकर सोया है। मैं उसके मारे नाकोदम हूँ। इस किताब के कितने पैसे हुए ? हम यह किताब माँगता है। तुमने कहाँ जाना है ?

छूटे हुए शब्दों को प्रकट करना

छूटे हुए शब्दों को प्रकट करने के लिये कोई नियम नहीं है। शब्द-रचना और वाक्य-रचना के प्रयोगों पर ध्यान देने से

छूटे हुए शब्दों को प्रकट करना सहज मालूम पड़ेगा। यहाँ यह बात ध्यान में अवश्य रखनी चाहिये कि हम छूटे हुए एक स्थान के लिये केवल एक ही शब्द या पद चुनें।

(१) मैंने............पहन ली है।
(२) ....भोजन कर रहा है।
(३) शोभा ने चित्र ....है।

ऊपर का कोई वाक्य पूरा नहीं है। प्रत्येक वाक्य का कोई न कोई अंग छूट गया है। यदि इन वाक्यों के छूटे हुए अंशों को प्रकट कर दें तो इनके रूप इस प्रकार होंगे।

(१) मैंने *धोती* पहन ली है।
(२) *सत्यप्रिय* भोजन कर रहा है।
(३) शोभा ने चित्र *उतार लिया* है।

अभ्यास

(१) नीचे के वाक्यों में छूटे हुए शब्दों को दिखलाओ—
रोटी बनाने का—माता—है। माता का हम—करते—। लेकिन माता का—मातापन उस—में है। रसोई का—यदि—से ले—जाय तो उसका—ही—जायगा। प्रेम-भाव—करने का यह—कोई माता तैयार—होगी। उसीके—वह—रहती है।

पद-निर्देश या पदच्छेद

किसी वाक्य में आये हुए शब्दों में व्याकरण घटाना तथा उनका एक दूसरे के साथ सम्बन्ध बतलाना 'पद निर्देश' कहलाता है। इसके कई नाम हैं—वाक्य-विवरण, पदच्छेद, पदपरिचय और पदनिर्णय। अंगरेजी में इसे 'पार्जिङ्ग' कहते हैं।

पद-निर्देश में नीचे लिखी बातें बताई जाती हैं—

१. *संज्ञा* के पद-निर्देश में—संज्ञा, संज्ञा के भेद, लिंग, वचन, कारक आदि और अन्य शब्दों के साथ उसका सम्बन्ध।

२. *सर्वनाम* के पद-निर्देश में—सर्वनाम, सर्वनाम के भेद, पुरुष, लिंग, वचन, कारक और अन्य शब्दों के साथ उसका सम्बन्ध।

३. *विशेषण* के पद-निर्देश में—विशेषण, विशेषण के भेद, लिंग, वचन, कारक आदि और उसका विशेष्य।

४. *क्रिया* के पद-निर्देश में—क्रिया, क्रिया के भेद, वाच्य, प्रकार, काल, लिंग, वचन, पुरुष और वह शब्द जिससे क्रिया का सम्बन्ध रहता है।

५. *अव्यय* के पदनिर्देश में—अव्यय, अव्यय के भेद और यदि अव्यय सम्बन्ध रखनेवाला हो तो सम्बन्धी शब्द।

उदाहरण के लिये एक वाक्य—

मैं अच्छी पुस्तकें धीरे-धीरे पढ़ता हूँ।

मैं—सर्वनाम, पुरुषवाचक, उत्तमपुरुष, पुँल्लिंग, एकवचन, 'पढ़ता हूँ' क्रिया का कर्त्ता।

अच्छी—विशेषण, गुणवाचक, स्त्रीलिंग, बहुवचन, कर्म-कारक, इसका विशेष्य 'पुस्तकें' है।

पुस्तकें—संज्ञा, जातिवाचक, स्त्रीलिंग, बहुवचन, कर्मकारक, 'पढ़ता हूँ' क्रिया का कर्म।

धीरे-धीरे—रीतिवाचक क्रियाविशेषण, 'पढ़ता हूँ' क्रिया की विशेषता बतलाता है।

पढ़ता हूँ—क्रिया, सकर्मक, कर्तृवाच्य, साधारण, समान्य वर्त्तमान, पुँल्लिंग, एकवचन, उत्तमपुरुष, इसका प्रधान कर्त्ता 'मैं' और कर्म 'पुस्तकें' है।

अभ्यास

(१) पद-निर्देश से क्या समझते हो ?

(२) नीचे लिखे वाक्य के प्रत्येक पद का पद-निर्देश करो—

राकेश और उसका भाई मुकेश, दोनों खूब पढ़ते हैं।

वाक्य-विश्लेषण

वाक्य-विश्लेषण करते समय वाक्य के अंग अलग-अलग रख दिये जाते हैं और यह बताया जाता है कि उनका एक दूसरे के साथ क्या सम्बन्ध है; वाक्य-विश्लेषण को वाक्यविग्रह, वाक्य-विभाजन, वाक्य-पृथक्करण, वाक्यविच्छेद भी कहते हैं। वाक्य-विश्लेषण साधारण, मिश्र और संयुक्त—सभी वाक्यों का होता है।

साधारण वाक्य के विश्लेषण में चार बातें दिखाई जाती हैं—उद्देश्य, उद्देश्य का विस्तार, विधेय और विधेय का विस्तार। विधेय के विस्तार में कर्म, कर्म का विस्तार और विधेयार्थवर्द्धक, ये तीन बातें दिखाई जाती हैं।

यहाँ पर एक साधारण वाक्य के विश्लेषण का उदाहरण दिया जाता है।

विमल का भाई मेरी पुस्तक धीरे-धीरे पढ़ता है।

विश्लेषण —

उद्देश्य		विधेय			
			विस्तार		
उद्देश्य	विस्तार	क्रिया	कर्म	कर्म का विस्तार	विधेयार्थवर्द्धक
भाई	विमल का	पढ़ता है	पुस्तक	मेरी	धीरे-धीरे

अभ्यास

(१) वाक्य-विश्लेषण किसे कहते हैं ?
(२) नीचे लिखे वाक्य का विश्लेषण करो—
वसन्त में हवा धीरे-धीरे बहती है।

शुद्ध हिन्दी कैसे लिखें ?

हिन्दी हमारी मातृभाषा है। इसलिये हमें अपनी भाषा का स्वरूप शुद्ध रखना चाहिये। प्रारम्भ में यदि इसपर ध्यान न दिया गया तो आगे चलकर भद्दी भूलों से हमारी भाषा का रूप बिगड़ जायगा। नीचे भाषा की शुद्धता और सुन्दरता से सम्बन्ध रखनेवाली कुछ ऐसी बातें बतलाई गई हैं जो अधिक उपयोगी हो सकती हैं।

अक्षरों के शुद्ध प्रयोग

कभी-कभी देखने में आता है कि हम वाक्यों के शुद्ध रूप तो जानते हैं, पर उन्हें लिखते समय अक्षरों के शुद्ध प्रयोग नहीं करते जिससे वर्णन्यास की भूलें हो जाती हैं। उनसे बचने के लिये नीचे कुछ नियम दिये जाते हैं—

१ अनुस्वार और अर्द्धचन्द्र—ठीक से ध्यान न देने और कुछ छपाई की असुविधा के कारण उनके प्रयोग में गड़बड़ी हो जाती है। यदि उच्चारण में अधिक समय लगे या अनुस्वार ङ ञ ण न म के रूप में लिखा जाय तो पूरा अनुस्वार लिखना चाहिये और यदि उच्चारण में कम समय लगे तो अर्द्धचन्द्र के रूप में। जैसे—हंस और हँसी, संखिया और अँखियाँ।

२ अक्षरों के नीचे बिन्दी—इसके प्रयोग में पूरी सावधानी

रखनी चाहिये। 'ड' और 'ढ' के नीचे बिन्दी लगाने से 'ड़' और 'ढ़' हो जाता है। ये स्वतंत्र अक्षर हैं। जैसे—कपड़ा, दाढ़ी।

३. 'र्' में उकार और ऊकार मिलाने से उसके ये रूप होंगे—र् + उ = रु ; र् + ऊ = रू। जैसे—रुपया, स्वरूप।

४. जब 'र्' संयोग के पहले रहे तब वह आगेवाले अक्षर के माथे पर लिखा जायगा जिसे 'रेफ' कहते हैं। जैसे—गर्व, मर्म, धर्म। इसी प्रकार जब 'र' अन्त में रहे तब वह अपने से पहलेवाले अक्षर के नीचे इस रूप में (्र) और कहीं पर इस रूप में (‸) लिखा जायगा। जैसे—भ्रम, क्रम, व्याघ्र, राष्ट्र।

५. यदि 'ङ, ञ, ण, न और म' का संयोग अपने ही वर्ग के किसी वर्ण से हो तो उसके स्थान पर लोग अनुस्वार का प्रयोग भी करते हैं। जैसे—लङ्का—लंका, अञ्चल—अंचल, गाण्डीव—गांडीव, वसन्त—वसंत, अनुकम्पा—अनुकंपा।

६. ऋ, र और ष के आगे 'ण' ही आता है, 'न' का व्यवहार नहीं किया जाता है। जैसे—ऋण, रण, आभूषण, दूषण।

विराम-चिह्न

वाक्यों में कुछ ऐसे चिह्न लगाये जाते हैं जो उनके बोलने में सहायक होते हैं और उनके पदों, खंडवाक्यों और वाक्यांशों में एक दूसरे के साथ सम्बन्ध दिखलाते हैं।

अल्पविराम

सबसे छोटा विराम चिह्न अल्पविराम (,) है। जहाँ बहुत थोड़ी देर रुकने की आवश्यकता हो, जहाँ अनेक वस्तुओं के नाम

गिनाये जायँ, वहाँ यही चिह्न लगाया जाता है। जैसे—बच्चो, जब तुम बड़े होगे तब तुम उनके बारे में अधिक ज्ञान प्राप्त करोगे। सभा में छात्र, शिक्षक, नेता, वकील, मजदूर इत्यादि सभी उपस्थित थे।

अर्द्ध विराम

अर्द्ध विराम का चिह्न (;) है। यह ऐसी जगह लगता है जहाँ पूर्णविराम से कम, लेकिन अल्पविराम से अधिक रुकना हो। जैसे—मैं निर्धन आदमी हूँ ; मुझे न सताइये। हम सभी जानते हैं कि सूर्य पृथ्वी से बहुत दूर है ; वह पृथ्वी से बहुत बड़ा है।

पूर्णविराम

पूर्णविराम का चिह्न (।) है, इसे 'पाई' भी कहते हैं। जहाँ यह लिखा रहे वहाँ भलीभाँति रुकना चाहिये। यह प्रत्येक वाक्य के अन्त में आता है। जैसे—गिरधर फूल तोड़ रहा है। कृपया चुप रहें।

प्रश्नसूचक

प्रश्नसूचक चिह्न (?) है। जब प्रधान वाक्य में कोई प्रश्न पूछा जाय तो उसके अन्त में यह चिह्न लगाया जाता है। जैसे—तुम्हारा नाम क्या है ? आपने क्या कहा ?

आश्चर्यसूचक

आश्चर्यसूचक चिह्न (!) है। यह विस्मयादिबोधक अव्ययों के आगे और वाक्यों के आगे भी लगाया जाता है। जैसे—वाह ! क्या ही सुन्दर फूल है ! हाय ! वह अब डूबा ! लो ! डूब ही गया !! बाप रे बाप ! आग लगी !! आग !!!

उद्धरण चिह्न

उद्धरण चिह्न (" ") है। जब किसीका कोई कथन, कोई वाक्य या वाक्य का अंश उद्धृत किया जाता है तब उसके आरम्भ और अन्त में उलटे अल्पविराम का यह चिह्न "..." लगाया जाता है। जैसे—भारत के प्रधान मन्त्री ने कहा, "मैं काम चाहता हूँ, उसकी सफाई नहीं।"

मुहावरे

मुहावरा उन वाक्यांशों या शब्दों को कहते हैं जिनके प्रचलित अर्थ शाब्दिक अर्थों से भिन्न होते हैं। जैसे—शिवाजी ने औरंगजेब की सेना के 'दाँत खट्टे' कर दिये। इस वाक्य में 'दाँत खट्टे करना' यह मुहावरा है। इसका शाब्दिक अर्थ हुआ—'किसी खट्टी वस्तु को खिलाकर दाँत खट्टे कर देना।' किन्तु इसका प्रचलित अर्थ है—'सेना को पस्त कर देना।'

मुहावरे में उसका अर्थ उसके भीतर के किसी शब्द विशेष के लक्षण से प्रकट होता है। जैसे—'कुँवर सिंह की आँखों से अंगारे वरसने लगे।' इस वाक्य में 'आँखों से अंगार वरसना' मुहावरा है। इसका अर्थ है, 'क्रोध होना।' ऐसा देखने में आता है कि किसी व्यक्ति को क्रोध आने पर उसकी आँखें प्रायः लाल हो जाती हैं। और, अंगार का रंग भी लाल होता है। इसलिये क्रोध की अवस्था में आँखों में अंगार के लक्षण पाये जाते हैं। यहाँ पर 'आँखों से अंगार वरसना' का अर्थ अंगार के लक्षण प्रकट होना है।

मुहावरे का प्रयोग वोलचाल से लेकर सुन्दर रचना की भाषा तक में किया जाता है। मुहावरे के प्रयोग से वाक्य में सुन्दरता और चुस्ती आ जाती है। जो वात अधिक वाक्यों में स्पष्ट हो

सकती है वह मुहावरे के प्रयोग से थोड़े ही शब्दों में स्पष्ट हो जाती है।

नीचे कुछ मुहावरे दिये जाते हैं—

१. मुँह भर के—जितना जी चाहे—जो कुछ माँगना हो, मुँह भर के माँग लो।

२. मुँह में पानी भर आना—बहुत ललचाना—जलेबी का नाम सुनते ही उसके मुँह में पानी भर आता है।

३. हाथ की मैल—तुच्छ वस्तु—धन हाथ की मैल है।

४. हाथ फैलाना—याचना करना—रामू ने सेठजी के आगे हाथ फैला दिये।

५. आँख का तारा—बहुत प्यारा व्यक्ति, संतान—अनिल मेरी आखों का तारा है।

६. आँखों पर बिठाना—बहुत आदर-सत्कार करना—एक गरीब की कुटिया में जब महात्माजी पधारे तो उसने उन्हें आँखों पर बिठा लिया।

७. नाक कटना—प्रतिष्ठा नष्ट होना—जबसे दीनू चोरी में पकड़ा गया है तबसे उसके पिता की नाक कट गई है।

८. नाक की सीध में—ठीक सामने—मेरा घर मन्दिर की नाक की सीध में है।

९. सिर-आँखों पर होना—सहर्ष स्वीकार करना—आपकी आज्ञा सिर-आँखों पर है।

१०. सिर पर पाँव रखना—बहुत जल्द भाग जाना—कोतवाल के आते ही चोर सिर पर पाँव रखकर भाग गया।

११. उँगली उठाना—दोषी बताना—हम ऐसा कोई काम न करें जिससे लोग हम पर उँगली उठायें।

१२. उँगली करना—हैरान करना—भर दिन काम करो, फिर भी वे उँगली किये जाते हैं।

१३. कान उठाना—होशियार होना—बिगुल बजते ही घोड़ों के कान उठ गये।

१४. कान काटना—मात करना—महारानी लक्ष्मीबाई बहादुरी और होशियारी में बड़े-बड़े मर्दों के कान काटती थीं।

१५. गाल फुलाना—रूठना—ब्रजशंकर बात-बात में गाल फुला लेता है।

१६. गाल बजाना—डींग मारना—तुम जानते हो कुछ नहीं, पर गाल बजाने में बड़े तेज हो।

१७. दाँतकाटी रोटी—गहरी दोस्ती—दिवाकर और प्रभाकर की तो दाँतकाटी रोटी है।

१८. दाँतों तले उँगली दबाना—दंग रहना—उस छोटे-से बालक की बुद्धिमानी देखकर सबों ने दाँतों तले उँगली दबाई।

१९. बालपकना—बूढ़ा हो जाना—मैंने तो छात्रों को पढ़ाने में ही बाल पकाये हैं।

२०. बाल-बाल बचना—हानि पहुँचने में बहुत थोड़ी कसर रह जाना—परसों की आँधी में वह बाल-बाल बच गया।

२१. ओठ चाटना—स्वाद की लालसा रखना—कल कैसे अच्छे रसगुल्ले खाये थे, अब तक ओठ चाटते होंगे।

२२. ओठ मलना—कड़वी बात कहनेवाले को दंड देना—फिर ऐसी बात कहोगे तो ओठ मल देंगे।

२३. पानी करना—सरल कर देना—मैंने हिसाब को पानी कर दिया।

२४. पानी का बुलबुला—शीघ्र नष्ट होने वाला—कबीरदास की दृष्टि में यह संसार पानी का बुलबुला है।

२५. खून का प्यासा—हत्या करने का इच्छुक—बिरजू हत्यारे के खून का प्यासा था।

२६. खाक छानना—मारा-मारा फिरना—अपने पुत्र की खोज में वह खाक छानता फिरा।

कहावतें

कहावत का प्रयोग किसी प्रसंग के आने पर, अलग वाक्य के समान होता है। कहावत का प्रयोग बोलचाल से अधिक होता है। मुहावरे और कहावत में भेद यह है कि मुहावरे का, शब्द की भाँति एक निश्चित अर्थ होता है और उसका व्यवहार वाक्य के भीतर होता है। किन्तु कहावत का व्यवहार स्वतंत्र वाक्य की भाँति होता है। कहावत को लोकोक्ति भी कहते हैं।

नीचे कुछ कहावतें दी गई हैं और उनके भाव भी बताये गये हैं। उससे तुम समझ सकते हो कि उनका व्यवहार कहाँ होता है।

१. एक पन्थ दो काज = एक ही उद्योग से जहाँ दो या कई काम सध जायँ।

२. ऊँची दूकान फीका पकवान = जहाँ बाहरी दिखावा अधिक हो, पर भीतरी तत्व कुछ भी न हो।

३. अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता = जो काम बहुत आदमियों द्वारा होनेवाला हो उसे अकेला आदमी नहीं कर सकता।

४. बासी बचे न कुत्ता खाय = काम समाप्त हो जाने पर, निश्चिंत होने पर।

५. मुल्ला की दौड़ मसजिद तक = उस व्यक्ति के लिये जिसकी योग्यता सीमित हो।

६. दान की बछिया के दाँत नहीं देखे जाते = बिना मूल्य में किसी दी हुई वस्तु के गुण-दोषों की खूब छानबीन करने पर।

७. का वर्षा जब कृषी सुखाने = मौका निकल जाने पर होने-वाला काम बेकार हो जाता है।

८. आँख के अंधे नाम नयनसुख = गुण के विरुद्ध नाम।

९. देखिये, ऊँट किस करवट बैठता है = जहाँ यह मालूम ही न पड़े कि काम का फल क्या होगा।

१०. गागर में सागर भरना = जहाँ थोड़े में बहुत सी बातें कह दी जाय।

११. पराधीन सपनेहु सुख नाहीं = गुलामी का दुःख प्रकट करने के लिये।

१२. साँच को आँच क्या = सच्चा आदमी कभी नहीं डरता।

मिश्रित अभ्यास

(१) उच्चारण से क्या समझते हो ?

(२) अनुस्वार और अर्द्धचन्द्र में क्या अन्तर है ? उदाहरण देकर बताओ।

(३) नीचे के शब्दों को शुद्ध करो और कारण बताओ—
मोहण, बहुत, मनुस्य, चन्द्रग्रहन, धनुशवान, क्रया, हँस, हन्सी, चन्चल, ञन।

(४) विराम किसे कहते हैं ?

(५) नीचे के वाक्यों में विराम चिह्नों का प्रयोग करो—
हमारा जन्म इस भारत भूमि में हुआ यह स्वर्ग से भी सुन्दर है यहाँ अनेक ऋषि महात्मा विद्वान् विचारक हो गये हैं किसीने कहा है दुर्लभं भारते जन्म हमारा देश सभी देशों का शिरमौर था

परन्तु आज उसकी स्थिति सन्तोषजनक नहीं क्या तुम अपने देश को नहीं उठाओगे ऐसा करो तो सब कहेंगे तुम धन्य हो महान् हो।

(६) नीचे के मुहावरों के अर्थ बताकर उनका अलग-अलग वाक्यों में व्यवहार करो—

मुँह धो रखना, हाथ साफ करना, आँख मूँदना, उँगलियों पर नचाना, कान लगना, गाल करना।

(७) निम्नलिखित प्रत्येक कहावत का आशय प्रयोग द्वारा दिखलाओ—

मन चंगा कठौती में गंगा। टाट पर रेशम का बखिया। अंधों में काना राजा। आधा तीतर आधा बटेर।

हिन्दी प्रयोग के कुछ नियम

हमलोग व्याकरण और रचना के नियमों को जानकर भी भ्रमवश कुछ ऐसी भूलें कर बैठते हैं जो हमारे लिये अशोभन है। अब हिन्दी का प्रचार घर-घर हो रहा है। ऐसी दशा में हमें हिन्दी बोलते और लिखते समय शब्दों के प्रयोग पर ध्यान देना चाहिये। इसमें थोड़ा सावधान रहने से हम अच्छी हिन्दी लिख सकते हैं और हमारी प्रशंसा हो सकती है। यह दो-चार दिनों का काम नहीं है। इसके लिये धैर्यपूर्वक अभ्यास करते रहना चाहिये और निरन्तर भाषा को माँजते रहना चाहिये। विद्यार्थियों के पथ-प्रदर्शन के लिये नीचे कुछ नियम दिये जाते हैं।

(१) बोलने और लिखने के समय शब्दों के उचित रूप का पूरा ध्यान रखना चाहिये। जैसे हम कहते हैं—वह एकाएक चिचिआने लगा या वह सूता हुआ था। इसके बदले 'वह एकाएक चिल्लाने लगा और वह सोया हुआ था' लिखना चाहिये।

(२) किसी शब्द का प्रयोग करते समय उसके अर्थ पर विचार कर लेना चाहिये जिससे उसका भाव सभीको ठीक से समझ में आ जाय। इसके लिये हमें सीधे-सादे वाक्य लिखने चाहिये। जैसे, हम कहते हैं—वह अपने को चतुर और चालाक समझते हैं। वे समूचे संसार भर भ्रमण कर आये हैं। पहले वाक्य में जो अर्थ 'चतुर' का है वही 'चालाक' का भी। इसलिये दोनों में किसी एक को लिखना चाहिये। दूसरे वाक्य में जो भाव 'समूचे' का है वही भाव 'भर' का है। इसलिये दोनों में से एक शब्द का प्रयोग व्यर्थ है।

(३) शब्दों का चुनाव करते समय यह ध्यान में रखना चाहिये कि हम जिन शब्दों को चुन रहे हैं वे प्रसंग के अनुसार ठीक बैठते हैं या नहीं। इसलिये वाक्य में उसी शब्द को लाना चाहिये जो हमारे मन के भाव को ठीक तरह से प्रकट कर सके। जैसे, हम कहते हैं—'बरफ ठंढी है। उसने मुझे दो हरे आम दिये जो खट्टे थे।' यहाँ यह जानना चाहिये कि बरफ ठंढी ही होती है। इसलिये केवल बरफ कहने से काम चल जायगा। इसी प्रकार 'हरा' शब्द भ्रामक है। हरा आम मीठा भी हो सकता है और पीला आम खट्टा भी हो सकता है। इसलिये 'कच्चा आम' और 'पका आम' कहना उचित है।

(४) किन्तु वस्तु का धर्म, गुण, स्वभाव और प्रचलित रीति के अनुसार ही उसके सम्बन्ध में शब्द व्यवहार करना चाहिये।

जैसे, कोई कहे कि 'अजगर ने एक आदमी को डँस लिया'। तो यह ठीक नहीं होगा। अजगर इतना बड़ा होता है कि वह अपने शरीर को इधर-उधर बराबर नहीं कर सकता है। हाँ, उसके सामने जो चीज पड़ जाय उसे वह 'निगल' सकता है। इसी प्रकार यदि कोई कहे कि 'एक साँप वहुत देर से मेढ़क पर मँड़रा रहा था।' तो यह प्रयोग भी ठीक नहीं होगा, क्योंकि 'मँड़राना' शब्द प्रायः चील, हवाई जहाज आदि के लिये आता है। जैसे— आकाश में चील मँड़रा रही थी। साँप के लिये हम कह सकते हैं कि 'एक साँप वहुत देर से मेढ़क पर घात लगाये हुए था।'

(५) हमारे शरीर में मुँह के ऊपर नाक है या नाक नीचे मुँह है। इसमें हेरफेर हो जाय तो हमारा चेहरा व्यंग्य चित्र हो जायगा। इसी तरह वाक्य में प्रत्येक शब्द का अपना एक स्थान होता है। शब्दों को उचित स्थान पर रखने से ही वाक्य शुद्ध और सुन्दर होता है। 'थका वटोही जाते-जाते' या 'दीपक जलता रात भर' कविता की पंक्तियों में भले ही ठीक वैठें, पर गद्य में इस तरह के वाक्य भले नहीं लगते। गद्य में तो 'वटोही जाते-जाते थक गया।' और 'दीपक रातभर जलता रहा।' कहना ही ठीक होगा। अतएव गद्य में वाक्य-रचना के जो नियम हैं उनका सदा पालन करना चाहिये।

अभ्यास

(१) नीचे दिये गये वाक्यों में प्रयुक्त शब्दों के रूपों, स्थानों और अर्थों पर ध्यान देकर वाक्यों को ठीक करो—

मेरे भूख लगी है। हम कहे थे कि मत जाओ। वह उसे श्राप दे दिया। यह विषय पर वाद-विवाद करना अच्छा नहीं। पाप करनेवाले नरक में जात हैं। तुम्हारा भाई कल घर पर जो

किया था, वही तुम भी कर रहे हो। मैं गरम धूल से थक गया हूँ। एक दिन किसी ने राजा से चुगली खाई कि वे कविता बहुत अच्छा जानते हैं। कृपया आप ही यह बता देने की कृपा करें। पुस्तक अच्छी बहुत है। वे जंगलियों की तरह आपस में लड़ते हैं। उस लड़के ने कहा कि उसके पिता उसे बहुत मारते हैं और उसे डर है कि उसके प्राण न बचेंगे। पूर्व इसके कि कोई बोले, हम स्वयं बोल पड़ते हैं। उसने उधर देखा और बोला। वहाँ जंगली फल और झरने का पानी पीकर हमलोग आगे बढ़े।

भाव की अभिव्यक्ति

मनोहर चला गया। मनोहर ने प्रस्थान किया। मनोहर रवाना हो गया। मनोहर नें गमन किया। उपर्युक्त वाक्यों में *चला गया* का जो भाव है वही भाव *प्रस्थान किया*, *रवाना हो गया* तथा *गमन किया* का भी है। इन सबका तात्पर्य एक-सा है, अथवा ये सब वाक्य समानार्थक हैं।

इसी प्रकार—

'*भोर हुआ*' का भाव '*प्रभात हुआ*', *ऊषा की लाली फैल गई*', '*दिनकर का आगमन हुआ*', '*सूरज निकल आया*', '*रात बीत गई*', '*दिनपति गगनांगन में आकर संसार की ओर झाँकने लगे*', *दिवाकर का—किरणों का—रथ दौड़ने लगा*', *भुवनभास्कर ने अपनी रश्मियाँ बिखेर दीं*'—इतने प्रकार से भी व्यक्त किया जा सकता है। इसलिये समानार्थ शब्दों को विभिन्न प्रकार से प्रयोग करने से विभिन्न ढंगों से एक ही भाव की अभिव्यक्ति हो सकती है।

अभ्यास

(१) किसी भाव की अभिव्यक्ति से क्या समझते हो ?

(२) नीचे लिखे वाक्यों के भावों को उन्हीं अर्थों में विभिन्न प्रकार से वाक्यों में व्यक्त करो—

आकाश में मेघ घिरे हुए हैं। पत्थर बहुत कड़ा होता है। पेड़ से पत्ते झड़ गये। बसन्त आ गया। पक्षिगण जाग गये। फूल कितना कोमल है। चलो हवा खा आवें।

अनुच्छेदों की क्रमबद्धता

जिस विषय का वर्णन करना हो उसका उल्लेख क्रम से करना चाहिये। पहले अनुच्छेद में जो कुछ कहा जाय उसके बाद के अनुच्छेद में, पहले जिस विषय का वर्णन किया जा चुका हो, उसके आगे का क्रमानुसार वर्णन करना चाहिये, जिसका आरम्भ नई पंक्ति से होगा। ऐसा करने से वर्णित विचारों का सिलसिला ठीक हो जाता है और उनके समझने में आसानी होती है। संवाद या कथोपकथन में प्रत्येक की उक्ति को अलग-अलग एक-एक अनुच्छेद में रखना चाहिये। यदि रचना के बीच-बीच में 'कहा' और 'बोला' क्रियाएँ आवें तो समूचे वार्तालाप को एक ही अनुच्छेद में रखना उचित है।

नीचे दिये गये उदाहरणों से ये स्पष्ट हो जायँगे।

मैंने कहा कि स्वतंत्र बुद्धि विद्यार्थी का पहला और मुख्य लक्षण है। स्वतन्त्र-बुद्धि माने वह बुद्धि जिसपर कोई दबाव नहीं है। वही सत्याग्रही बुद्धि है। इस बुद्धि के द्वारा तुम संसार की तरफ देखो। तुम्हें अनन्त चमत्कार दिखाई देंगे।

लेखक का कहना है कि बिना विचार का दिमाग रखना संभव नहीं है। अगर तुम कहोगे कि विचार नहीं बनाऊँगा, तो लोग तुम्हें बनायेंगे। बनो मत। दुनिया के हाथों में महज मिट्टी बनकर न रहो।

ऊपर दो अनुच्छेद लिखे गये हैं। क्या पहले अनुच्छेद में प्रकट किये गये विचारों का विकास दूसरे अनुच्छेद में हुआ है? पहले अनुच्छेद में बताया गया है कि विद्यार्थी की बुद्धि स्वतंत्र होनी चाहिये और कहा गया है कि इस बुद्धि के द्वारा संसार का चमत्कार देखना चाहिये। दूसरे अनुच्छेद में इनसे सम्बन्ध रखनेवाली अन्य बातें कही जातीं तो अच्छा होता; लेकिन ऐसा नहीं किया गया है। बल्कि केवल यह बताया गया है कि बिना विचार का दिमाग रखना संभव नहीं है। इस दूसरे अनुच्छेद में कथित विषय में पहले अनुच्छेद में कही गई बातों का विकसित रूप देखने को नहीं मिलता।

अब यदि हम ऊपर दिये गये अनुच्छेदों का क्रम बदल दें तो उनमें वर्णित विचारों का सिलसिला ठीक हो जायगा और उन्हें समझना सहज हो जायगा।

हरीश—आप तो बस इसी पर नाराज हो गये। पहले मेरी बात सुन तो लीजिये। किताब मैंने नहीं ली है। मेरी यह आदत नहीं।

गोपेश—कौन कहता है कि आप की आदत बुरी है? कहाँ की बात, कहाँ ले जाते हैं? जाइये, मैं आपसे न बोलूँगा।

उस दिन पवनार का एक लड़का मुझे रास्ते में मिला और बोला—"मुझे खुजली हो गई है, कोई उपाय बताइये।"

मैंने कहा—"रोज सवेरे गाय का ताजा मट्ठा पीए जाओ, इससे तुम्हारा रोग जाता रहेगा।" गाँव के मेरे सारे अनुभव का यह निचोड़ है कि गाय का ताजा मट्ठा गाँव के लिये एक भार' तारक तत्व है।

अभ्यास

(१) अनुच्छेद किसे कहते हैं? अनुच्छेदों को कैसे क्रमबद्ध करना चाहिये?

(२) नीचे की पंक्तियों को क्रमानुसार अनुच्छेदों में लिखो—

गोस्वामी तुलसीदास राम-भक्त-कवि थे। उनकी कविता का प्रधान उद्देश्य राम-भक्ति का पवित्र गान था। समूचा रामचरितमानस भक्ति की इस अमृत धारा से ओत-प्रोत है। गोस्वामीजी का सामाजिक आदर्श वही है जो हजारों वर्ष पूर्व आर्य-संस्कृति के समय निर्धारित हुआ। उनके रामचरितमानस में एक व्यक्ति के साथ जो अपेक्षित आचरण होना चाहिये, उसकी बड़ी ही सुन्दर परिभाषा प्रस्तुत की गई है। खेद का विषय है कि आज समाज में तुलसी के अध्ययन की रुचि मन्द पड़ती जा रही है। यह हमारे मानसिक पतन का परिचायक है; क्योंकि हमारा मस्तिष्क उनके सिद्धान्तों और मर्यादाओं से शून्य हो गया है। राम की प्राचीन गाथा को संस्कृत के धूमिल वातावरण से उठाकर तुलसी ने एक नवीन वातावरण में ला रक्खा है। तुलसी के रामचरितमानस में उनके आदर्श स्थापन के कारण एक अद्भुतकथा बन गई है जो राम सम्बन्धी अन्य सभी कथाओं में अद्वितीय है। तुलसी की राम-भक्ति किसी भक्त की अन्ध आसक्ति नहीं है। उनकी भक्ति के पीछे लोक-कल्याण की विराट भावना निहित है।

सारांश

जो बात पहले विस्तार के साथ अधिक वाक्यों में कही जाय उसे संक्षेप में इस प्रकार पहले से कम वाक्यों में प्रकट किया

जाय जिससे कोई भाव छूटने न पाये। इसे उन वाक्यों का सार या सारांश कहते हैं। इसमें बहुत से भावों में से मुख्य-मुख्य भावों को चुनना पड़ता है। नीचे के उदाहरण से यह स्पष्ट हो जायगा—

जैसे हिन्दी में तुलसी-रामायण लिखी गई है, वैसे ही तामिल में या बंगला में क्या सौ बरस के अन्दर कोई उत्तम ग्रन्थ लिखा गया है जो गाँव-गाँव में फैला हो? प्राचीन जमाने से ऐसा कोई साधन नहीं था जैसा हमारे यहाँ अब है। जैसे प्रिंटिंग प्रेस। प्रिंटिंग प्रेस जैसे महान् प्रचारक के होते हुए भी ऐसा क्यों नहीं हुआ? मैं तामिल नहीं जानता। लेकिन मेरे भाइयों ने बताया है कि ऐसा कोई ग्रन्थ नहीं जिसका प्रचार देहात तक हुआ हो। बहुत से प्रकाशक मुझसे मिल चुके हैं और मैं उनसे पूछ आया हूँ कि आप प्रकाशक हैं या अनुवादक? पुराने जमाने में जब कोई पुस्तक लिखता था तो उसको लेकर घूम-घूमकर उसका प्रचार भी करता था। मगर आज हम मान बैठे हैं कि प्रिंटिंग प्रेस से हमारा काम बन गया। तुलसी-रामायण ने जनता की सच्ची सेवा की है। नागपुर में मुझे जब तुलसी-रामायण कहने का मौका मिला तो एक बात पर मेरा ध्यान गया। आजकल छोटे बच्चों को अक्षर सिखाने के लिये ऐसा पाठ लिखा जाता है जिसमें संयुक्ताक्षर नहीं होते। नागरी और बंगला में संयुक्ताक्षर का प्रचार है। इसलिये वहाँ जो बिना संयुक्ताक्षर के लिखा जाता है, वह कुछ कृत्रिम-सा बन जाता है। लेकिन तुलसी-रामायण में ५० प्रतिशत शब्द ऐसे मिलेंगे जिनमें एक भी संयुक्ताक्षर नहीं है। यह तुलसीदास की विशेषता है।

('विनोबा के विचार' से)

ऊपर तुलसीकृत रामायण के विषय में जो कुछ बतलाया गया है उसको संक्षेप में यों कह सकते हैं —

तुलसीकृत रामायण की तरह ऐसा कोई उत्तम ग्रन्थ नहीं जो हरएक गाँव में फैला हो। अतीत काल में छपाई की कोई व्यवस्था नहीं थी। पुराने समय में ग्रंथ लेखक ग्रंथ का प्रचार भी करता था। आज मुद्रण की सुविधा रहते हुए भी ऐसा नहीं होता। तुलसी-रामायण ने जनता की असली सेवा की है। तुलसी-रामायण में पचास प्रतिशत शब्द ऐसे हैं जो संयुक्ताक्षर नहीं हैं। यह तुलसीदास का विशेष गुण है।

अभ्यास

(१) सारांश किसे कहते हैं? इससे क्या लाभ है?

(२) इसी पुस्तक में अन्यत्र दिये गये वाद-विवाद 'आधुनिक विज्ञान से हमें लाभ अधिक है या हानि?' के किसी एक पक्ष का सारांश लिखो।

भाव या विचार का विस्तार

भावमूलक वाक्य का विस्तार करना सारांश लिखने के ठीक उल्टा है। सारांश लिखने के लिये हमें अनुच्छेदों के केन्द्रीय भाव को अथवा मुख्य-मुख्य भावों को चुनना पड़ता है। लेकिन विस्तार करने में हमें केन्द्रीय भाव को अपनी कल्पना तथा विचारों के अनुसार विस्तृत करना पड़ता है। किसी एक पूरे भाव पर सोचते समय कुछ छोटे-छोटे भावों का भी स्मरण हो आता है। उनमें से जिन-जिन भावों का मूलभावों से मेल बैठता हो उन्हें एक साथ मिला-जुलाकर लिखने से भाव का विस्तार हो जाता है। इससे मौलिक रचना करने में बड़ी सहायता मिलती है। नीचे कुछ उदाहरण दिये जाते हैं—

"सोना सोना है, पीतल पीतल है। क्या सोने को कोई पीतल

कहने का साहस करेगा ? और, यदि कोई साहस करे भी तो क्या इसीसे सोना पीतल बन जायगा ?"

इस प्रसंग में नीचे लिखे भाव ग्रहण किये जा सकते हैं—

(१.) किसी वस्तु का गुण कोई नहीं बदल सकता।

(२) जो व्यक्ति जैसा है वैसा ही रहेगा एक रंग-रूप होने पर भी गुण में बराबर नहीं रहने से दो वस्तुओं या व्यक्तियों में काफी अन्तर आ जाता है। उसका गुण थोड़े दिनों के लिये भले ही छिप जाय, पर असली और नकली की जाँच होने पर भेद सामने आ जायगा। परन्तु इसके लिये गुण-ग्राहकों की आवश्यकता है। गुणग्राहक वह कसौटी है जिसपर कसे जाने से किसी व्यक्ति की अच्छाई-बुराई झलक जाती है।

(३) लेकिन इसकी क्या आवश्यकता है ? सोना कितना चमकता है ? उसकी सुन्दरता में किसको सन्देह हो सकता है ?

(४) सोना और कसौटी दोनो की आवश्यकता है। दोनों के पहलू अलग-अलग हैं। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

सजाकर लिखने से इन विचारों का रूप इस प्रकार होगा—

संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना धर्म और अपना गुण है। यदि कोई किसी वस्तु का गुण घटाकर दूसरी वस्तु में जोड़ दे तो वह स्थायी नहीं होगा। 'रँगे सियार' वाली बात हो जायगी। यदि कोई महान् है तो वह महान् ही रहेगा। चन्द्रमा पर कुछ समय के लिये बादल छा जाते हैं तो क्या हुआ ? बादल के हट जाने से चन्द्रमा फिर चमकने लगता है। लेकिन इतनी देर संसार चन्द्रमा के प्रकाश से वंचित रहता है। संसार में जो गुणिजन हैं उनके गुणों से संसार का बराबर हित होते रहना चाहिये। इसलिये उचित है कि गुणिजनों की गुण-गरिमा की

परख हो। संसार को क्षणभंगुर कहा गया है। दैवयोग कौन जाने ? कहीं ऐसा न हो कि फूल अपनी गंध बिखेरे बिना ही झड़ जाय। इसलिये गुणग्राहकों की आवश्यकता है जो अपनी कसौटी के द्वारा सद्‌गुण और दुर्गुण की जाँच करें। यह सत्य है कि सोना चमकता है और सुन्दर दीखता है, पर कभी-कभी पीतल और चाँदी पर पानी चढ़ा देने से वह भी थोड़े दिनों के लिये चमकने लगता है। तब सोने और पीतल, सोने और चाँदी का भेद लुप्त हो जाता है। हो सकता है कि सोने के बदले चाँदी और पीतल सम्मान प्राप्त कर लें। इसलिये कसौटी की आवश्यकता प्रत्येक अवस्था में है। दोनों के अलग-अलग काम हैं। दोनों को दो पहलुओं से देखा जाता है। अंधकार की कसौटी प्रकाश है। जीवन की कसौटी मृत्यु। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

'साहित्य में असंख्य तलवारों की शक्ति है।'

साहित्य की महिमा अगाध है। साहित्य में वह शक्ति है जो हजारों तलवारों में नहीं। वीर-रस का साहित्य पढ़ने से हमारी नस-नस में वीरता का संचार होता है। सैनिक युद्धस्थल में तलवार चलाते हैं। उनकी नसों में वीरता का भाव जगानेवाला कौन है ? साहित्य के वज्रघोष में करोड़ों धनुषों की टंकार है। साहित्य के गर्जन में कोटि-कोटि सैनिकों का हुंकार है। साहित्य ने युग-युग से मनुष्यों की शिथिल धमनियों में गर्म लहू का संचार किया है। साहित्य ने सोई हुई जाति को जगाया है। साहित्य ने साहस खोये हुए सैनिकों को पुनः युद्धभूमियों में भेजा है और उसे विजयी बनाया है। साहित्य की चिनगारियों ने शत्रुओं के सिरों पर अंगारों की वर्षा की है। पृथ्वीराज की सेना को किसने आगे बढ़ाया था ? यदि महाकवि चन्दवरदाई न होते तो उनकी रगों में कौन नया जोश भरता ? संसार इसका साक्षी है कि साहित्य ने अपने हाथ में बिना तलवार लिये ही अनेक युद्धों में भाग लिया है और शत्रुओं को हराया

है। साहित्य के शब्दों और अक्षरों ने शत्रुओं के छक्के छुड़ा दिये हैं। साहित्य ने जब रक्त की गंगा में स्नान किया है तो संसार में अनेक विध्वंस हुए हैं। यदि साहित्य नहीं होता तो देश से साहस और वीरता भाग जाती। साहित्य के कारण ही बिना रक्तपात के अनेक क्रान्तियाँ हुई हैं। साहित्य ने कितने सम्राटों को मुकुट पहनाया है। साहित्य ने विश्व-विजेता का काम किया है जो असंख्य तलवारें भी नहीं कर सकतीं।

अभ्यास

(१) किसी भाव का विस्तार कैसे करना चाहिये ? इसकी क्या आवश्यकता है ?

(२) नीचे लिखे वाक्यों में निहित भावों का अलग-अलग विस्तार करो—
प्रतिमा विश्वविजयिनी है। ग्रन्थ में ही लेखक की आत्मा छिपी रहती है। होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

भाषा की दुरूहता

"मुझे एक ही साथ कादम्बरी के वर्णित अनेकों चित्र याद आ जाते हैं। मेरा भटका हुआ चित्त उस मनोमुग्धकारी दृश्य को देखने के लिये व्याकुल हो उठता है जब कहीं इन प्रदेशों के पश्चिमी भाग में चन्द्रमा पद्म-मधु से रंगे हुए वृद्ध कलहंस की भाँति आकाश-गंगा के पुलिन पश्चिम जलधि की ओर उदास भाव से उतर जाता होगा और समस्त दिङ्मण्डल वृद्ध रंकु-मृग की रोमराजि के समान पांडुर हो उठता होगा। फिर धीरे-धीरे हाथी के रक्त से रंजित सिंह केसराकार या फिर लोहित वर्ण के लाक्षारस के सूत्रों के समान लाल सूर्य-किरणें आकाश रूपी वनभूमि से नक्षत्र रूपी फूलों को इस प्रकार झाड़ने लग जाती होंगी मानो पद्मराग मणि की शलाकाओं से बनी हुई हों।"

(पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी)

ऊपर दिये गये अवतरण में केवल तीन वाक्य हैं जिनमें बताया गया है कि लेखक का मन वाणभट्ट द्वारा लिखित कादम्बरी के वर्णित चित्रों को देखने के लिये व्याकुल हो उठा है। लेकिन इन वाक्यों की रचना कुछ इस प्रकार की गई है कि इन्हें कई बार पढ़ने पर अर्थ समझ में आता है। ऐसा केवल इसलिये हुआ है कि लेखक के कथन में सामासिक शब्दों की अधिकता है और भाषा काफी अलंकृत हो गई है। उसके वाक्य इतने लम्बे हैं कि उनका अर्थ आसानी से समझ में नहीं आता।

इस तरह की अलंकृत भाषा वे ही लिख सकते हैं जिन्हें संस्कृत और हिन्दी पर समान रूप से अधिकार हो और अलंकार शास्त्र का भी पूरा ज्ञान हो। किसी रचना में, जहाँ तक बन पड़े भाषा ऐसी सरल और सुबोध रखनी चाहिये जो सबकी समझ में आ जाय। वाक्य भी छोटे छोटे हों। अच्छी भाषा वही कही जाती है जिसे पढ़कर या सुनकर तुरत उसका आशय समझ में आ जाय।

अभ्यास

(१) भाषा की दुरूहता से क्या तात्पर्य है?

(२) नीचे दिये गये अवतरण को सरल और सुबोध भाषा में लिखो—

"हमें ऐसे मृत-संजीवन साहित्य की आवश्यकता है जो निराशा के निविड़ अन्धकार में आशा की दिव्य ज्योति जगा सके, आलस्यपुञ्ज कलेवर में स्फूर्ति भर सके, त्रस्त को साहस और हताश को उत्साह दे सके, सुषुप्त को उद्बुद्ध कर सके, मोहान्ध के लिये ज्ञानाञ्जनशलाका सिद्ध हो सके। ऐसे सजीव साहित्य की रचना वही साहित्यकार कर सकता है जो स्वदेश की प्राचीन ज्ञान-प्रणाली के सूत्र को अर्वाचीन ज्ञान-तन्तुओं के साथ सावधानता-पूर्वक जोड़ सकने में समर्थ हो।"

(आचार्य शिवपूजन सहाय)

तीसरा खंड

दैनिक डायरी

डायरी क्या है ?

दैनिक डायरी या रोजनामचे में पूरे दिन की आवश्यक बातों का वर्णन रहता है। आरम्भ में दैनिक डायरी में अपनी दिनचर्या लिखने का अभ्यास हो चुका है। दैनिक डायरी केवल प्रतिदिन किये जानेवाले कामों का ही संग्रह नहीं है, उसमें दूसरी बातों का भी रहना आवश्यक है। डायरी लिखने की आदत अच्छी है। इसमें अपने मन के भावों, आगे के कार्यक्रमों और अपने जीवन की मनोरंजक बातों को लिखने का पूरा मौका मिलता है, जो लेखादि में संभव नहीं है। बाजार में जो छपी हुई डायरी मिलती है उसके पन्ने छोटे होते हैं। विद्यार्थियों को चाहिये कि वे एक सादी पुस्तिका में पन्ने के ऊपर किसी ओर तारीख डालकर प्रतिदिन डायरी लिखें।

डायरी के दो पन्ने

(एक)

ता० १८ मई, १९५४

आज जब मेरी आँखें खुलीं तो शहनाई की मधुर आवाज कानों में पड़ी। मन प्रसन्न हो उठा। सुबह में संगीत की ध्वनि बड़ी मीठी लगती है। एक घंटे के बाद माँ ने बताया कि आज रामचन्द्र प्रसाद जी की बड़ी बेटी सुशीला का विवाह है। शाम

को बारात आनेवाली थी। मैं बारात देखने को उत्सुक हो उठा। शाम को बारात की शोभा देखी। आतिशबाजी और रोशनी का पूरा प्रबन्ध था। सुना कि सुशीला के होनेवाले ससुर धनी व्यक्ति हैं। यह अच्छी बात है, पर विवाह के अवसर पर आतिशबाजी और रोशनी में पानी की तरह धन खर्च करना उचित नहीं।

टेबुल के कोने में, किताबों के बीच एक बढ़िया पेन्सिल रख दी थी। आज स्कूल जाते समय उसे खोजा तो न मिली। अचम्भा होता है कि आखिर पेन्सिल हुई क्या? बासन्ती से पूछा तो उसने अस्वीकार किया। मल्लू अभी छोटा है। वह टेबुल तक नहीं पहुँच सकता। बड़ी हैरानी है। कभी-कभी बावाजी पर सन्देह होता है। वे मेरी पेन्सिल ले जाकर अपना हिसाब-किताब लिखते हैं। कल पूछूँगा। यदि उन्होंने भी अस्वीकार कर दिया तो पिताजी से कहूँगा।

आज स्कूल में एक कांड हो गया। विश्राम की घंटी में आठवीं कक्षा का विक्रम आम तोड़ते समय पेड़ से गिर पड़ा। उसके घुटनों में काफी चोट आई थी। कुशल कहिये कि हमारे स्काउट-शिक्षक मौजूद थे। उन्होंने झटपट उसकी मरहम-पट्टी की। स्थिर होने पर विक्रम को हमलोगों ने घर पहुँचा दिया। इसके बाद ही प्रधानाध्यापक का आदेश निकला कि कोई विद्यार्थी स्कूल के बगीचे में नहीं जा सकता। लो, यह अच्छा रहा। एक की बेवकूफी के चलते सबों का क्रीड़ा-कौतुक समाप्त हो गया। मैं पेड़ पर तो कभी नहीं चढ़ता था, लेकिन ढेलों से आम जरूर तोड़ता था। अब क्या करना है। जो हुआ सो हुआ।

सुना है, सन्त विनोबाजी हमारे गाँव में पधारने वाले हैं। यदि आये तो उनके दर्शन करूँगा। मैंने उनका चित्र देखा है। पूरे साधु की तरह लगते हैं। यह भी सुना है कि वे पैदल चलते हैं और सादा भोजन करते हैं। उनके आने पर अवश्य ही गाँव में सभा होगी। मैं उन्हें खादी के सूतों की माला पहनाऊँगा। मैं रोज तकली चलाता ही हूँ। महीन सूतों को छाँटकर माला तैयार करूँगा। यह बात किसीसे न कहूँगा।

अब नींद आ रही है। नौ बज रहे हैं। कल प्रातःकाल ही स्कूल जाना है। अब सोना ही चाहिये।

(दो)

४ जुलाई, १९५४

आज कबड्डी के खेल में हमारा वर्ग जीत गया। खेल खूब जमा। दोनों दलों ने जीतने की भरपूर चेष्टा की, पर जीत हमारे ही हाथ रही। हमारी जीत गोपी और बलदेव के कारण हुई। दोनों काफी बलिष्ठ हैं। उनका दम तुरत नहीं फूलता। जब दोनों 'कबडी-कबडी' करते हुए छूने के लिये आगे बढ़ते जाते हैं तो बड़ी हँसी आती है। दोनों पक्के हँसोड़ भी हैं।

कोशी नदी में आज पानी जोरों से बढ़ रहा है। लगता है कि इस बार फिर कोशी नदी में बाढ़ आयेगी। कोशी अंचल में रहनेवाले लोगों को काफी कष्ट पहुँचेगा। मैं यहीं से उसकी कल्पना कर सिहर उठता हूँ। कोशी में हर साल बाढ़ आती है। पता नहीं, कोशी की यह लीला कब समाप्त होगी। सुना है, सरकार की ओर से बहुत बड़ा बाँध बननेवाला है। बाँध तैयार हो जाने पर लोगों का कष्ट दूर हो जायगा। लोग सुख की नींद सो सकेंगे!

आज रविवार है इसलिये अवकाश है। दोपहर में कुछ चित्र बनाये। हरिण का जो चित्र है उसे कई रंगों में रंगूँगा। कुछ किताबों में अखबार की जिल्दें लगाईं। आज एक कहानी भी पढ़ी। कहानी बड़ी अच्छी लगी। उसमें एक गरीब छात्र की कहानी है जो आगे चलकर जज बन गया। लेकिन उसमें तनिक भी घमंड नहीं था। उसे अपनी गरीबी के दिन याद थे। वह सबों से स्नेह रखता था। दीन-दुखियों की मदद करता था। मैं उस कहानी के लेखक के बारे में जानना चाहता हूँ। उनका पता मालूम हो जाने पर एक पत्र लिखूँगा।

बेचारा श्रीधर चल बसा। भगवान् उसकी आत्मा को शांति दें। वह हमलोगों को बताशे खिलाता था। मेरे यहाँ उसके कुछ पैसे बाँकी थे। कोई बात नहीं। उसका लड़का है न। उसीको कहकर दे दूँगा। किसीका एक पैसा भी नहीं रखना चाहिये।

मेरे बाल बहुत लम्बे हो गये हैं। इतने लम्बे बाल रखना ठीक नहीं। आज याद ही न रहा। अब दूसरे रविवार को इन्हें छोटा करवा लूँगा। तब बाल मुँह पर नहीं आयँगे और तेल भी कम खर्च होगा। मँहगी का जमाना है। हमें छोटी-छोटी बातों का भी ध्यान रखना चाहिये।

अभ्यास

(१) डायरी लिखने से क्या लाभ है ?

(२) डायरी का एक पन्ना तैयार करो जिसमें किसी यात्रा का थोड़े में वर्णन, किसी पत्रिका की कविता की चर्चा और किसी पुराने मित्र से भेंट होने की बात आदि हों।

गाँव का समाचारपत्र

समाचार किसे कहते हैं ?

संसार में कहीं भी किसी भी समय कोई छोटी-मोटी घटना हो, उसका शब्दों में जो वर्णन होगा, उसे समाचार या खबर कहते हैं। हरएक प्रकार की घटना हर समाचारपत्र में देने योग्य नहीं होती। हमें यह देखना चाहिये कि हमारा समाचारपत्र कौन-से लोग पढ़ते हैं। वे कौन और कैसे समाचार पढ़ना चाहते हैं। हमें यह भी देखना चाहिये कि कौन-से समाचार पढ़ने से हमारे समाचारपत्र के पाठकों को दैनिक जीवन में लाभ पहुँचेगा। किस प्रकार वे समाज को आगे बढ़ा सकते हैं। राष्ट्र के अच्छे नागरिक बनने में उनको कहाँ तक सहायता मिलेगी।

समाचार हमेशा नया होना चाहिये। दैनिक पत्रों के लिये किसी घटना का वर्णन चौबीस घण्टे के बाद बासी हो जाता है। इसी प्रकार साप्ताहिक पत्रों के लिये किसी समाचार का महत्त्व एक सप्ताह के बाद एकदम कम हो जाता है।

हम प्रत्येक घटना को 'समाचार' नहीं कह सकते। हमारे ग्राम के रहनेवाले किसी एक ग्रामीण को कोई साधारण बीमारी हो तो उसे समाचार नहीं कहेंगे, पर यदि गाँव भर में कोई छूत की बीमारी फैल जाय तो वह समाचार हो जायगा। इसी प्रकार यदि गाँव में समय-समय मोटरगाड़ी आती रही तो वह समाचार नहीं हैं। लेकिन यदि गाँव में पहली बार हवाई जहाज उतरे और उसपर बैठकर कोई ग्रामीण उड़े तो यह बड़ा बढ़िया समाचार होगा।

संवाददाता कौन है ?

समाचारपत्र के लिये तरह-तरह के समाचारों को जुटाने का

जो काम करता है उसे संवाददाता कहते हैं। संवाददाता यह जानता है कि उसे किस स्थान का समाचार अपने पत्र में भेजना चाहिये। एक गाँव के संवाददाता को अपने गाँव की चौहद्दी का पूरा और उसके आसपास के गाँवों का भी थोड़ा ज्ञान होना चाहिये। किसी समाचार को जल्द से जल्द संपादक के पास पहुँचाना उसका कर्त्तव्य है। ऐसा नहीं करने से समाचार पुराना पड़ जायगा। संवाददाता के पास हरदम एक पेन्सिल और नोट-बुक रहना चाहिये। उसे अपने गाँव की प्रत्येक वस्तु की जानकारी रखनी चाहिये। गाँव में कितने टोले या मुहल्ले हैं, वहाँ कौन-कौन लोग रहते हैं, गाँव में कितने स्कूल, पुस्तकालय, पंचायत या और तरह की संस्थाएँ हैं, इसकी पूरी जानकारी रखने के बाद कहाँ क्या हो रहा है, कब होनेवाला है, यह सब जानना चाहिये। संवाददाता को शुद्ध भाषा लिखने का अभ्यास होना चाहिये। ऐसा नहीं होने से समाचारों को शुद्ध करने में बहुत समय नष्ट हो जायगा। संवाददाता की तुलना घर-घर की मौसी से कर सकते हैं। उसे गाँव के प्रतिष्ठित लोगों से, मुखिये, कोतवाल, पुस्तकालय के मंत्री से तथा स्कूलों के अध्यापकों, छात्रों तथा किसान-मजदूरों से—सबों से मिलते-जुलते रहना चाहिये। जिससे उसे किसी नई घटना का समाचार तुरत मिल जाय। संवाददाता जो भी संवाद लिखे, उसकी उपयोगिता को अच्छी तरह देख ले। ऊल-जलूल बातें लिखकर संवाद को न बढ़ावे।

सम्पादक का काम

सम्पादक का काम बड़े उत्तरदायित्व का होता है। सम्पादक घर के मुखिये के समान है जिसे घर की सभी बातों पर ध्यान रखना पड़ता है। जिसे जी में आया वही सम्पादक बन गया, ऐसी बात नहीं है। सम्पादक को अच्छी योग्यता रखनी पड़ती

है। समाचारपत्र में जो कुछ निकलता है उसकी पूरी जिम्मेवारी सम्पादक पर रहती है। समाचार ताजा हो; समाचारों के शीर्षक भले हों; भाषा सरल हो; जरूरी समाचार कहीं छूट न जायँ; यदि लम्बा समाचार हो तो वह किस कौशल से छोटा किया जाय—आदि बातें वह अपने सहायक सम्पादकों की मदद से सुलझाता रहता है।

सम्पादक को अपने गाँव के लोगों से और मौका आने पर उसके बाहर के लोगों से भी मिलना पड़ता है। उसे बराबर यही चिन्ता बनी रहती है कि किस भाँति पत्र सुन्दर और लोकप्रिय होगा। वह पत्र को सँवारने के लिये बराबर कोशिश करता रहता है।

सम्पादक की भाषा शुद्ध और सरल होनी चाहिये। उसे प्रतिदिन सम्पादकीय लेख लिखना पड़ता है; उसे बराबर होशियार रहना पड़ता है कि कहीं कोई ऐसी बात लेखनी से न निकल जाय जिससे किसीको किसी प्रकार का दुःख पहुँचे या आपस में झगड़ा-लड़ाई हो जाय। वह सबों के हित की बात सोचता है। सम्पादक के कमरे में एक बढ़िया शब्दकोश, अपने गाँव, जिले, प्रान्त, देशादि के नक्शे और साधारण ज्ञान की एक अच्छी पुस्तक होनी चाहिये। सम्पादक किसीकी प्रशंसा और निन्दा पर ध्यान दिये बिना सेवा-भाव से अपना कर्त्तव्य पालन करता है।

अभ्यास

(१) समाचार-पत्र से क्या लाभ है ?

(२) किस घटना को समाचार कहा जायगा ? समझाओ।

(३) संवाददाता के कौन-कौन से गुण होने चाहिये ?

(४) सम्पादक का महत्त्व बतलाओ। उसका क्या कर्त्तव्य है ?

हमारा समाचारपत्र **दैनिक नयागाँव** सायं-संस्करण

ग्रामवासियों का सच्चा सेवक

सम्पादक— *विनोद शंकर*

वर्ष २, क्र० ६१९ ठकुरगना, शुक्रवार, कार्तिक शुक्ल ३, संवत् २०११,
ता० २६ अक्टूबर, १६५४

खेती करनेवाले को ही भूमि रहेगी

आचार्य विनोबा के विचार

(निज संवाददाता द्वारा)

आज हमारे गाँव में एक प्रार्थना-सभा में भाषण करते हुए आचार्य विनोबा भावे ने कहा—जिन दाताओं ने अपनी भूमि-संपत्ति का छठा हिस्सा दान किया है वे अपनी शेष भूसंपत्ति में काम करने को तैयार हों।

हो सकता है कि उनमें से कुछ लोग बहुत पुराने हों। वे अपने लड़कों को इसके लिये तैयार करें। तभी वे शेष जमीन पर अपना अधिकार कर सकते हैं। नहीं तो कोई दूसरा आयगा और उन्हें उस जमीन से हटा देगा। भविष्य में वे ही भूमि के मालिक होंगे जो खेती कर सकेंगे।

उन्होंने आगे कहा—आपकी भूमि का षष्ठांश या उससे अधिक



भी मैं लेता हूँ। फिर भी आपके पास बहुत रह जाता है। मैं आपसे प्रार्थना करूँगा कि आप श्रम करें और उसके द्वारा अपने स्वास्थ्य और मन को उन्नत करें।

बालचर-दल रवाना

सोनपुर के हरिहर क्षेत्र मेले में यात्रियों की सेवा करने के लिये हमारे गाँव के स्कूल का बालचर-दल रवाना हो गया। बालचर-दल के नेता श्री मनोरंजन हैं। बालचर-दल वहाँ तीन सप्ताह तक ठहरेगा और पटने तथा राजगृह की यात्रा करता हुआ वापस होगा।

कम तौलने का अपराध

कल शाम को स्थानीय हाट में एक दूकानदार नकली बटखरों से कम तौल कर सामानों की बिक्री कर रहा था। ग्राम-पंचायत के सर-पंच श्री केदार राम जी ने स्वयं उसकी करतूत देखी और सीधे पंचा-यत के कार्यालय में घसीट लाये। पंचायत हो जाने पर ही उसे फिर हाट में दूकान करने की अनुमति दी जायगी। संभव है उसे जुर्माना किया जाय या उसे जेल भी जाना पड़े। इस कार्य की निंदा सबों ने की है।

प्रोफेसर बने

पटना से भेजे गये एक निजी पत्र से पता चला है कि हमारे गाँव के श्री मदन गोपाल जी के सुपुत्र श्री दिलीपचन्द्र अर्थशास्त्र के प्रोफेसर नियुक्त हुए हैं। उनकी नियुक्ति किस कालेज में हुई है, इसका उल्लेख पत्र में नहीं है। श्री दिलीप की आरंभिक शिक्षा गाँव में ही हुई थी। फिर वे अपने पिता जी के यहाँ बाहर चले गये थे।

श्रमदान की महिमा

हमारे गाँव की सीमा पर स्थित सिकहरा गाँव तथा निकटवाले क्षेत्र के ग्रामीण भाइयों ने श्रमदान से करीब ४० मील ग्रामीण सड़कों का निर्माण किया है तथा बाढ़ से रक्षा के लिये करीब १५ मील लम्बा बाँध बनाया है। यह काम जिला पंचायत परिषद् के प्रधान मंत्री श्री कृपानारायण जी के नेतृत्व में हुआ है। आशा है कि इस बाँध से लगभग साढ़े तीन हजार बीघा भूमि की फसल की रक्षा हो सकेगी।

छः कच्चे बाँध भी बनाये गये हैं। जिनके द्वारा पानी रोक कर रक्खा जा सकेगा और उसका उपयोग सिंचाई के कार्यों में हो सकेगा।

लोकगीतों का संग्रह

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के एक पदाधिकारी ने हमारे गाँव के प्रसिद्ध कवि 'नीरज' जी को सूचित किया है कि वे शीघ्र ही हमारे गाँव तथा आसपास के क्षेत्रों में प्रचलित जनप्रिय लोकगीतों का संग्रह करने आयँगे। वे उपलब्ध प्रमाणों या जनश्रुति के आधार पर यह भी पता लगावेंगे कि उन गीतों के रचयिता कौन थे। इस कार्य के लिये ग्रामनिवासियों का पूरा सहयोग माँगा गया है।

विचित्र लीला !

विसेसर हलवाहे की बकरी को एक साथ आठ बच्चे होने की खबर मिली है। उन्हें देखने के लिये उसके दरवाजे पर लोगों की भीड़ जमा हो गई है।

चोरी होने से बची

कल रात में चौधरी-टोले में रामरूप के घर में चोरी होते-होते बची। चोर फुलवारी की ओर से रात के तीसरे पहर घर में घुसे। रामरूप की स्त्री आँगन में निकली थी कि उसने चोर को देख लिया। देखते ही जोरों से चिल्ला पड़ी। जागरण होते ही चोर नौ-दो ग्यारह हो गये।

ग्राम-पंचायत

पड़ोसी गोविन्दपुर ग्राम की पंचायत का शपथ-ग्रहण प्रान्तीय पंचायत-परिषद् के प्रधान मंत्री ने सम्पन्न कराया। इस अवसर पर ग्रामीण हस्तकला-प्रदर्शिनी का भी आयोजन किया गया था।

सभापति पद से भाषण करते हुए प्रधान मंत्री ने ग्राम पंचायत के कर्त्तव्य और महत्व पर प्रकाश डाला।

शोक-सभा

आज दोपहर को स्थानीय मिडिल स्कूल में भारत के खाद्य मंत्री श्री रफी अहमद किदवई के निधन पर एक शोकसभा हुई। सभा में उनके कार्यों की प्रशंसा की गई और उनकी आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना की गई।

सम्पादक के नाम पत्र

भूल सुधार

महाशय,

सोमवार के नयागाँव में स्थानीय विद्यालय के साहित्य-परिषद् के तत्वावधान में कवि-सम्मेलन का समाचार प्रकाशित हुआ है जिसमें एक भूल हुई है कि कवि-सम्मेलन का सभापतित्व श्री काशीनाथ पाण्डे ने किया था, परन्तु सम्मेलन का सभापतित्व श्री दिनेश्वरलाल 'आनन्द' ने किया था। श्री पाण्डेय ने सम्मेलन का उद्घाटन किया था। मेरा आग्रह है कि इसका सुधार करवा दिया जाय।

—हरिकिशोर ठाकुर,
मंत्री, साहित्य परिषद्,
माध्यमिक विद्यालय,
ठकुरगना।

अधिकारियों से निवेदन

महाशय,

स्थानीय प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकगण जुलाई से आज तक तीन मास के वेतन के लिये छटपटा रहे हैं। इस अवधि में कितने बड़े-बड़े त्योहार भी गुजर गये, पर वे लोग डाकघर का दरवाजा ही खटखटा कर रह गये। इस निःशुल्क शिक्षा-योजना के अधिकारी यह नहीं सोच रहे हैं कि वेतन के सिवा उनके जीवन का कोई आधार नहीं है। क्या अधिकारी शीघ्र इस ओर ध्यान देने का कष्ट करेंगे?

—एक शिक्षक

सामयिक विज्ञापन

भारत की आत्मा गाँवों में बसती है।

—महात्मा गाँधी

नयागाँव

शुक्रवार, २६ अक्टूबर, १९५४ ई०

सम्पादकीय

संतविनोबा का सन्देश

संत विनोबा ने हमें जो कुछ संदेश दिया है उसका पालन करना हमारा कर्त्तव्य है। संत विनोबा देश के करोड़ों भूखे और गरीब लोगों के लिये कष्ट झेलकर घर-घर घूम रहे हैं। महात्मा गाँधी ने जो स्वप्न देखा था वह आज विनोबा जी के हाथों पूरा हो रहा है।

भूदान-यज्ञ की प्रगति

नगरौना भूदान-यज्ञ समिति के कार्यकर्त्ताओं ने चार जत्थे बनाकर पैदल घूमकर प्रचार कार्य किया। उक्त जत्थों ने लगभग १२५ मील की यात्रा की और ४६ दानपत्रों द्वारा ६० बीघा जमीन प्राप्त की और १५) रु० का भूदान-साहित्य बेचा।

विनोबा जी के विचारों से हम सहमत हैं कि भूमि पर खेती करने-वालों का ही अधिकार रहना चाहिये। यहाँ यह प्रश्न उठ सकता है कि जमींदार किस प्रकार अपना निर्वाह करेंगे ? ईश्वर ने हम सभी को क्षुधा दी है। यह उनका आशीर्वाद है। अन्य जीवों की भाँति मनुष्य को भी क्षुधा देने के साथ ही उन्होंने दो हाथ और हृदय दिये हैं। हाथ हमें सिखाता है कि हम अपनी जीविका स्वयं अर्जित करें। यदि हम अधिक-से-अधिक जमा करने की चेष्टा करेंगे तो ईश्वर की योजना के विप-रीत होगा।

जमींदार भी समाज का एक आदमी है। इसलिये उसकी भूमि से अनेक लोगों को लाभ हो तो इससे पूरे समाज को लाभ होता है। यदि एक-दो व्यक्तियों के मन के प्रतिकूल होने पर भी बहुत-से लोगों का कल्याण हो तो हमारा समाज आगे बढ़ेगा और सभी सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

किदवई न रहे !

भारत सरकार के खाद्य मंत्री

श्री रफी अहमद किदवई के निधन से सारा देश शोकाकुल हो उठा है। श्री किदवई ने देश की स्वतंत्रता के लिये जो त्याग किया था और जो कष्ट झेले थे वह सभी जानते हैं। उनकी कार्यक्षमता अपूर्व थी। इसीका परिणाम है कि देश में अनाजों का दाम धीरे-धीरे कम होता जा रहा है और देश अनाज के मामले में आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर है।

श्री किदवई उत्तरप्रदेश के बाराबंकी जिलान्तर्गत मसौली गाँव के रत्न थे! उनकी अन्त्येष्टि क्रिया दो-चार दिनों में होगी। भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति दें।

वार्षिकोत्सव की तैयारी

आज प्रातःकाल अपने गाँव के गाँधी पुस्तकालय के सदस्यों की बैठक हुई जिसमें पुस्तकालय की स्थिति पर विचार-विमर्श किया गया। इसके बाद नवम्बर के प्रथम सप्ताह में पुस्तकालय का द्वितीय वार्षिकोत्सव मनाने का निश्चय किया गया। वार्षिकोत्सव का सभापतित्व करने के लिये किसी सुप्रसिद्ध विद्वान् को निमंत्रित किया जायगा। इस अवसर पर एक कवि-सम्मेलन को सफल बनाने के लिये एक स्वागत समिति का संघटन किया गया।

थाना समाचार

प्रतिनिधि-चुनाव

किशनपुरा क्षेत्र से अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के प्रतिनिधि के एक स्थान के लिये जो तीन व्यक्ति चुने गये थे उनके नाम हैं श्री इन्द्रदेव, श्री कपिलदेव नारायण और श्री अयोध्या कुँवर। इनमें श्री कपिलदेव नारायण निर्विरोध विजयी घोषित कर दिये गये।

अस्पताल के लिये दान

इस थाने में एक सरकारी अस्पताल खोलने के लिये महन्त पंचानन दास ने २५ बीघे जमीन और एक हजार रुपया नकद दान दिया है। अस्पताल स्वर्गीय महन्त रघुनाथ दास जी की स्मृति में बनवाया जायगा। इसका शिलान्यास राज्य के स्वास्थ्य मंत्री करेंगे।

भवन-निर्माण हो जाने पर उसका उद्घाटन-समारोह होगा।

जिला-समाचार

जिला-शिक्षक-संघ

जिला-शिक्षक-संघ का द्वितीय अधिवेशन बरही हाई स्कूल में नवम्बर के दूसरे सप्ताह में होने जा रहा है। इसके लिये स्वागत-समिति आदि संघटित कर ली गई है। अधिवेशन को सफल बनाने के लिये चंदा वसूली का काम शुरू हो गया है।

फसल प्रतियोगिता

जिला स्तर पर आलू की उत्तम खेती के लिये १९५३-५४ ई० के लिये एक प्रतियोगिता होगी। इसमें सभी किसान भाग ले सकते हैं। जो इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहें वे जिला के कृषि-अफसर के पास शीघ्र आवेदनपत्र भेज दें।

प्रान्तीय समाचार

मोकामा में पुल निर्माण

मोकामा में गंगा के ऊपर पुल निर्माण का काम अब तेजी से शुरू होने वाला है। यह पुल १९६० ई० तक बनकर तैयार हो जायगा। इस पुल पर पूर्वीय रेलवे की बड़ी लाइनें बिछाई जायेंगी। पूर्वीय रेलवे की गाड़ियाँ पुल को पार करती हुई सीधे बरौनी जंकशन तक चली जायँगी। अभी गंगा पुल योजना में प्रायः १००० कर्मचारी काम कर रहे हैं।

मोकामा एवं सिमरिया घाट के ग्रामीणों ने सभा करके केन्द्रीय सरकार से माँग की है कि उक्त पुल का काम राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद के नाम पर 'राजेन्द्र ब्रिज' रक्खा जाय।

देशी समाचार

युवक समारोह

नयी दिल्ली में २ नवम्बर से 'प्रथम अन्तर विश्व-विद्यालय युवक समारोह' बड़ी धूमधाम से होने जा रहा है। इस अवसर पर छात्र-छात्राओं द्वारा खेलकूद, नाटक, संगीत आदि का भी प्रदर्शन होगा। इसका उद्घाटन भारत के शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद करेंगे।

विदेशी समाचार

अमरीकी कांग्रेस का चुनाव

अमरीकी कांग्रेस के चुनाव में जोरदार निर्वाचन-संघर्ष छिड़ गया है। यह संघर्ष सीनेट में बहुमत प्राप्त करने के लिये है। इसमें रिपबलिक-दल की स्थिति बड़ी डाँवाडोल है।

व्यंग्य विनोद

श्री अगिया-बैताल

'चंडीगढ़ का मेला जैसा मैंने पाया।'

—एक लेख का शीर्षक

बलिहारी है महाराज! ऐसी ही भाषा से राष्ट्रभाषा हिन्दी की दिन दूनी, रात चौगुनी उन्नति होगी। लेखक महोदय ने मेले को खिलौने की तरह पाया। अफसोस है कि वहाँ अगिया-बैताल न रहे, नहीं तो दोनों में छीना-झपटी हो जाती।

× × × × ×

खबर मिली है लदनिया में एक व्यक्ति की झोपड़ी में रोज आग लग जाती है।

मालूम पड़ता है कि अगिया-बैताल के परपितामह ने उसी झोपड़ी में जन्म लिया है। कहीं लोगों ने उन्हें वहाँ से हटा दिया तो अगिया-बैताल का अस्तित्व खतरे में पड़ जायगा।

× × × ×

मालूम हुआ है कि स्थानीय माध्यमिक विद्यालय का एक छात्र किसी महंथ जी का चेला बनने वाला है। अगिया-बैताल का निवेदन है कि महंथजी की गद्दी सम्हालते ही वह उनकी सारी जमीन को भूदान-यज्ञ में समर्पित कर दें! दान की जमीन दान में ही चली जायगी।

× × × ×

'मेरे अश्रु-गीत बहते हैं'

—एक कवि

सरकार को सिंचाई-विभाग बन्द कर देना चाहिये। व्यर्थ पैसों की बरबादी से क्या फायदा? कविजी की अश्रुधारा से खेतों की सिंचाई हो जायगी। चलो, हैरानी खत्म हुई।

स्कूल की प्रदर्शनी

प्रदर्शनी क्या है ?

यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि तुम्हारे स्कूल में एक प्रदर्शनी होनेवाली है। प्रदर्शनी से अनेक लाभ हैं। हम घर और बाहर अनेक प्रकार की वस्तुएँ देखते हैं और उनपर पूरा ध्यान नहीं देते। तुम्हारे घर में जो खिलौने हैं, क्या तुम बता सकते हो कि वे कहाँ से आये ? उन्हें किसने और कैसे बनाया ? क्या तुम वैसे खिलौने स्वयं नहीं बना सकते ?

पिछले महीनों तुम्हारे घर के छप्पर पर एक बड़ा-सा पीला कोंहड़ा दूर ही से चमक रहा था। तुमलोगों ने उसे नहीं तोड़ा। अच्छा किया। इसके बाद क्या हुआ सो तुम जानते ही हो। तुम्हारे यहाँ लोगों की भीड़ लगने लगी। इतने लोग जमा होने लगे कि तुम्हारे दरवाजे पर उनके बैठने, और यहाँ तक कि खड़े रहने का स्थान नहीं रहा। तुम्हारे पिताजी को अच्छी सूझी कि उन्होंने उसे तोड़वाकर अपने दरवाजे पर रखवा दिया।

लेकिन उनका पिंड फिर नहीं छूटा। लोग पूछने लगे, इस कोंहड़े का बीज आपने कहाँ से मँगाया ? यह कोंहड़ा कितने दिनों में तैयार हुआ ? इसकी जड़ में आपने कोई खाद या मसाला भी डाला था ? आदि। तब तुम्हारे बड़े भाई ने अच्छा

काम किया। कोंहड़े के छोटे डंठल में, मोटे कागज के एक टुकड़े पर कोंहड़े का सब विवरण लिख दिया। तब जाकर भीड़ कम हुई। लोग ताँता बाँधकर आने लगे और बिना कुछ पूछे ही विवरण पढ़कर लौटने लगे। तो यह कहो कि तुम्हारे दरवाजे पर कोंहड़े की प्रदर्शनी लग गई थी।

प्रदर्शनी की तैयारी

लेकिन एक बात है। तुम्हारे दरवाजे की प्रदर्शनी और स्कूल की प्रदर्शनी में अन्तर है। अन्तर बहुत बड़ा नहीं, साधारण है। तुम्हारे दरवाजें पर एक चीज की प्रदर्शनी थी। स्कूल की प्रदर्शनी में बहुत-से लड़कों द्वारा बनाई हुई और लाई हुई बहुत तरह की चीजों की प्रदर्शनी होगी। उसमें लड़कों को प्रमाण-पत्र और पुरस्कार मिलेंगे। उसका कोई प्रधान व्यक्ति उद्घाटन करेंगे। उसमें बहुत-से लड़के एक साथ मिलकर काम करेंगे।

स्कूल की प्रदर्शनी में तुम भी भाग ले रहे हो इसलिये तुम्हें प्रदर्शनी की तैयारी के बारे में कुछ बता देना लाभदायक होगा। यदि तुम्हारे स्कूल में कोई बड़ा हॉल हो तो प्रदर्शनी के लिये बड़ी सुगमता होगी। यदि नहीं हो तो कई कमरों से ही काम चल सकता है।

किसी समारोह के लिये कम-से-कम एक समिति की आवश्यकता होती है। इसके लिये एक प्रबन्ध-समिति बनाओ। प्रबन्ध समिति में सदस्यों के रूप में दस-ग्यारह छात्रों को चुन लो जो उत्साही और परिश्रमी हों। समिति में एक सरदार का रहना जरूरी है। इसलिये अपने किसी शिक्षक को समिति का अध्यक्ष बनाओ जो कार्य-संचालन करें। अपने प्रधानाध्यापक

को तथा स्थानीय अन्य गण्यमान्य व्यक्तियों को इसके संरक्षक बनाओ। फिर लोगों के यहाँ टोलियाँ बनाकर जाओ और प्रदर्शनी के व्यय, पुरस्कार आदि के लिये चन्दा जमा करो। तुम तनिक भी मत घबराओ। लोग तुम्हें खूब उत्साह दिलायेंगे और उचित चन्दा भी देंगे।

प्रदर्शनी की सामग्रियाँ

अब तुम्हारी प्रबन्ध-समिदि बन गई। चन्दा भी अच्छा मिला। अब प्रदर्शनी की झटपट तैयारियाँ कर लो। कमरों की सफाई करवा लो। एक सदस्य जिसकी लिखावट सुन्दर और सुडौल हो उसे लिखने का काम दो। किस कमरे में किस प्रकार की चीजें प्रदर्शित होंगी उनके शीर्षक मोटी तख्तियों पर लिखवा लो। जैसे—चित्र-संग्रह, मूर्त्तियाँ और खिलौने, सागभाजी, खादी-घर, हस्त-शिल्प। फिर इन्हें कमरों के द्वारों पर लटका दो।

जब सब चीजें जमा हो जायँ तब सोच-समझकर, राय-विचार करके उन्हें क्रम से छाँट लो कि किस विभाग में रखने योग्य कौन सी चीज है। ऊँची बेंचों पर इन चीजों को सजाकर रक्खो। प्रत्येक वस्तु के साथ मोटे कागज का एक बिल्ला हो जिसपर क्रम-संख्या, उस वस्तु का नाम, प्रेषक का नाम, वर्ग, इत्यादि सुन्दर अक्षरों में लिखे रहे। यदि विभिन्न विभागों के लिये विभिन्न प्रकार के कागजों और स्याहियों का उपयोग हो तो सोने में सुगन्ध आ जाय। यदि हो सके तो कागज पर मोटे-मोटे अक्षरों में कुछ आदर्श वाक्य लिखवाकर कमरों की दीवारों पर चिपका दो। जैसे—ये कल चमकेंगे; खिलौने बोलते हैं, अधिक सब्जी उपजाइये, खादी से भारत की गरीबी दूर

होगी, इसे अपनाना आपका कर्त्तव्य है, ग्राम-हस्तशिल्प की उन्नति आप पर निर्भर है, इसे खूब प्रोत्साहन दीजिये, इत्यादि।

प्रदर्शनी की सजावट के लिये कागज की बनी पत्तियों की भी आवश्यकता है। प्रदर्शनी में काफी भीड़ होगी और तरह-तरह के लोग आयँगे। इसलिये कुछ संकेत वाक्यों को लिखवाकर जगह-जगह चिपका दो। जैसे—कृपया किसी वस्तु को न छुएँ। प्रदर्शनी की सफलता आपके सहयोग पर निर्भर है। आपकी कृतज्ञता सराहनीय है। कृपाभाव बनाये रक्खें, इत्यादि। दर्शक कमरे में किस दरवाजे से प्रवेश करेंगे और किस दरवाजे से बाहर निकलेंगे, इसका संकेत भी तीर का चिह्न बनाकर अथवा अन्दर-बाहर लिखकर होना चाहिये।

प्रदर्शनी की कोई वस्तु चोरी न जाय या टूट-फूट न जाय इसका खूब ध्यान रखना चाहिये। इसके लिये स्कूल के बालचर सदैव सतर्क रहेंगे। जब प्रदर्शनी समाप्त हो जाय तब चीजें लोगों को ठीक रूप से लौटा दी जायँ।

वाह ! अब तो तुम्हारी प्रदर्शनी खुल गई। बड़ा सुन्दर प्रबन्ध किया है। बधाई ! जरा हमलोग भी देख लें। पहले प्रदर्शनी की विवरणी (चार्ट) देख लें तो घूमने में आसानी होगी।

स्कूल-प्रदर्शनी की विवरणी (चार्ट)

कमरा नं० १ (बाईं ओर)

चित्र-संग्रह

क्रम सं० १—खजूर का पेड़ (पेन्सिल स्केच)—विनयकुमार, चौथा वर्ग।

२—बरगद का पेड़ (" ")—संतोष कुमार, पाँचवाँ वर्ग।

क्रम सं० ३—पहाड़ी बकरी (रंगीन)—नीलकमल, छठा वर्ग।
" " ४—हिरण (")—साँवलिया विहारी, पाँचवा वर्ग।
" " ५—शिवमन्दिर (गेरू और नील से तैयार)-गोवर्द्धन प्र०, सातवाँ वर्ग।
" " ६—कुत्ता और उसका स्वामी (पेन्सिल स्केच)—नलिन विलोचन, सातवाँ वर्ग।
" " ७—पालकी (देहाती रंगों से निर्मित)—कृष्णानन्द, छठा वर्ग।
" " ८—पिंजड़े की मैना (पेन्सिल स्केच)—मुकेश, चौथा वर्ग।
" " ९—हैटवाले बाबू (")—ज्ञानप्रकाश, पाँचवाँ वर्ग।
" " १०—बैल और किसान (रंगीन)—जयमंगल, सातवाँ वर्ग।
" " ११—लटकता हुआ कद्दू (देहाती रंगों से निर्मित)—गुलजारी लाल, छठा वर्ग।
" " १२—मैं गधा हूँ ! (व्यंग्य चित्र)—शंकरशरण, सातवाँ वर्ग।
" " १३—कौआ (ड्राइंग)—गोपी मोहन, तीसरा वर्ग।
" " १४—कुकुरमुत्ता (")—वीणाचन्द्र, तीसरा वर्ग।
" " १५—छाता (")—भोलाराम, दूसरा वर्ग।
" " १६—नाव—(पेन्सिल स्केच)—अजितनारायण, चौथा वर्ग।
" " १७—रोता हुआ बच्चा (रंगीन)—सुरेश मोहन, सातवाँ वर्ग।

क्रम सं० १८—झरना (पेन्सिल स्केच)—मनोरंजन, छठा वर्ग ।
" " १९—मुर्गी (ड्राइंग)—विश्वम्भर, तीसरा वर्ग ।
" " २०—खुली हुई किताब (ड्राइंग)—मंगलानन्द, दूसरा वर्ग ।
" " २१—मोहन पाठशाला चला (व्यंग्य चित्र)—त्रिवेणी प्र०, सातवाँ वर्ग ।

कमरा नं० २ (दाईं ओर)

मूर्त्तियाँ और खिलौने

क्रम सं० १—महात्मा गांधी (लाल मिट्टी)—परशुराम, छठा वर्ग ।
" " २—जवाहर लाल (काली मिट्टी)—विश्वनाथ, सातवाँ वर्ग ।
" " ३—गौतम बुद्ध (काठ की बनी)—रामकृपाल, पाँचवाँ वर्ग ।
" " ४—घोड़ा (साधारण मिट्टी)—तंत्रनाथ, तीसरा वर्ग ।
" " ५—कोंहड़ा (पीली मिट्टी)—जितेन्द्रकुमार, दूसरा वर्ग ।
" " ६—कद्दू (साधारण मिट्टी)—अवधेशनन्दन, दूसरा वर्ग ।
" " ७—तरबूजा (लाल मिट्टी)—गिरधारी, तीसरा वर्ग ।
" " ८—केला (पीली मिट्टी)—गोपाल, दूसरा वर्ग ।
" " ९—बोतल (काठ का बना)—धनीराम, छठा वर्ग ।
" " १०—ढोलक (")—फुलेश्वर भगत, छठा वर्ग ।
" " ११—साधु (काली और लाल मिट्टी)—गरीबनाथ, चौथा वर्ग ।

क्रम सं० १२—हाथी (काठ का बना)—सिद्धेश्वर, चौथा वर्ग।
,, ,, १३—घुड़सवार (,,)—दयाशंकर, सातवाँ वर्ग।
,, ,, १४—बत्तक (साधारण मिट्टी)—सुरेन्द्र, तीसरा वर्ग।
,, ,, १५—हंस (,,)—कौशलकिशोर, चौथा वर्ग।
,, ,, १६—देवी सरस्वती (पीली मिट्टी)—धरणीधर, सातवाँ वर्ग।
,, ,, १७—गिलास (काठ का बना)—सोहनलाल, छठा वर्ग।
,, ,, १८—दावात (,,)—हरगोविन्द, तीसरा वर्ग।
,, ,, १९—हवाई जहाज (साधारण मिट्टी)—तेजनारायण, सातवाँ वर्ग।
,, ,, २०—घड़ियाल (काली मिट्टी)—रामजीलाल, छठा वर्ग।
,, ,, २१—तश्तरी और प्याला (साधारण मिट्टी)—देवीदयाल, दूसरा वर्ग।

कमरा नं० २ (बाईं ओर)

साग-सब्जी

क्रम सं०	१ बैगन	प्रेषक	हरिवंशनारायण,	तीसरा वर्ग
,, ,,	२ कोंहड़ा		शिवेसर लाल,	पाँचवाँ वर्ग
,, ,,	३ कदुआ	,,	सीताराम,	चौथा वर्ग
,, ,,	४ टमाटर	,,	अब्दुल मजीद,	दूसरा वर्ग
,, ,,	५ फूलगोभी	,,	रामायण तिवारी,	पाँचवाँ वर्ग
,, ,,	६ आलू	,,	धनुषधारी,	छठा वर्ग
,, ,,	७ बैगन	,,	मणिशंकर,	दूसरा वर्ग
,, ,,	८ कदुआ	,,	फगुनीराम,	चौथा वर्ग
,, ,,	९ कोंहड़ा	,,	बूधनराम,	तीसरा वर्ग

क्रम सं०	१० शकरकंद	प्रेषक	रफीक अंसारी,	सातवाँ वर्ग
,, ,,	११ मिरचाई	,,	झरीलाल,	छठा वर्ग
,, ,,	१२ कागजी नीबू	,,	सोनेलाल,	छठा वर्ग
,, ,,	१३ जमीरी नीबू	,,	गणेश प्रसाद,	पाँचवाँ वर्ग
,, ,,	१४ कागल नीबू	,,	महेश्वरनाथ,	सातवाँ वर्ग
,, ,,	१५ सलगम	,,	राधाकृष्ण,	तीसरा वर्ग
,, ,,	१६ मूली	,,	बटेश्वर भगत,	दूसरा वर्ग

कमरा नं २ (दाईं ओर)

हस्त-शिल्प

क्रम सं०	१ बाँस की टोकरी	चन्द्रशेखर, छठा वर्ग
,, ,,	२ बाँस की कुरसी	प्रभुदयाल, सातवाँ वर्ग
,, ,,	३ बाँस की टेबुल	भैरवगिरि, सातवाँ वर्ग
,, ,,	४ फुलडलिया	छठीलाल, पाँचवाँ वर्ग
,, ,,	५ खजूर के पत्तों की छोटी चटाई	नगीना, छठा वर्ग
,, ,,	६ खजूर के पत्तों का झाड़ू	शिवलोचन, तीसरा वर्ग
,, ,,	७ ताड़ के पत्तों की छोटी आसनी,	होरीलाल, दूसरा वर्ग
,, ,,	८ ताड़ का पंखा	जीवनाथ, सातवाँ वर्ग
,, ,,	९ सूखे कद्दू का कमण्डल,	तृप्तिनारायण, पाँचवाँ वर्ग
,, ,,	१० सूखी तरोई के रेशे से बना हुआ कनटोप,	कुशेश्वर, सातवाँ वर्ग
	हाथ का बना कागज,	रामबुझावन, सातवाँ वर्ग

क्रम सं० १२ मछली का जाल, सहनीराम, छठा वर्ग।

कमरा नम्बर ३

खादी-घर

क्रम सं० १. तेरह नम्बर के सूत कातनेवाले वर्ग

१. लक्ष्मीपति	दूसरा वर्ग
२. रेवती रमण	दूसरा वर्ग
३. श्रीधरलाल	दूसरा वर्ग
४. श्यामकिशोर	दूसरा वर्ग

क्रम सं० २. २४ नम्बर के सूत कातनेवाले वर्ग

१. पूर्णेन्दु	तीसरा वर्ग
२. अपरेन्दु	„
३. महीपाल	„
४. नन्दकिशोर	„

क्रम सं० ३. ३१ नम्बर के सूत कातनेवाले वर्ग

१. नसीर खाँ	चौथा वर्ग
२. बलदेवराम	„
३. मधुव्रत	„
४. इन्द्रमोहन	„

क्रम सं० ४. ३६ नम्बर के सूत कातनेवाले वर्ग

१. कमलाचरण	पाँचवाँ वर्ग
२. आनन्द शंकर	„
३. लालबहादुर	„
४. वेंकटेश	„

क्रम सं० ५. खादी की गमछी काशीनाथ, सातवाँ वर्ग

क्रम सं० ६. खादी का रूमाल, शोभालाल, छठा वर्ग

क्रम सं० ७. सूतों की माला सावित्री, पाँचवाँ वर्ग
क्रम सं० ८. सूतों की माला विनोद, चौथा वर्ग
क्रम सं० ९. खादी की टोपी मनोज, पाँचवाँ वर्ग
क्रम सं० १०. खादी की गंजी हृदयनारायण, सातवाँ वर्ग
क्रम सं० ११. खादी की लुंगी— रामइकबाल छठा वर्ग

अभ्यास

(१) प्रदर्शनी और मेले में क्या भेद है ?
(२) प्रदर्शनी की तैयारी किस प्रकार करनी चाहिये ? उदाहरण देकर समझाओ।
(३) प्रदर्शनी के लिये मिली हुई सामग्रियों का वर्गीकरण कैसे
(४) आदर्श वाक्य का क्या अर्थ है ? दो-तीन उदाहरण दो।
(५) ऐतिहासिक वस्तुओं की प्रदर्शनी की एक विवरणी (चार्ट) तैयार करो।

चौथा खण्ड

कहानी-लेखन

कहानी क्या है ?

कहानी कहने और सुनने की आदत सभी लोगों में होती है। जब से यह संसार है, तबसे कहानी चली आती है। प्रायः प्रत्येक वस्तु की अपनी कहानी है। यदि तुम गंगा नदी से पूछो तो अपनी कहानी बड़े रोचक ढंग से बतायँगी। तुमने अपनी दादी या नानी से अनेक कहानियाँ सुनी होंगी। जैसे—एक था राजा, एक था सौदागर, एक थी लोमड़ी और एक थी बिल्ली। तुम्हें भी अनेक कहानियाँ याद होंगी। तुम रोज अपनी आँखों के सामने बहुत-सी घटनाएँ घटते देखते हो। उन्हीं घटनाओं को सीधी-सादी भाषा में, कुछ अनुच्छेदों में बाँटकर लिख देना 'कहानी' है।

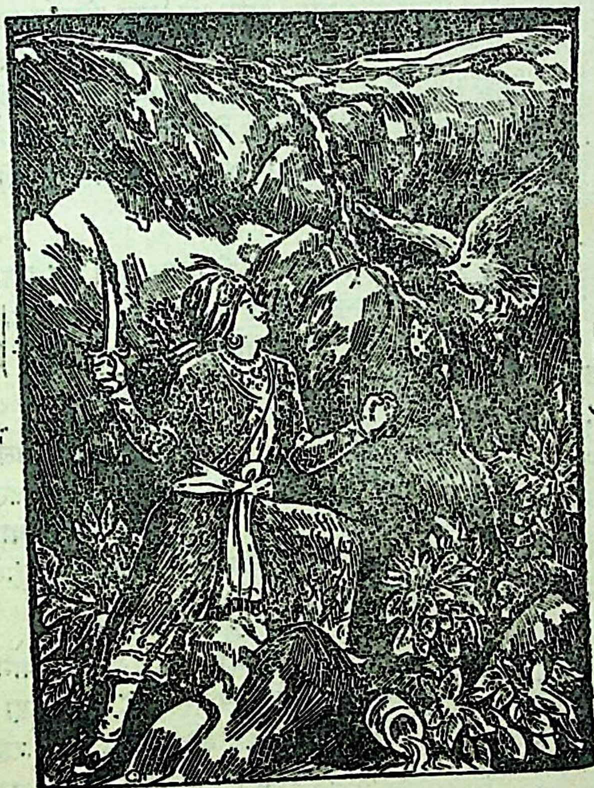
चित्र देखकर कहानी लिखना

यदि तुम्हें इसमें कठिनाई हो तो एक उपाय है। चित्र को देखकर हमलोग निश्चित विषय को समझ लेते हैं। इसी तरह चित्रित वस्तुएँ देखकर हमलोग बड़ी आसानी से कहानी बना लेते हैं। यहाँ कुछ नमूने दिये जाते हैं उन्हें गौर से देखो और समझो। फिर कहानी आप से आप बन जायगी। पहले यह नमूना लो।

यह चित्र देखो और कहानी को पढ़कर शीर्षक चुनो।

(१) एक दिन एक राजा शिकार करने के लिये जंगल में गया। वह दिन भर शिकार करता रहा। शाम को थककर एक

पेड़ के नीचे बैठा। उस समय उसे प्यास बहुत लगी थी। उसने अपने नौकर को पानी लाने के लिये भेजा। नौकर पानी ढूँढ़ने के लिये दूर तक चला गया। इधर राजा को प्यास बहुत जोर से



लगी थी। प्यास के मारे प्राण निकले जाते थे। उसने देखा कि उसी पेड़ पर से एक-एक बूँद पानी टपक रहा है। झट उसने एक

कटोरा निकाला और उसे रख दिया। कटोरे में वे पानी की बूँदें गिरने लगीं।

(२) कटोरे में थोड़ा पानी हो गया और राजा ने उसे पीना चाहा। ठीक उसी समय राजा के तोते ने उस कटोरे को लुढ़का दिया। सब पानी गिर गया। राजा को बहुत क्रोध आया। परन्तु उसने तोते को कुछ न कहा कटोरे को फिर से भरने के लिये रख दिया। कटोरे में फिर थोड़ा सा पानी हो गया और राजा ने पीना चाहा। पर तोते ने फिर से कटोरा लुढ़का दिया। राजा ने क्रोध में आकर तोते को तलवार से मार डाला। तोता मर गया।

(३) इतने में राजा का नौकर पानी लेकर वहाँ आ गया। नौकर ने जल्दी राजा को पानी दिया। राजा पानी पीकर शान्त हुआ। नौकर ने तोते को वहाँ पर न पाकर राजा से पूछा कि तोता कहाँ है ? राजा ने बता दिया।

(४) नौकर ने देखा कि तोता मरा हुआ पड़ा है। उसने राजा से उसके मरने का कारण पूछा। राजा ने सब हाल बतला दिया और कहा कि यह तोता मेरे प्राण लेना चाहता था। इसलिये मैंने इसे मार डाला। यह सुनकर नौकर को बड़ा दुःख हुआ; पर वह कुछ न कर सका।

(५) फिर नौकर ने सोचा कि देखना चाहिये कि यह पानी कहाँ से टपकता है। राजा ने भी नौकर से देखने के लिये कहा। नौकर झट पेड़पर चढ़ गया। पानी एक खोल में से टपक रहा था। नौकर ने उसके पास जाकर देखा। उस खोल में एक मरा हुआ साँप पड़ा था। साँप कई दिनों का मरा पड़ा था; इसलिये सड़ गया था। उसीके मुँह से वह पानी निकल रहा था। नौकर

ने सब हाल राजा को सुनाया। राजा को तब मालूम हुआ कि तोते ने मेरे प्राण बचा लिये।

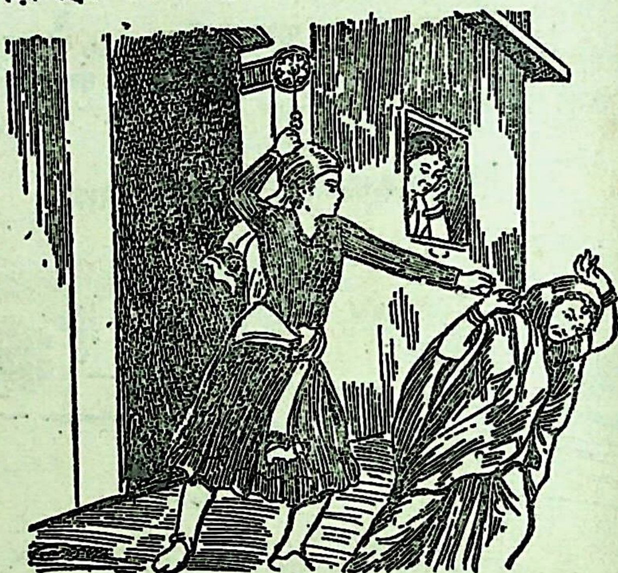
(६) अगर राजा ने वह पानी पी लिया होता, तो वह मर जाता; पर तोते ने उसे वह पानी न पीने दिया। तब राजा को तोते को मार डालने का बहुत पछतावा हुआ।

चित्र देखो और कहानी पढ़कर शीर्षक बनाओ।



(१) एक राजकुमार एक राजकुमारी के साथ विवाह करके राजधानी लौट रहा था। रास्ते में एक सुन्दर कुआँ मिला। साँझ होने पर वह अपनी स्त्री के साथ उसी कुएँ पर सो गया।

(२) एक पनिहारिन भी ठीक राजकुमारी की तरह पीला कपड़ा पहन कर उस कुएँ पर पानी भरने आई। राजकुमार



गाढ़ी नींद में सो रहा था। पनिहारिन पानी भर रही थी और राजकुमारी की ओर देख-देख कर हँस रही थी।

(३) राजकुमारी अभी तक जगी हुई थी। उसका हँसना उसे बुरा जान पड़ा। उसने डाँटकर कहा—"तुम मुझे देखकर क्यों हँस रही हो? मेरे तलवे में जो सुन्दरता है, वह तुम्हारे चेहरे में भी नहीं।" पनिहारिन ने कहा—"मैं आपको देखकर क्यों हँसूँ? कुएँ के भीतर एक आदमी है। वह मुझे देखकर हँसता है और मैं उसे देखकर हँसती हूँ।"

(४) राजकुमारी को बड़ा अचरज हुआ। वह उस पनिहारिन के नजदीक जाकर कुएँ में झाँकने लगी। बदमाश पनिहारिन ने झट-

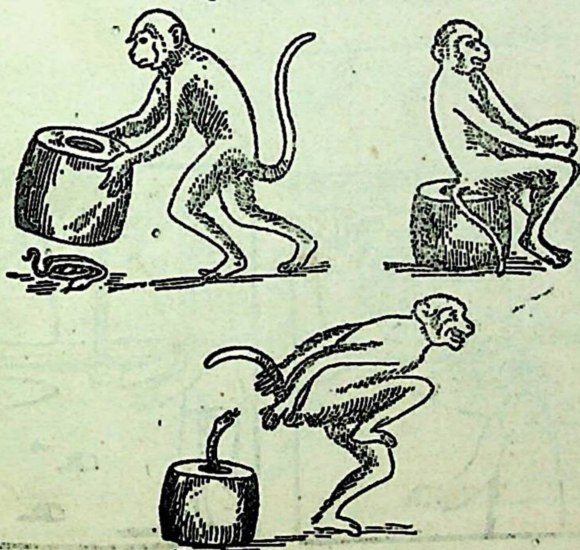
पट उसे कुएँ में ढकेल दिया और राजकुमार के नजदीक जाकर सो रही।

(५) सबेरा हुआ। सबलोग जगे और राजधानी को चले। पनिहारिन को ही नई दुलहिन समझकर लोगों ने बड़ी खातिर की। वह राजवधू बनकर मौज से रहने लगी।

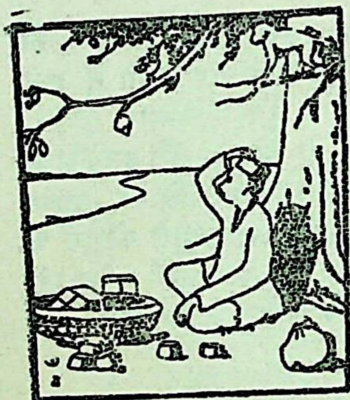
(६) एक चरवाहा सब बातों को देख रहा था। उसने राज-दरबार में जाकर इस बात का पता दिया। पीछे वह पनिहारिन पहचानी गई। उसे जेल की सज़ा हुई। राजकुमारी को कुएँ के भीतर से चरवाहे ने निकाल लिया था। राजधानी में असली राजवधू के आने पर बहुत दिनों तक आनन्द मनाया गया।

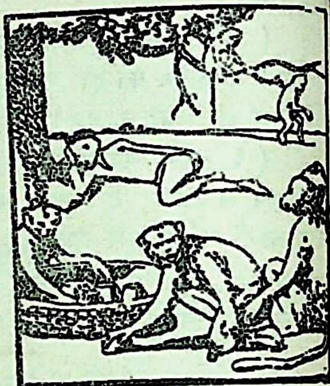
चित्रों को देखकर कहानी बनाओ

दुष्टता का फल

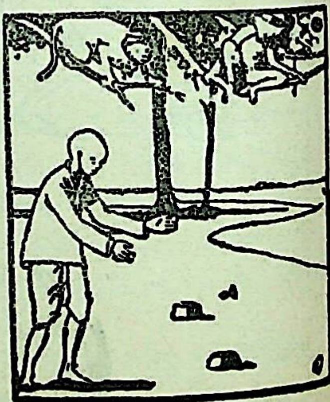


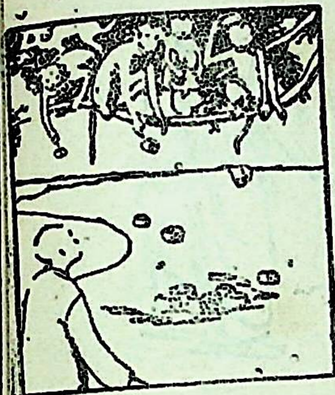
टोपीवाला और बन्दर







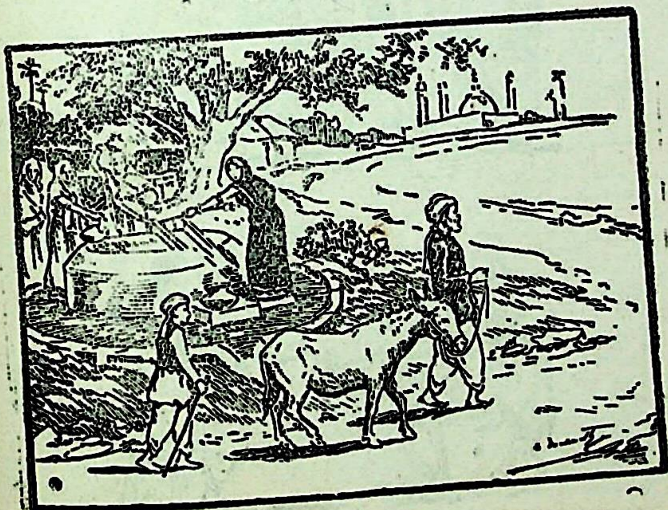






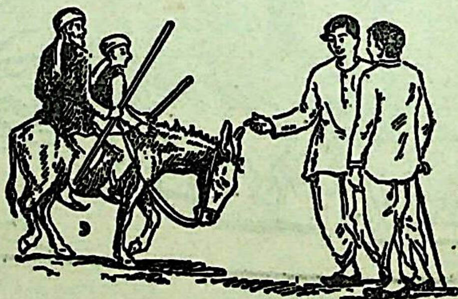
इन चित्रों को देखकर एक कहानी तैयार करो

सब को खुश रखना सहज नहीं है

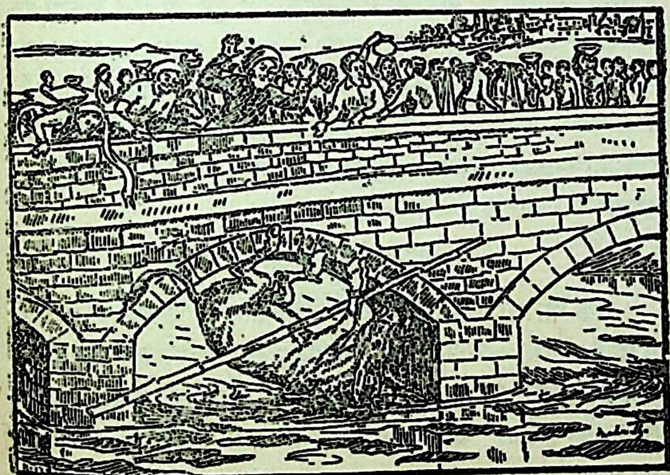












ढाँचा देखकर कहानी तैयार करना

यदि तुम्हारे वर्ग के काले तख्ते पर आदमी का ढाँचा ब
दिया जाय और तुमसे कहा जाय कि उसपर आदमी की आँखें
कान, नाक, मुँह, केश आदि बना दो तो तुम अवश्य बनाओगे
अच्छा या बुरा, यह दूसरी बात है। इसी प्रकार यदि तुम्हें कि
कहानी का ढाँचा दे दिया जाय तो तुम कहानी भी मजे में तैया
कर सकते हो।

नीचे कुछ कहानियों के ढाँचे दिये जाते हैं। उन्हीं ढाँचों के सहा
कहानियाँ तैयार करो।

(१) घमण्ड मत करो

दो बगुलों और कछुए की दोस्ती—जिस तालाब में वे रहते थे उस
सूखना—कछुए की चिन्ता—बगुलों से बातचीत—कछुए का एक उपा
सोचना—बगुलों का वैसा करना—बगुलों ने मुँह से एक लकड़ी पक
—कछुआ लटक गया।—बड़े तालाब को चले—बगुलों का उड़ चल
—एक गाँव के ऊपर से—लड़कों ने देखा—कहा कि कछुआ गिरता है—
हम मिलकर खायँगे—कछुए का घमण्ड—कहना कि चुप रहो, मैं
गिरूँगा—लकड़ी छूटना—कछुए का गिरना—लड़कों का उठाना—
खाना—घमण्ड का फल।

(२) बुरे में भला

एक व्यापारी बाजार से लौटा—बहुत से रुपये उसके साथ—रा
में पानी बरसना—व्यापारी का भींग जाना—उसे क्रोध आना—थोड़ी
में उसपर डाकू का धावा—डाकू को उसे मारने की इच्छा—डाकू
बारूद का गीला होना—बन्दूक का नहीं चलना—व्यापारी
बच जाना।

(३) धोखा मत दो

सियार का गाँव में आना—रँगरेज का मकान—नील की नाँद—सियार का उसमें गिरना—नीला हो जाना—जंगल में जाकर जानवरों से कहना कि मैं राजा हूँ—जानवरों का उसे राजा मान लेना—सियारों का सन्देह—एक दिन सब सियारों का एक साथ बोलना—नीले सियार का भी बोल उठना—जानवरों का उसे पहचान जाना—शेर का उसे मारकर खा जाना।

(४) परशुराम और सहस्रबाहु

सहस्रबाहु शिकार के लिये—जंगल में—जमदग्नि का आश्रम—जमदग्नि का सहस्रबाहु को सेना समेत अपने यहाँ रखना—कामधेनु के द्वारा भोजन आदि देना—सहस्रबाहु का पूछना—कामधेनु माँगना—जमदग्नि का अस्वीकार करना—सहस्रबाहु का बलपूर्वक ले जाना—परशुराम का आना—सब हाल जानना—लड़ने जाना—सहस्रबाहु की हार।

(५) सीता-हरण

शूर्पणखा के नाक-कान कटे देख रावण का क्रोध—बदला लेने की इच्छा—मारीच को साथ लेना—राम के पास जाना—मारीच का हिरन बनकर राम के पास जाना—सीता की हिरन पाने की इच्छा—राम से उस हिरन को मारने के लिये कहना—राम का जाना—हिरन का भागना—राम का दूर तक जाना—हिरन को मारना—ध्वनि—सीता का धोखा खाना और लक्ष्मण को भेजना—साधु के वेष में रावण का आना—सीता से भीख माँगना—उन्हें उठाकर ले जाना—राम और लक्ष्मण का लौटना—सीता को न पाकर दुःख मनाना।

अभ्यास

(१) कहानी किसे कहते हैं? अपने घर में सुनी हुई कोई कहानी लिखो।

(२) अपने आसपास के किसी साहसी या ऐतिहासिक व्यक्ति की कहानी लिखो।

(३) तुम्हारे जीवन में यदि कोई चिर स्मरणीय घटना घटी हो तो उसकी एक छोटी कहानी तैयार करो।

(४) एक व्यक्ति सत्तू की पोटली में एक सौ रुपये का नोट रखकर शहर चला। रास्ते में उसे भूख लगी। उसने बँधी हुई पोटली को पानी में खूब भिंगोया। जब खोलकर खाने बैठा तब उसने गले हुए नोट को देखा। इस संबंध में हँसानेवाली एक कहानी लिखो।

(५) एक सुग्गे को पिंजड़े से निकालकर उड़ा दिया गया। जंगल में जाने पर अन्य सुग्गों ने उसे जाति से निकाल दिया। इस संबंध में सुग्गे ने क्या सोचा ? उसे उसीके वाक्यों में वर्णन करो।

काल्पनिक संवाद

संवाद क्या है ?

अपने मन के भावों को हम अनेक प्रकार से प्रकट करते हैं। गद्य और पद्य की रचनाओं के द्वारा मन के भाव प्रकट होते हैं। बातचीत के ढंग पर जो कुछ पढ़ा या लिखा जाता है उसको 'संवाद' (वार्तालाप) कहते हैं। इस ढंग की रचना समझ में जल्दी आ जाती है।

संवाद की आवश्यक बातें

काल्पनिक संवाद लिखते समय नीचे दी गई बातों पर ध्यान देना चाहिये—

(क) बातचीत स्वाभाविक ढंग पर, सिलसिलेवार हो।

(ख) व्यक्ति और पात्र के चरित्र तथा स्वभाव को समझकर उसीके अनुरूप शब्दों का प्रयोग किया जाय।

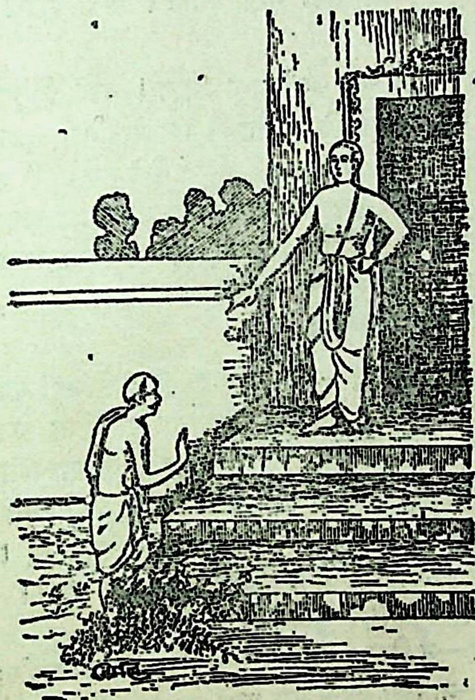
(ग) संवाद में उत्तर और प्रत्युत्तर छोटे, सरल और अर्थ का बोध कराने वाले हों।

काल्पनिक संवाद का एक नमूना यहाँ दिया जाता है।

आलस

[मुंशी कच्चू और उनका नौकर बिठुआ]

कच्चू—क्यों रे बिठुआ, रोटी तैयार हुई? भूख लगी है। जल्दी कर।



बिठुआ—(अपने से) जब सुनो तब पेट ही की बात।

सोते-बैठते, चलते-फिरते, पेट की ही चिन्ता बनी रहती है। पेट क्या है, नोनिया की भट्ठी। झोंकते जाओ, जलती जाय। बाप-रे-बाप! अभी दो घण्टे भी बैठे न हुए कि पुकार हुई रोटी! (प्रकट रूप से) मालिक, आज एकादशी है न?

कच्चू—(झुँझलाकर)—एकादशी कैसी रे! यहाँ तो रोज ही एकादशी बनी रहती है।

बिठुआ—मालिक, आप लोग तो गल-पचकर एकादशी करते हैं, पर मुझसे तो सहा नहीं जाता। अब दूसरा दरवाजा देखूँगा।

कच्चू—(पैर पटक कर) मार डाला। अरे बिठुआ, अगर तू चला जायगा तो बिना मौत ही मर जाऊँगा। हाय रे बप्पा, जो बाप-दादे ने नहीं किया, उसे मैं कैसे करूँगा? अगर कोई पानी भरते देख लेगा तो सात-पुश्तों की कमाई-इज्जत मिट्टी में मिल जायगी। देख रे बिठुआ, मैंने लुटिया और खटिया बेंचकर इस बपौती सम्पत्ति—इज्जत—को बचाया है, और तू क्या यों ही उसे गँवा देगा?

बिठुआ—तो कुछ हाल-रोजगार ही क्यों नहीं कर लेते जो खाने को तो मिलता। अब क्या बेंचियेगा? यहाँ तो पेट में आग की लपट घूम रही है और चले हैं बाप-दादे की सम्पत्ति बचाने। चुपचाप बैठे रहने से ही क्या बाप-दादों की इज्जत बचेगी? अजी साहब, मेरा हिसाब दीजिये; मैं अपना रास्ता लूँ।

कच्चू—भाई, यहाँ तो घर की ईंट भी बेंच चुका। अब मेरे पास क्या है कि हिसाब चुकाऊँ?

बिठुआ—न हिसाब दीजियेगा तो मैं नालिश करूँगा।

कच्चू—नालिश करके मेरा क्या कर लेगा?

बिठुआ—इज्जत लूँगा और क्या लूँगा?

कच्चू—अजी, इससे अपने राम का क्या होता है।

बिठुआ—तब अपने हाथ काम करने में ही सारी इज्जत का दीवाला निकल जाता है। अजी आलसियों का यह बहाना है। अच्छा, बिना नालिश के आप सुनेंगे थोड़े। (कच्चू को पकड़ता है) मेरी मजदूरी दे दीजिये, नहीं तो उतने दिनों तक मेरी मजदूरी करके सधा दीजिये जितने दिनों तक मैंने आपकी मजदूरी की है।

कच्चू—अच्छा, मैं मजदूरी करके सधाऊँगा; पर इसके लिये लिखा-पढ़ी हो जानी चाहिये।

बिठुआ—अच्छा, १५ वर्ष मेरी नौकरी के हुए। आप भी १५ वर्ष के लिये लिखा-पढ़ी करें।

कच्चू—बहुत अच्छा। (लिखकर कागज देता है।)

बिठुआ—अब आप मेरे नौकर हुए।

कच्चू—हाँ, मैं तुम्हारा नौकर हुआ।

बिठुआ—मेरे घर चलिये।

कच्चू—चलो। (दोनों जाते हैं।)

(मुंशी कच्चू और बिठुआ फिर आते हैं।)

बिठुआ—वाह, कुछ काम न धन्धा, जलपान पहले चाहिये।

कच्चू—तो क्या मैं तुम्हारा पानी भरूँगा ?

बिठुआ—नहीं तो और क्या ? मैंने पानी भरा, बर्त्तन माँजा, चौका दिया, खाने-पीने का सामान इकट्ठा किया। आप भी वही कीजिये।

कच्चू—लिखा-पढ़ी तो केवल नौकरी करने की हुई है। पानी भरने और चौका-बर्त्तन करने की बात तो नहीं लिखी है।

बिठुआ—तो और क्या कीजियेगा ?

कच्चू—दिवानी, हिसाब-किताब।

विठुआ—तो क्या मेरे जमींदारी है या दूकानदारी, कि, हिसाब लगाइयेगा ?

कच्चू—तो बैठे-बैठे खाने को दो !

विठुआ—यह लीजिये ! काम भी न करेंगे और खाना-कपड़ा भी लेंगे।

कच्चू—और वेतन के रुपये भी।

विठुआ—वाह, अच्छे आये !

कच्चू—अच्छे या बुरे, आये सही। खाना-कपड़ा और वेतन देना ही होगा। नहीं तो मैं नालिश करूँगा।

बिठुआ—(अपने आप) मुंशी ने तो हमें अच्छी आफत में फँसाया। (प्रकट रूप से) मुझे आपसे नौकरी नहीं करानी है।

कच्चू—तुम्हें चाहिये या न चाहिये, मुझे तो कागज के अनुसार नौकरी चाहिये।

विठुआ—या ईश्वर, घर बेचना होगा क्या ? मालिक मुझे क्षमा कर दीजिये।

कच्चू—कभी नहीं।

विठुआ—ऐहो बप्पा, ऐसे लोगों से ईश्वर बचावे !

(विठुआ भागता है। मुंशी कच्चू गिरते-पड़ते जाते हैं।)

('बाल-अभिनय' से)

अभ्यास

(१) संवाद की परिभाषा बताओ।

(२) संवाद लिखते समय किन-किन बातों पर ध्यान देना चाहिये ?

(३) संवाद में कोष्ठों के भीतर जो संकेत दिये गये हैं उनके तात्पर्य बताओ ?

(४) एक कुत्ता जहाँ-जाता था, वहाँ उसके पीछे एक बिल्ली जाती थी। एक दिन दोनों ने एक-दूसरे को खूब भला-बुरा कहा। उन दोनों की बातचीत का एक काल्पनिक संवाद तैयार करो।

नाटक और अभिनय

नाटक उसे कहते हैं जिसमें किसी कथानक का अभिनय किया जा सके। अभिनय किसी अवस्था, देह, वचन, वेषभूषा और शारीरिक चेष्टाओं का, किया गया अनुकरण अर्थात् नकल है। नाटक को 'रूपक' भी कहते हैं। क्योंकि इसमें अभिनेता दूसरों का रूप धारण करके अपने में उनका आरोप किया करता है। नाटक को देखनेवाले उसे थोड़ी देर के लिये वही व्यक्ति समझ लेते हैं, जिसका अभिनय वह करता है!

नाटक में जो भाग लेते हैं उन्हें पात्र या अभिनेता कहते हैं। यदि वे पुरुष हों तो उन्हें पुरुष-पात्र या अभिनेता, और यदि वे स्त्री हों तो उन्हें स्त्री-पात्र या अभिनेत्री कहते हैं।

रंगमंच

नाटक जिस स्थान पर खेला जाता है उस स्थान को रंगशाला या रंगमंच कहते हैं। नाटक के दृश्यों को दिखलाने के लिये पर्दों का व्यवहार किया जाता है जिनसे उन दृश्यों की झाँकी मिलती है। परदे के पीछे जो स्थान रहता है उसे पृष्ठभूमि कहते हैं। नाटक देखनेवालों को दर्शक कहते हैं। नाटक के अभिनय के लिये कई पर्दों की आवश्यकता होती है। प्रत्येक दृश्य पर पर्दे बदलना आवश्यक है, किन्तु अधिक पर्दों का प्रबन्ध न रहने से एक ही सादे पर्दे पर भी कई दृश्यों का काम चला लिया जाता

है। प्रत्येक अंक की समाप्ति पर सभी पर्दे गिराये जाते हैं। पर्दा उठाने और गिराने के लिये एक होशियार आदमी की जरूरत होती है जो ठीक मौके पर पर्दा उठाया और गिराया करे।

रंगमंच के पीछे एक कमरा होना चाहिये जिसमें पात्रों का बनाव-शृंगार किया जाय। इस कमरे में पात्र अपनी वेषभूषा ठीक करता है और उसका बनाव-शृंगार किया जाता है। ऐसा प्रबन्ध रहे कि दर्शकों को उस कमरे का दृश्य दिखाई नहीं पड़े।

अभिनय की आवश्यक बातें.

रंगमच पर जब अभिनेता जाता है तो कभी-कभी अपने द्वारा बोले जाने वाले शब्दों या वाक्यांशों को भूल जाता है। इसलिये रंगमंच की पृष्ठभूमि से, बाईं या दाईं ओर से एक आदमी अभिनेता के वार्त्तालाप को धीरे-धीरे पढ़ता जाता है। यह आवाज केवल रंगमंच पर अभिनय करनेवालों को ही सुनाई पड़े इसका पूरा ध्यान रखना पड़ता है।

अभिनय करनेवाले को स्पष्ट और तेज आवाज में बोलना चाहिये जिससे उसके वार्तालाप को सभी दर्शक सुन सकें। किन्तु, भाव के अनुकूल ही आवाज को रखना आवश्यक है। आवाज में उचित चढ़ाव-उतार होना चाहिये। नीरस और तीखी आवाज से लोग ऊब जाते हैं।

अभिनय करते समय अभिनेता को यह ध्यान रखना चाहिये कि यदि वह रंगमंच पर बाईं ओर से आया है तो दाईं ओर से प्रस्थान करे और यदि दाईं ओर से आया है तो बाईं ओर से परदे के पीछे जाय। अभिनेता के हाव-भाव, वार्तालाप आदि पर ही अभिनय की सफलता निर्भर करती है। वह चाहे तो

क्षणभर में दर्शकों को हँसा या रुला सकता है। जो कुशल अभिनेता होता है वही ठीक अभिनय कर पाता है। अभिनय करते समय अभिनेता को रंगमंच पर चुपचाप, निर्जीव की तरह नहीं खड़ा रहना चाहिये। उसे बराबर अपने चेहरे की भाव-भंगिमा बदलते रहना चाहिये जिससे दर्शकों का आकर्षण बना रहे। अभिनय में स्वाभाविकता लाना ही अभिनेता की सफलता है। उसे रंगमंच पर अपना पार्ट इस प्रकार अदा करना चाहिये जिससे दर्शक उसे कृत्रिम न समझकर सच्ची घटना समझें। अभिनय करनेवाले की कोशिश यह रहनी चाहिये कि उसकी पीठ दर्शक की ओर न रहे। यह रंगमंच के अनुशासन के विरुद्ध है। इसके साथ ही रंगमंच के आस-पास या पीछे शोरगुल न होना चाहिये। इससे अभिनेताओं को बाधा पहुँचती है। जिस अभिनेता को जिस दृश्य में उतरना हो उसे उसके आरम्भ होने के दो चार मिनट पहले ही से परदे की बाईं ओर या दाईं ओर खड़ा रहना चाहिये और उचित समय पर तुरंत रंगमंच पर उपस्थित हो जाना चाहिये, क्योंकि दृश्य समाप्त हो जाने पर रंगमंच का खाली रहना बुरा है।

सफल अभिनय

अभिनय के लिये अभ्यास की आवश्यकता है। जब सभी अभिनेता अपने-अपने पाठों को कंठस्थ करलें तो उनका अभ्यास करें। और, पूरा अभ्यास हो जाने पर ही अभिनय के लिये रंगमंच पर उतरें। आरम्भ में रंगमंच पर उतरते समय एक प्रकार की झिझक होती है जो दस आदमियों के बीच बोलने में होती है। पर धीरे-धीरे अभ्यास हो जाने पर यह झिझक दूर हो जाती

है और अभिनेता अपने मन में सोचता है कि मैं अपने घर के कमरे में बोल रहा हूँ।

निर्देशक

सफल अभिनय के लिये एक ऐसे सुयोग्य और अनुभवी व्यक्ति की जरूरत होती है जो अभिनय सम्बन्धी सभी बातों की जानकारी रखता हो और यदि स्वयं एक कुशल अभिनेता हो तो और अच्छा। वह अपने अनुशासन में सबको बाँधे रहता है। जो नाटक खेला जा रहा है या खेला जायगा, उसके संबंध में एक-एक चीज की जानकारी उसे रखनी चाहिये। अभिनय में होनेवालीकिसी भूल के लिये दर्शक उसे ही जिम्मेवार समझते हैं और यदि अभिनय सफल उतरा तो उसकी अधिक प्रशंसा करते हैं। इस व्यक्ति को पहले 'सूत्रधार' कहा जाता था पर, अब इसके लिये प्रचलित शब्द 'निर्देशक' है।

संगीत और प्रकाश

अभिनय के लिये संगीत आवश्यक है। संगीत से अभिनय में जान आ जाती है। यदि नाटक के भीतर गीत दिये गये हों तो उसे अभिनय करनेवाले गा सकते हैं। जहाँ ऐसा न हो वहाँ वाद्ययंत्रों के सहारे संगीत की ध्वनियाँ, समय-समय पर प्रस्तुत की जानी चाहिये। अभिनय प्रायः रात में किया जाता है। इसके लिये रोशनी का उत्तम प्रबन्ध होना चाहिये। रंगमंच पर रोशनी का दृश्य दिखलाने के लिये दीपों, मोमबत्तियों और फुलझड़ियों से काम लिया जा सकता है।

नाटक और एकांकी

एक अंक में जो नाटक समाप्त हो जाय उसे 'एकांकी नाटक' और कई अंकों में समाप्त होनेवाले को 'नाटक' कहते हैं। नीचे 'एकांकी नाटक' का एक नमूना दिया जाता है।

हम एक हैं

पात्र परिचय—

नरेन—एक परिश्रमी और तेज विद्यार्थी।

श्रीकान्त—एक साधारण बुद्धि का विद्यार्थी। नरेन का पड़ोसी और मित्र।

किशोर—एक मंद बुद्धि का खिलाड़ी विद्यार्थी। नरेन से मन-मुटाव रखनेवाला।

(स्कूल के कुछ अन्य छात्रगण)

पहला दृश्य

स्थान—नरेन का घर

समय—लगभग संध्याकाल

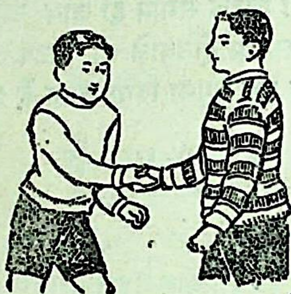
(नरेन बैठा अपना पाठ पढ़ रहा है। श्रीकान्त का प्रवेश)

श्री०—अरे भाई नरेन, घूमने भी चलोगे या किताबी कीड़ा ही बने रहोगे?

न०—क्या करूँ भाई! नहीं पढ़ूँ तो कक्षा में अच्छा स्थान कैसे लूँगा?

श्री०—हाँ-हाँ, पढ़ना। लेकिन अभी तो साँझ हो गई। चलो, बाग की सैर करें।

न०—वाह जी ! अभी कुछ देर और पढ़ लूँगा तो टहलने चलूँगा। जरा दो-चार हिसाब और बना लेता हूँ।



श्री०—अच्छा लो, बैठता हूँ।

(श्रीकान्त बैठा-बैठा नरेन की पुस्तकें और कापियाँ उलट-पुलटकर देखता है।)

श्री०—बहुत देर हो गई। अब घूमने चलें।

न०—चलो।

दूसरा दृश्य

स्थान—*छोटा-सा बगीचा।*

समय—*संध्या काल।*

(नरेन और श्रीकान्त का टहलते हुए प्रवेश)

श्री०—अरे भाई ! तुम तो खूब पढ़ते हो। मैं तो पढ़ता ही नहीं। क्या करूँ ? समझ में नहीं आता।

न०—खूब पढ़ा करो।

श्री०—मेरा हिसाब तो ठीक नहीं है। इसलिये कक्षा में मेरा स्थान पीछे रहता है।

न०—तो खूब हिसाब बनाओ।

श्री०—यदि तुम मदद कर दिया करो तो अच्छा होगा।

न०—हाँ-हाँ, जरूर मदद कर दूँगा। तुम मेरे यहाँ कल से आया करो।

श्री०—अच्छा।

न०—श्रीकान्त! देखो तो पश्चिम की ओर कैसी लाली छाई हुई है?

श्री०—मैं तो सतरंगा रंग देख रहा हूँ।

न०—और वह देखो! काले-काले बादल दौड़े आ रहे हैं।

श्री०—कितना अच्छा दृश्य है! मुझे तो कविता करने का जी चाहता है।

न०—तो बनाओ न कविता।

श्री०—अभी नहीं। कल बनाकर दिखाऊँगा।

तीसरा दृश्य

स्थान—सड़क।

समय—प्रातःकाल।

(नरेन और श्रीकान्त एक साथ जा रहे हैं। किशोर दूसरी ओर से आता हुआ दिखाई देता है। दोनों को एक साथ आश्चर्य की मुद्रा से देखकर जरा ठिठक जाता है और नरेन को इशारे से बुलाता है। नरेन उसके पास अकेले जाता है। दोनों बात करते हैं। श्रीकान्त इधर-उधर चहलकदमी करता है!)

कि०—क्यों जी नरेन! इस श्रीकान्त से मित्रता कब से की है?

न०—मित्रता तो बराबर से थी।

कि०—झूठ।

न०—झूठ क्या? श्रीकान्त से पूछ लो। हमलोग पढ़कर रोज सुबह-शाम घूमने निकलते हैं। बड़ा आनन्द आता है।

कि०—हुँ: ! तो यह बात है। (धीरे से हँसता हुआ चला जाता है।)

न०—श्रीकान्त ! तुमने सुना ? किशोर क्या कह रहा था ?

श्री०—हाँ, वह हमलोगों से ईर्ष्या करता है।

न०—हमने पढ़ा है, ईर्ष्या करना ठीक नहीं।

श्री०—ठीक है, ईर्ष्या से आदमी का पतन होता है।

न०—अच्छा, चलो अब घर चलें। छमाही परीक्षा नजदीक है।

श्री०—मुझे जरा यह हिसाब बताओ। (किताब खोलकर आगे बढ़ाता है।)

न०—हाँ, लाओ। और देखो, मुझे भी कहीं-कहीं हिन्दी में सहायता कर दिया करना। बस, हमलोग कक्षा में सबसे आगे बढ़ जायँगे।

श्री०—देखो न, यह सवाल जरा कठिन मालूम पड़ता है।

न०—(किताब का पन्ना देखते हुए) यह तो एकदम आसान है। इसका कायदा एकदम सहज है। देखो, यह बन गया।

(सवाल बना देता है। कुछ देर तक दोनों कुछ-कुछ बोलते हुए हिसाब बनाते हैं।)

न०—आओ, अब हिन्दी का पाठ पढ़ा जाय।

श्री०—ठीक है।

न०—(हिन्दी की पुस्तक खोलकर बढ़ाता हुआ) जरा इस कविता का अर्थ समझा दो तो।

श्री०—(समझाने की मुद्रा में) देखो, इसमें कवि कहता है कि हमारा जीवन झरने के समान है। जिस तरह झरना हमेशा

आगे बढ़ता चलता है, उसी तरह हमारा जीवन भी उन्नति के मार्ग पर बढ़ता रहता है।

न०—(माथा खुजलाकर) अब समझ में आया। 'जीवन और झरने का' यह मेल मुझे गड़बड़ा देता था।

(दोनों हँसते हैं।)

अच्छा, जाओ। जल्दी भोजन करके स्कूल चलो। समय हो रहा है।

(दोनों का प्रस्थान)

चौथा दृश्य

स्थान—स्कूल

समय—१० बजे दिन

(छमाही परीक्षा की रिपोर्ट लिये अनेक छात्र रंगमंच पर आते-जाते दिखाई देते हैं। एक ओर से नरेन और दूसरी ओर से श्रीकान्त का प्रवेश।)

श्री०—नरेन, तुम्हें कितने नम्बर आये हैं?

न०—मुझे तो प्रथम स्थान आया है। और तुम्हें?

श्री०—खूब! मेरा स्थान तीसरा है।

न०—(उछलकर) वाह! तुमने तो बाजी मार ली!

श्री०—मैं तो तुम्हें धन्यवाद दूँगा भाई। तुम्हीं ने तो मुझे हिसाब में तेज बना दिया है।

न०—नहीं, यह तो तुम्हारी मिहनत का फल है। अच्छा चलें। घर पर माता राह देखती होंगी।

श्री०—हाँ-हाँ, मैं भी चला।

(दोनों जाते हैं)

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—श्रीकान्त का घर

समय—सायंकाल

(नरेन का चिन्तित रूप से प्रवेश)

न०—अरे श्रीकान्त ! तुम भी अजीब आदमी हो। मैं रोज तुम्हारी राह देखता हूँ, अब मेरे यहाँ आते क्यों नहीं ? अरे, तुम्हारे पढ़ने के कमरे में कौन है ?

श्री०—(चौंकता हुआ) हाँ ! हाँ ! वही किशोर है। पढ़ने आया है।

न०—तो मेरे यहाँ पढ़ने क्यों नहीं आते ?

श्री०—(माथा खुजला कर) क्या करूँ, समय नहीं मिलता।

न०—मैं समझ गया, तुमको समय क्यों नहीं मिलता है। अच्छा नमस्ते।

(नरेन कुछ रुष्ट-सा चला जाता है और उसके जाते ही कोने में दुबका हुआ किशोर दर्शकों के सामने आता है।)

श्री०—आओ भाई, आओ। अब कुछ पढ़ा जाय।

कि०—(मुँह बनाकर) अरे ! तुम भी क्या पढ़ना-पढ़ना रट रहे हो ! कुछ "जेनरल नॉलेज" अर्थात् सामान्य ज्ञान रखना चाहिये।

श्री०—वह तो किताब में है।

कि०—हुँः। किताब में नहीं, सिनेमा के रूपहले परदे पर है।

श्री०—मैं सिनेमा नहीं जाऊँगा। माँ रंज होती हैं।

कि०—अरे माँ को मनाना तो मामूली बात है। कोई बहाना बना देना।

श्री०—मेरे पास पैसे भी तो नहीं हैं।

कि०—पैसे की चिन्ता मत करो। (जेब से मनीबेग निकालकर हिलाता है) देखो, यहाँ कितने पैसे हैं ?

श्री०—अच्छा चलो।

(दोनों जाते हैं।)

छठा दृश्य

स्थान—श्रीकान्त का घर

समय—दोपहर

(श्रीकान्त और किशोर बैठकर बातचीत कर रहे हैं।)

श्री०—अरे भाई, मुझे तो कुछ गर्मी मालूम पड़ रही है।

कि०—जानते नहीं, समय कितना जल्द बीतता है। होली की छुट्टी कब न समाप्त हो गई। अब तो एक-डेढ़ महीने में वार्षिक परीक्षा भी होनेवाली है।

श्री०—(घबराकर) अरे ! तुमने तो ठीक कहा। मुझे तो याद ही नहीं था। अरे बाप !

कि०—अरे, तुम क्यों परीशान होते हो ? इस बार तुम जरूर नरेन से आगे निकल जाओगे ! देखो, मुझे भी साथ लिये चलना।

श्री०—अच्छा, अब बात मत करो। हमें पढ़ना चाहिये।

(दोनों आहिस्ते से बोलकर थोड़ी देर पढ़ते हैं)

कि०—अच्छा, अब काफी पढ़ लिया। चलता हूँ।

श्री०—अच्छा जाओ..........।

(किशोर जाता है और थोड़ी देर के बाद फिर लौटता है।)

कि०—कुछ मालूम हुआ है ?

श्री०—क्या ?

कि०—अभी सुशील से रास्ते में भेंट हुई थी। वह कह रहा था कि परीक्षा आरम्भ होने की तिथि निश्चित हो गई! हमलोग उस दिन गैरहाजिर थे।

श्री०—(घबराकर) बड़ा गजब हो गया।

कि०—हमलोग तो रोज पढ़ते ही हैं। डरने की क्या बात है

श्री०—हूँ। सो तो है, लेकिन जरा····।

सातवाँ दृश्य

स्थान—स्कूल

समय—दोपहर

(वार्षिक परीक्षा-फल लेकर लड़कों का झुण्ड रंगमंच पर हँसता-कूदता आ रहा है। उसमें से कई आवाजें एक साथ आ रही हैं—भाई नरेन प्रथम आया···और वाह! विनोद का स्थान द्वितीय रहा। देखो तो करुणकृष्ण ने तीसरा स्थान पा लिया····। हँसी की आवाज सुनाई पड़ती है! किशोर और श्रीकान्त रङ्गमंच पर चौकन्ना होकर इधर-उधर देखते हैं। फिर श्रीकान्त धीरे-धीरे रोता है।)

न०—(देखकर) अरे श्रीकान्त! रोते क्यों हो?

श्री०—(चुप होकर) नहीं भाई, मैं अपनी गलती पर पछता रहा हूँ।

न०—तुम तो पास कर गये?

श्री०—पास करने से क्या होगा। मैं तो प्रथम स्थान लेना चाहता था, लेकिन······(रोता है)। मुझे क्षमा कर दो नरेन!

न०—क्षमा करने की क्या बात है? भाई, तुमने तो स्वयं मेरा साथ छोड़ दिया और किशोर से दोस्ती कर ली। फिर उसके चक्कर में पड़कर सिनेमा और पिकनिक की सैर करते रहे।

श्री०—उसीने हमलोगों में झगड़ा पैदा कर दिया और एक दूसरे से अलग कर दिया। सच कहता हूँ, मुझे उसके चढ़ाने से थोड़ा घमण्ड भी हो गया था।

न०—घमण्ड बहुत बुरी चीज है। अच्छा, जो हुआ सो हुआ। अब फिर से हमलोग मिलकर रहेंगे और एक साथ पढ़ा-लिखा करेंगे। लो, गले मिलो, हम एक हैं।

(दोनों गले मिलते हैं)

(पर्दा गिरता है।)

अभ्यास

(१) नाटक और अभिनय की परिभाषा संक्षेप में बताओ।
(२) नाटक खेलने के लिये रंगमंच की आवश्यकता क्यों पड़ती है?
(३) एक कुशल अभिनेता में किन-किन गुणों का होना आवश्यक है?
(४) निर्देशक किसे कहते हैं? उसका क्या महत्त्व है?
(५) क्या संगीत के बिना नाटक नहीं खेला जा सकता है? क्यों?
(६) तुमने कोई नाटक देखा है, उसमें जो भूलें तुम्हें मालूम पड़ीं, उन्हें समझाकर लिखो।

वाद-विवाद

वाद-विवाद क्या है?

वाद-विवाद का अर्थ है किसी बात या विषय को लेकर बहस करना। इसे तर्क-वितर्क भी कहते हैं। अंग्रेजी में इसे 'डिबेट' कहते हैं। वाद-विवाद का चलन बहुत पुराना है। मनुष्य के पास विचार होता है और वह उस विचार को लिखकर या बोलकर प्रकट करता है। कई बातें ऐसी हैं जिनपर हरएक

आदमी की अलग-अलग राय होती है। आखिर इसका निर्णय कैसे होगा कि किस आदमी की राय गलत है, और किसकी सही ? यदि हम एक जगह बैठ कर अपने-अपने विचारों के पक्ष में तर्क उपस्थित करें तो पता चलेगा कि कौन क्या कहता है। पर, यहाँ एक खतरा है। एक विषय पर यदि दो दलों के लोग बोलें और उसमें एक दल कहे कि नहीं भाई, हमारा तर्क बड़ा प्रबल और जोरदार है। फिर दूसरा दल भी यही कहे तो अजीब उलझन पैदा हो जायगी। इसलिये वाद-विवाद के लिये एक निष्पक्ष और सुयोग्य व्यक्ति की आवश्यकता है जो वाद-विवाद होते समय शान्ति बनाये रक्खे तथा वाद-विवाद समाप्त होने पर अपना निर्णय दे। इस व्यक्ति को निर्णायक या सभापति कहते हैं। सभापति का निर्णय दोनों पक्षों को मान्य होता है।

वाद-विवाद सम्बन्धी-धारणा

वाद-विवाद का कभी-कभी लोग गलत अर्थ लेते हैं और समझते हैं कि इसमें झगड़ा-लड़ाई होती है। यह धारणा एकदम गलत है। वाद-विवाद में शान्तिपूर्वक अपने पक्ष के समर्थन के लिये तर्क उपस्थित किया जाता है। वाद-विवाद समाप्त हो जाने पर पराजित और विजयी, दोनों पक्षों के लोग बड़े प्रेम से आपस में मिलते हैं और एक दूसरे की प्रशंसा करते हैं।

ध्यान देने योग्य बातें

वाद-विवाद के लिये एक समय निश्चित होता है। प्रत्येक बोलनेवाले को पाँच मिनट, दस मिनट या इससे अधिक समय मिलता है। खूबी यह है कि इतने ही समय में बोलनेवाला अपने पक्ष का सबल तर्क उपस्थित करके चला जाय। इसके लिये जरूरी है कि जिस विषय पर बोलना हो उस विषय पर कुछ

मसाला पहले ही तैयार कर कागज के छोटे टुकड़े पर लिख लिया जाय ताकि बोलते समय कोई बात दिमाग से उड़ न जाय। जब जरूरत हो तो पुर्जे को देख लिया जाय।

वाद-विवाद में बोलते समय सभापति और उपस्थित लोगों को देखकर संबोधित किया जाता है। जैसे—सभापति महोदय और साथियो! सभापति महोदय, भाइयों और बहनो!

यहाँ पर एक विषय दिया जाता है—

देशी पोशाक पहनना अच्छा है या विदेशी?

दीनानाथ—(संबोधन करके) आज के वाद-विवाद का विषय बड़ा सामयिक है। प्रश्न यह है कि देशी पोशाक पहनना अच्छा है या विदेशी। मैं देशी पोशाक के पक्ष में बोल रहा हूँ। देशी शब्द से ही हमारे सामने अपने देश का मानचित्र उपस्थित हो जाता है। इसके साथ ही हमारे सामने अपने देश की सभ्यता, धर्म-कर्म और दादे-परदादे की तस्वीरें आ जाती हैं। हमारा देश सन्तों और महात्माओं, विचारकों और विद्वानों का देश शुरू से ही रहा है। 'जैसा देश वैसा वेश' की बात प्रसिद्ध है। हम अपने देश का अन्न खाते हैं, अपने देश के घर में रहते हैं। फिर विदेशी पोशाक क्यों पहनें? पोशाक को अंगरक्षक भी कहते हैं। यदि हमारा शरीर देशी पोशाक से ढक जाय और उसकी भली-भाँति रक्षा हो जाय तो हमें विदेशी पोशाक पहनने की क्या जरूरत है? मैं पूछता हूँ कि जब हमारे पास धोती-कुरता, मिर्जई-टोपी है तो हम क्यों कोट-पतलून, हैट और नेकटाई लगावें? क्या आपने किसी विदेशी को धोती-कुरता और मिर्जई पहने हुए

कभी देखा है ? अपने ही देश में रहकर विदेशी पोशाक पहनना लज्जा की बात नहीं तो क्या है ? प्रत्येक देश की अपनी परम्परा होती है। अपना रीति-रिवाज होता है। उसे जूठन की तरह छोड़ देना कहाँ की बुद्धिमानी है ? हमारे देश की जलवायु ऐसी है कि यहाँ के लिये कोट-पतलून सर्वथा अनुपयुक्त है। कड़ी गर्मी पड़ रही है और आप कोट-पतलून चढ़ाये, गले में नेकटाई बाँधे सड़क पर चल रहे हैं और पसीने से तर-बतर हो रहे हैं। यह कितना हास्यास्पद लगता है। हमारा देश गरीब है। यहाँ की नब्बे प्रतिशत जनता देहातों में बसती है। जिन्हें दोनों जून भोजन मिलना कठिन है, भला वे कहाँ से विदेशी पोशाक पहन सकते हैं। क्या आपने बापू को नहीं देखा ? वे किसी ज़माने में विदेशी पोशाक पहनते थे। पर, जिस दिन उन्हें पता चला कि भारत की अधिकांश जनता अधनंगी है तो उसी दिन से उन्होंने विदेशी पोशाक और विदेशी वस्त्र का बहिष्कार कर दिया। बापू को लंगोटी में जो आदर और सम्मान मिला वह संसार के किस व्यक्ति को मिला है ? चक्रवर्ती राजगोपालाचारी गवर्नर ज़ेनरल बन गये थे लेकिन उनकी पोशाक वही बनी रही—धोती-कुरता और चादर। आज हमारे राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद और प्रधान मंत्री को देखिये कि वे कौन-सी पोशाक पहनते हैं। जरा घर-घर घूमनेवाले विनोबाजी की ओर तो देखिये। वे कौन कोट-पतलून लगाये फिरते हैं ? अगर हम धोती-कुरते और टोपी में भले नहीं लगते तो लज्जा की बात है ! हमारे नेताजी सुभाषचन्द्र बोस धोती-कुरते और टोपी-चादर में कितने फबते थे ? और महान् विचारक तथा दार्शनिक, अपने उप-राष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् की पगड़ी आपने देखी है ? अब आप ही बताइये कि मैं देशी पोशाक

के पक्ष में इतना क्यों जोर दे रहा हूँ। अब अधिक कहने की आवश्यकता नहीं। मुझे जो कहना था सो कह दिया। अब मैं अपने स्थान पर जाता हूँ। (तालियाँ)

चन्द्रशेखर—(संबोधन के बाद)—अभी भाई दीनानाथ ने बड़े जोरदार शब्दों में देशी पोशाक का समर्थन किया है। उन्होंने हमारे देश के संतों-महात्माओं, विद्वानों और विचारकों का उल्लेख किया है। इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं। उन्होंने 'जैसा देश वैसा वेष' वाली बात चलाई है। भाई दीनानाथ बुरा न मानें तो मैं पूछता हूँ कि धोती के ऊपर कमीज पहनना किस देश में प्रचलित है ? (सभापति की आवाज आती है—व्यक्तिगत आक्षेप करना ठीक नहीं) हाँ, तो मैं यह कहना चाहता हूँ कि 'देश का मानचित्र नहीं बदलता' यह ठीक है, पर देश की परम्परा बदलती है, देश के रीति-रिवाजों में भी परिवर्त्तन होता है। यदि हम पुरानी लकीर के फकीर बने रहेंगे तो इस उन्नति के युग में पीछे रह जायँगे। हमारे देश में अनेक जातियों के लोग बाहर से आकर बस गये और यहाँ घुलमिल गये। उनका रहन-सहन, खान-पान और पोशाक पर प्रभाव पड़ना बिलकुल स्वाभाविक है। हम अपने देश का उपजा हुआ अन्न खाते हैं और अपने मकान में रहते हैं, यह ठीक है। पर, मैं पूछता हूँ कि हम ढेर-की-ढेर विदेशी वस्तुओं का प्रयोग क्यों करते हैं ? गाँधीजी लंगोटी जरूर पहनते थे, परन्तु पास में जेबघड़ी भी रखते थे। एक बारगी दकियानूसी बन जाना शोभा नहीं देता। दीनानाथ जी ने हमारे प्रधान मंत्री का उदाहरण दिया है। हमारे प्रधान मंत्री लंदन या अमेरिका जाते हैं तो वहाँ कभी-कभी कोट-पतलून, हैट और नेकटाई भी लगाते हैं। यदि जलवायु के विचार से देखा जाय तो भारतवर्ष में जाड़ा भी आता है। उस समय कोट-

पतलून या कोट-पाजामा पहनना बड़ा अच्छा होता है। हम यदि यह मान भी लें कि साधारण लोगों के लिये देशी पोशाक ठीक है तो फिर हमारी पुलिस, सैनिक और हवाई जहाज उड़ाने वाले कौन पोशाक पहनते हैं? जिस सैनिक को मोर्चे पर इधर-उधर दौड़ना पड़ता है, नदी-नाले लाँघने पड़ते हैं, उसे यदि धोती-कुरता पहना दिया जाय तो वह क्या कर सकता है? उसके लिये हाफ-पैंट और हाफ कमीज अच्छी पोशाक है। इससे देह में चुस्ती और फुरती आती है। हमारा कहना है कि हम विदेशी वस्त्र को तिलांजलि न दें और समय के साथ चलें। इतना कहकर मैं अपने स्थान पर जाता हूँ। (तालियाँ)

वाद-विवाद समाप्त हो जाने पर सभापति महोदय ने अपना निर्णय दिया कि हमें न दकियानूसी विचार रखना चाहिये और न एकदम आधुनिक। देश और काल को देख कर वैसा ही आचरण रखना उचित है। किन्तु यदि हमारा काम देशी पोशाक से ही चल जाय तो केवल शौक के लिये विदेशी पोशाक पहनना उपहासास्पद है। अच्छे रिवाज यदि विदेश से भी मिलें तो उन्हें ग्रहण कर लेना चाहिये।

अभ्यास

(१) वाद-विवाद किसे कहते हैं?

(२) वाद-विवाद से क्या लाभ है? संक्षेप में बताओ।

(३) क्या वाद-विवाद के पहले उसके लिये तैयारी की आवश्यकता है? समझाओ।

(४) वाद-विवाद में किन-किन नियमों का पालन किया जाता है?

विचार-गोष्ठी

विचार-गोष्ठी क्या है ?

कभी-कभी किसी विषय पर गंभीरतापूर्वक विचार करने की जरूरत पड़ती है। इसके लिये वाद-विवाद करना उपयुक्त नहीं होता। दो-चार आदमी आपस में बैठकर विचार-विमर्श कर लेते हैं, जिसे विचार-गोष्ठी कहते हैं। इस विचार-गोष्ठी का जो आयोजन करता है उसे 'संयोजक' कहते हैं। गोष्ठी में से किसी व्यक्ति को इसका अध्यक्ष चुन लेते हैं जो अंत में सभी विचारों को परखकर अपना अन्तिम विचार उपस्थित करता है। उसे उपस्थित सदस्य मान लेते हैं।

विचार-गोष्ठी में जिन सदस्यों को अपने विचार देने होते हैं उन्हें संयोजक निश्चित विषय बतला देता है। फिर वे अपने-अपने विचारों को गोष्ठी में उपस्थित करते हैं। गोष्ठी में जो विचार रक्खें जायँ वे उलझे हुए न हों और उनकी भाषा सहज और बोधगम्य हो।

यहाँ पर विचार-गोष्ठी का एक नमूना दिया जाता है। विचार-गोष्ठी के लिये निम्नलिखित विषय रक्खा गया है—

स्कूल के पुस्तकालय के लिये पुस्तकों का चुनाव

संयोजक—महाशय, आपलोग जानते हैं कि आजकल हमारे लिये पुस्तकों का महत्त्व कितना बढ़ गया है। हमारा ज्ञान-विज्ञान पुस्तकों में भरा पड़ा है। हमारे सामने हजारों पुस्तकें हैं, पर हमें देखना है कि हमारे लिये कौन-कौन सी पुस्तकें अच्छी हैं। अब हम आपलोगों से इस संबंध में अपने विचारों को उपस्थित करने के लिये आग्रह करते हैं।

मनोरंजन—मेरा विचार है कि पुस्तकालय में कविता की बालोपयोगी पुस्तकें रक्खी जायँ। हमारे साथियों को कविता बहुत आती है।

दरबारी लाल—भाई, केवल कविता की पुस्तकें रखने से विद्यार्थियों को लाभ न होगा। इसलिये मेरा विचार है कि पुस्तकालय में कहानी की बालोपयोगी पुस्तकें भी रक्खी जायँ। और हाँ, कविता की सभी पुस्तकें बालोपयोगी हों, मुझे यह विचार जँचता नहीं। कहिये प्रभाकर जी, आपकी क्या राय है?

प्रभाकर—आप ठीक कहते हैं! कविता की बहुत-सी ऐसी पुस्तकें हैं जिन्हें बच्चे और सयाने दोनों बड़े चाव से पढ़ सकते हैं। जैसे 'भारत-भारती' या 'जयद्रथ-वध' आदि पुस्तकों को लीजिये।

मनोरंजन—प्रभाकरजी, मैं आपके विचारों से सहमत हूँ। क्यों भाई ओंकार, आप चुपचाप बैठे हैं? कहिये कुछ।

ओंकारनाथ—मनोरंजनजी, मैं आपलोगों के विचारों को ध्यानपूर्वक सुन रहा था। मैंने पाया कि आपलोग अभी कविता और कहानी में ही उलझे हुए हैं। इसलिये चुप ही रहना अच्छा समझा।

दरबारी—चुप रहने से तो काम नहीं चलेगा। कुछ बोलिये भी तो।

ओंकारनाथ—हाँ-हाँ, बोलूँगा ही, उसीके लिये तो बैठा हूँ। संयोजक महोदय ने 'ज्ञान-विज्ञान' शब्द का प्रयोग किया है। मेरे विचार से कविता और कहानी से केवल मनोरंजन हो सकता है। ज्ञान-विज्ञान को जानने के लिये अन्य पुस्तकों की भी आवश्यकता है।

मनोरंजन—शायद ओंकारजी मेरे विचार को एकांगी समझकर ऐसा कह रहे हैं। कविता की बात चलाते समय मुझे अन्य विषयों की पुस्तकों का ध्यान था।

ओंकारनाथ—नहीं ऐसी बात नहीं है। मैंने 'ज्ञान-विज्ञान' पर केवल जोर दिया है। ज्ञान-विज्ञान के लिये पुस्तकालय में विज्ञान, यात्रा, भूगोल, इतिहास, साहस-कथा तथा जीवन-चरित्र संबंधी पुस्तकों का रहना आवश्यक है।

दरबारी—ओंकारजी, आपने जीवन-चरित की चर्चा मौके पर की है। हमारे पुस्तकालय में देश-विदेश के महापुरुषों की जीवनियाँ रहनी चाहिये। जीवनियों से हमें बड़ी प्रेरणा मिलती है।

प्रभाकर—हिन्दी में यात्रा संबंधी पुस्तकें मुझे कम पढ़ने को मिली हैं।

ओंकारनाथ—प्रभाकरजी, आप यात्रासंबंधी पुस्तकों पर जोर दे रहे हैं, यह अच्छी बात है। लेकिन एक विषय और छूट रहा है। वह है शिकार संबंधी पुस्तकें। उनका भी संग्रह होना चाहिये।

प्रभाकर—अच्छी याद दिलाई आपने।

ओंकारनाथ—(अध्यक्ष के रूप में)—तो हमारे विचार से स्कूल-पुस्तकालय के लिये कविता और कहानी से अधिक विज्ञान, यात्रा, जीवनी, इतिहास, अर्थशास्त्र, भूगोल, समाजशास्त्र और शिकार संबंधी पुस्तकों की आवश्यकता है। आशा है, आपलोग हमारे विचार से सहमत होंगे।

मनोरंजन—हाँ, ओंकार जी।

अभ्यास

(१) विचार-गोष्ठी से क्या समझते हो ? इसकी क्यों आवश्यकता पड़ती है ?

(२) विचार-गोष्ठी में किन बातों पर ध्यान रखना चाहिये ?

(३) विचार-गोष्ठी की बातचीत के क्रम में संयोजक क्यों नहीं बोलता है ?

(४) नीचे लिखे विषयों पर विचार-गोष्ठियों में तुम्हें भाग लेना है। गोष्ठियों में तुम जिन विचारों को रक्खोगे उन्हें लिखकर दिखाओ—

१. अपने पुस्तकालय के लिये पत्र-पत्रिकाओं का मँगाना।

२. किसी मेले में बालचर-दल का जाना।

३. किसी महापुरुष की जयन्ती मनाने की तैयारी करना।

पाँचवाँ खंड

मध्यवर्गों के लिये पत्रिका

पत्र-पत्रिकाओं के भेद

पीछे दैनिक समाचारपत्र के बारे में बताया जा चुका है। यहाँ मासिक पत्र या पत्रिका किस तरह निकालनी चाहिये उसकी जानकारी दी जाती है। सभी स्थानों में छपाई की सुविधा नहीं है। इसलिये हस्तलिखित पत्रिका भी बड़े मजे में निकाली जा सकती है। इसके लिये एक प्रधान सम्पादक तथा दो-तीन अन्य सम्पादकों की आवश्यकता पड़ती है। यह पत्रिका के आकार-प्रकार पर निर्भर करता है।

मासिक पत्रिका के लिये तीस दिनों का समय मिलता है, जब कि दैनिक पत्र में २४ घण्टे से भी कम और साप्ताहिक में सात दिनों का समय रहता है। इसलिये इसमें काम उतनी तेजी से नहीं करना पड़ता।

दैनिक पत्र का मुख्य उद्देश्य प्रायः सभी ताजे समाचारों को प्रकाशित करना है। साप्ताहिक में सप्ताह भर की घटनाओं का संक्षिप्त संकलन किया जाता है तथा लेख, कहानियाँ और कविताएँ प्रकाशित की जाती हैं। पर, मासिक पत्रिका में ताजी घटना को महत्त्व न देकर स्थायी विषयों को महत्त्व देना पड़ता है। मासिक पत्रिका को अपने पाठकों की विभिन्न रुचियों का ख्याल करके तरह-तरह के लेख, कथा-कहानियाँ और नाटक इत्यादि पकाशित करने पड़ते हैं।

पत्रिका का सम्पादन

पत्रिका का संपादन सुयोग्य व्यक्ति को करना चाहिये जिसे रचनाओं को देखने और परखने का ज्ञान हो। वह पक्षपात न करे और उचित रचनाओं को उचित स्थान दे तथा सबों का सहयोग प्राप्त करे।

पत्रिका का आवरण मोटे तथा चिकने कागज का होना चाहिये, नहीं तो अनेक हाथों में जाने पर उसके भीतरी पृष्ठ गंदे हो जायँगे तथा फट भी जायँगे। प्रत्येक रचना के नीचे दाहिनी ओर लेखक का नाम और वर्ग लिखा रहना आवश्यक है। यदि कोई रचना किसी दूसरे पत्र या पत्रिका से उतारी गई हो तो उसका उल्लेख भी कर देना चाहिये, नहीं तो रचना चोरी की समझी जायगी। जैसे—'बालक' से उद्धृत या संकलित।

मासिक पत्रिका के सम्पादक को चाहिये कि वह नये लेखकों को ढूँढ़-ढूँढ़कर निकाले और उन्हें रचना तैयार करने के लिये उत्साहित करता रहे। ऐसा करने से सम्पादक के पास रचनाओं का ढेर लग जायगा और वह अच्छी रचनाओं को छाँटकर और सुधारकर प्रकाशित करेगा। इससे दो लाभ होंगे : पत्रिका के लिये रचनाओं की कमी नहीं रहेगी। दूसरे, अधिक रचनाओं में से अच्छी रचनाओं के चुनने में आसानी होगी।

पत्रिका की सजावट

आजकल पत्रिका के प्रत्येक अंक में चित्रों को देने का रिवाज हो गया है। इससे पाठकों का आकर्षण बढ़ता है और पत्रिका की सजावट बढ़ जाती है। साथ ही वह सचित्र रचना भी अधिक समझने योग्य हो जाती है। हस्तलिखित पत्रिका के लिये स्कूल के छात्र रचनाओं को पढ़कर, उनके भावों को हृदयंगम

-कर उसीके आधार पर चित्र बना सकते हैं। यों स्वतंत्र चित्रों के लिये भी पत्रिका में स्थान की कमी नहीं रहती। इसके अलावा रद्दी अखबारों के पुराने अंकों से तरह-तरह के चित्रों, रेखा-चित्रों को काटकर और उन्हें पत्रिका के पृष्ठों में साटकर पत्रिका की शोभा बढ़ाई जा सकती है। पत्रिका के लिये रचनाओं के लिखने का भार उन्हीं छात्रों को दिया जाय जिनकी लिखावट सुन्दर और सुडौल हो।

हमलोगों को कहानी, संवाद और नाटक के बारे में पीछे जानकारी मिल चुकी है। मासिक पत्रिका के लिये विभिन्न प्रकार के लेखों, संवादों, कहानियों, एकांकी नाटकों और कविताओं की जरूरत पड़ती है। केवल कविता को छोड़कर हमलोग उक्त चीजों की रचना कर सकते हैं। कविता लिखना भी धीरे-धीरे आता है। पर, यदि छात्र चाहें तो दो-चार पंक्तियों में तुकबन्दी करके पत्रिका में दें। कविताएँ छपी हुई पत्र-पत्रिकाओं से उद्धृत की जा सकती हैं। किन्तु, किसी पत्रिका से रचना चुराकर उसे अपने नाम से छपवाना बहुत बुरा काम है। प्रसंगवश यहाँ पत्र-रचना और निबन्ध-रचना की बात आ जाती है। पत्र-रचना के सम्बन्ध का ज्ञान पिछली कक्षाओं में हो चुका है। कुछ ऐसे पत्र होते हैं जो वास्तव में लेख ही रहते हैं। ऐसे लम्बे पत्रों, अनेक प्रकार के निबन्धों और आलोचनाओं के कुछ नमूने संक्षिप्त रूप में आगे दिये जाते हैं। सुविधा और सुरुचि के विचार से उन्हें अलग-अलग प्रकरणों में बाँट दिया गया है।

अभ्यास

(१) दैनिक, साप्ताहिक और मासिक-पत्रिकाओं में क्या भेद है ? प्रत्येक का उदाहरण दो।

(२) रचनाओं का संग्रह कैसे करना चाहिये ? नये लेखक कैसे तैयार किये जायेंगे ?
(३) सम्पादन और सम्पादक से क्या समझते हो ?
(४) पत्रिका का सम्पादन कैसे करना चाहिये ?
(५) पत्रिका की सजावट के लिये किन-किन बातों पर ध्यान रखना चाहिये ? समझाकर लिखो ।

पत्र-लेखन

लम्बे पत्रों के नमूने

जंगल में एक रात

भागलपुर,
४-१०-१९५०

मित्रवर,

नमस्कार ।

कल आपका पत्र मिला । बड़ी प्रसन्नता हुई । आपने मुझसे 'जंगल में एक रात कैसे बिताई ?' यह पूछा है । अच्छा, सुनिये—

एक दिन मैं अपने तीन साथियों के साथ जंगल में घूमने गया । हमलोग दोपहर को भोजन करके गये थे । जंगल में जाने का हमलोगों का यह पहला मौका था । इधर-उधर की चीजों को देखते हुए हमलोग जंगल में पहुँच गये । जंगल के पास तीन-चार घर बने थे । वहाँ के लोगों ने हमें चेतावनी दी कि तुमलोग जंगल में मत घुसो । दिन थोड़ा रह गया है । तुम्हें लौटते-लौटते देर हो जायगी । हमलोगों ने झट से कह दिया कि अभी बहुत समय है । हमलोग साँझ तक लौट आयेंगे । ऐसा कहकर हमलोग आगे बढ़े ।

जंगल में घुसकर हम फल-फूल देखते हुए आगे बढ़ते गये। देखने में हमलोग इतने तल्लीन हो गये कि हमें समय का कुछ अन्दाज ही न मिला। जब सूरज डूबने लगा तो मालूम हुआ कि साँझ हो रही है। हमलोग झटपट लौटने लगे। पर, जंगल में ही अँधेरा हो गया। हमलोग अँधेरे में इधर-उधर भटकते रहे। रास्ते का कुछ पता न लगा। तब विचार किया कि अब तो रात यहीं पर काटनी चाहिये। सोचा कि डालों की झोपड़ी तैयार करनी चाहिये।

हममें से दो जाकर डालें तोड़ने लगे। दो ने उन्हें लेकर झोपड़ी बनाना शुरू किया। किसी तरह डालें लगाकर एक झोपड़ी-सी बनाई। अब भूख लगी। जब हमलोग घूम रहे थे, तब हमने कुछ बेर तोड़कर रख लिये थे। उन्हें ही खाकर पास के नाले से हाथ-पैर धो आये। झोपड़ी एक बन्द स्थान में एक पेड़ से लगाकर बनाई थी। उसी पेड़ से टिक कर हम चारों बैठ गये और तरह-तरह की बातें करने लगे। अपनी-अपनी लाठियों को अपने पास रख लिया।

आपको जानकर खुशी होगी कि वहाँ जंगली जानवरों का डर नहीं था। फिर भी हमें नींद न आई। इस तरह बड़ी मुश्किल से रात बिताई। भोर होने के काफी पहले ही उठकर घूमने लगे। उजेला होते पर बड़ी देर में मार्ग मिला। प्रसन्न होते हुए हमलोग घर की ओर चले।

बस, आपके पूछने का उत्तर मैंने दे दिया। आप कृपाकर अपनी किसी रोचक घटना का हाल लिखिये।

आपका प्रिय मित्र—

सुमंगल प्रकाश

पटना नगर का वर्णन

पटना,
६-५-५१

स्नेहमयी माताजी,

चरणों में सादर प्रणाम।

मैं पिताजी के साथ भली-भाँति पहुँच गया। उनके साथ मैंने करीब सारे नगर को घूमकर देखा। जो कुछ मैंने देखा है, तुम्हें इस पत्र में लिख भेजता हूँ।

पटना शहर गंगा नदी के किनारे बसा है। यह शहर प्रायः नौ मील लम्बा और प्रायः एक-डेढ़ मील चौड़ा है। शहर की आबादी घनी है। सड़कें चौड़ी और साफ हैं। शहर में कई मुहल्ले और बाजार हैं। सचिवालय के आसपास अफसरों के बंगले हैं और गरदनीबाग में, सचिवालय में काम करनेवाले लोगों के क्वार्टर हैं। चिड़ैयाटाँड़, कदमकुआँ, बाकरगंज, नयाटोला, भिखना-पहाड़ी आदि मुहल्लों में घने मकान हैं। प्रायः दूकानें सभी जगह हैं, लेकिन स्टेशन, डाकबंगला रोड, कदमकुआँ, बाकरगंज और मुरादपुर में बड़ी-बड़ी दूकानें हैं जहाँ प्रायः सभी चीजें मिलती हैं और भरपूर मिलती हैं। पटना सिटी में किराना-मालों के बड़े-बड़े गोले हैं, वहीं से सामान लाकर छोटे-छोटे व्यापारी पटने में बेचते हैं।

यहाँ गंगानदी के किनारे का दृश्य देखने में बड़ा आनन्द आता है। स्टीमरें बराबर आती-जाती हैं। नदी में दर्जनों नावें पाल ताने चला करती हैं।

शहर में दो मुख्य धर्मशालाएँ हैं—एक कदमकुआँ में और दूसरी सब्जीबाग में बिड़ला मन्दिर के अहाते में।

यहाँ गुलजारबाग में पटनदेवी का मन्दिर, पटना सिटी में सिक्खों का गुरुद्वारा, स्टेशन के पास महावीरजी का मन्दिर और

मुरादपुर में राधाकृष्ण का मन्दिर है। दरभंगा कोठी में काली-मन्दिर है। सञ्जीबाग में विड़ला का वनवाया हुआ लक्ष्मीनारायण-मन्दिर है तथा और भी अनेक मन्दिर तथा देवस्थान हैं। ये सब हिन्दुओं के पूज्य स्थान हैं।

शहर में शिक्षा के लिये भरपूर प्रवन्ध है। प्रायः सभी विषयों के लिये अलग-अलग कालेज हैं। दो महिला-कालेज, कई हाई-स्कूल, शिक्षकों और शिक्षिकाओं के लिये ट्रेनिङ्ग कालेज तथा कई शिक्षा-संस्थाएँ हैं।

यहाँ देखने की तो बहुत-सी चीजें हैं, पर विहार सचिवालय भवन, अजायबघर, सिन्हा लाइब्रेरी, खुदावख्श खाँ लाइब्रेरी, गोलघर, गांधी मैदान और बिहार के राज्यपाल का भवन देखने योग्य हैं। यहाँ का अस्पताल बहुत बड़ा है। यहाँ सभा-सम्मेलन के लिये कई बड़े हॉल हैं जिनमें लेडी स्टीफेन्सन हॉल, अंजुमन इस्लामिया हॉल, ह्वीलर सिनेट हॉल तथा विहार प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का हॉल मुख्य हैं।

यहाँ के नगरनिगम का अच्छा प्रवन्ध है। यहाँ रोशनी का काफी प्रवन्ध है। तंग गलियों में भी रोशनी है।

हाँ, एक बात मैं भूल गया था। वह यह है कि यहाँ मच्छर महाराज की बड़ी कृपा है!

संक्षेप में इस शहर का वर्णन तुमको लिख दिया है। जब मैं तुम्हारी सेवा में आऊँगा, इसका विस्तृत वर्णन सुनाऊँगा।

दादी को प्रणाम कहना तथा सेवा और अंजना को आशीर्वाद कहना।

तुम्हारा बेटा—
मनोज

पहाड़ों की ओर

नयाटोला,
मुजफ्फरपुर,
१८ मई, १९५२

प्यारे रामू,

आशीर्वाद।

सुना है, तुम्हें कबड्डी खेलते समय काफी चोट आई है और तुम अस्पताल में पड़े हो! भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि तुम शीघ्र ही अच्छे हो जाओ।

भाई, जैसे ही तुम अच्छे हो जाओ, मेरे यहाँ चले आओ। हमलोग उसी समय सिक्कम जाने की तैयारी करेंगे—पिताजी ने मेरी विनती मान ली है। हमलोग पहले दार्जिलिंग जायँगे और फिर सिक्कम।

तुम शायद यह जानना चाहो कि सिक्कम में क्या है कि हमलोग वहाँ जायँ? इसका तो बहुत बड़ा वर्णन है, लेकिन मैं थोड़े में कहता हूँ।

सिक्कम सब तरह से सुन्दर है। हिमालय के चरणों पर है। यह हमारे लिये दूसरा काश्मीर है। तुम अपने मन में सुन्दर-से-सुन्दर भूमिखंड को बैठाओ—हरे-भरे पेड़ों की कल्पना करो, सुन्दर वन-प्रान्त की कल्पना करो, सुन्दर झरनों की और सुन्दर झीलों की कल्पना करो—यहाँ तक कि सुन्दर देश के सुन्दर सपने देखो। बस, यही सिक्कम है।

सिक्कम देखकर तुम्हारी आँखें जुड़ा जायँगी। सिक्कम हरदम हरा, नयनाभिराम है। वहाँ की वसन्त ऋतु अनुपम है। हमारे विश्वकवि रवीन्द्रनाथ वहाँ की शोभा पर लट्टू रहते थे।

हमारा स्वास्थ्यकर नगर दार्जिलिंग तिस्ता नदी की उपत्यका में है। यह समुद्र-तल से सात हजार फुट की ऊँचाई पर है। बस, यहाँ से सिक्कम का रास्ता ऊँचा-नीचा होता हुआ चला गया है। इस रास्ते की चढ़ाई पहले पाँच हजार फुट ऊँची, फिर चौदह हजार फुट ऊँची हो गई है।

तुमको अब सिक्कम का ध्यान बँध गया होगा। यदि मेरी बात रही; तुम आये, तो बड़ा आनन्द रहेगा। मौसे और मौसी को प्रणाम कहना। पत्र भेजो कि शीघ्र आते हो।

तुम्हारा कल्लू भैया,
कामेश्वर।

अभ्यास

(१) अपने पिता के पास एक पत्र लिखो जिसमें तुम्हारे स्कूल के किसी उत्सव का वर्णन हो।

(२) एक दिन तुम पोखरे में नहाते समय डूबते-डूबते कैसे बचे, इस बात का वर्णन करते हुए अपने बड़े भाई के पास एक पत्र लिखो।

(३) तुम्हारे स्कूल में बागबानी का क्या प्रबन्ध किया गया है। तुम्हें इसमें कौन-कौन काम मिले हैं, इसका वर्णन करते हुए अपनी बड़ी बहन को एक पत्र लिखो।

(४) तुम्हारे गाँव में एक महात्मा आये हैं, उनकी विशेषताओं की चर्चा करते हुए अपनी मौसी के पास एक पत्र लिखो।

निबन्ध-रचना

विषय-विभाग

लेखों या निबन्धों की रचना विभिन्न विषयों पर की जाती है। हमलोग अपनी आँखों के सामने जिन सजीव और निर्जीव पदार्थों को देखते हैं उन सभी पर निबन्ध लिख सकते हैं। निबन्धों के अनेक विभाग हो सकते हैं। जैसे—(१) वर्णनात्मक, (२) विवरणात्मक, (३) विचारात्मक, इत्यादि। फिर इनमें भी जीवन चरित, वैज्ञानिक आविष्कार आदि अनेक विषयों पर निबन्ध लिखे जाते हैं। लेखक के अध्ययन, मनन और भाषाज्ञान के ऊपर निबन्ध की अच्छाई निर्भर है। निबन्ध की भाषा बोलचाल की और सरल होनी चाहिये।

निबन्ध लिखने के कुछ नियम

१. जिस विषय पर निबन्ध लिखना हो उसके बारे में भली-भाँति विचार करके एक कागज पर संकेत-वाक्य लिख लेना चाहिये कि कौन-कौन-सी बातें किस क्रम से लिखनी हैं।

२. मुख्य-मुख्य बातों को अलग-अलग अनुच्छेदों में लिखा जाय।

३. भाषा का सिलसिला ठीक रखना चाहिये। कहीं पर कठिन शब्दों की और कहीं पर साधारण बोलचाल के शब्दों की भरमार न हो।

४. जिस विषय पर निबन्ध लिखना हो उसको छोड़कर और बातों पर ध्यान न चला जाय।

५. निबन्ध में एक ही बात को न दुहरावें।

६. अशुद्ध और व्यवहार में न आनेवाले शब्दों का उपयोग न हो।

७. अपनी बात को साफ ढंग से लिखने की सावधानी रक्खी जाय।

८. निबन्ध लिखते समय, समय का ध्यान रखना जरूरी है; नहीं तो निबन्ध अधूरा रह जायगा।

अभ्यास

(१) क्या संसार में जितने पदार्थ हैं उन सभी पर लेख लिखे जा सकते हैं? समझाओ।

(२) लेख कितने प्रकार के होते हैं? प्रत्येक का उदाहरण दो।

(३) लेख लिखने के लिये किन योग्यताओं की आवश्यकता होनी चाहिये?

(४) निबन्ध लिखने के नियमों को बताओ।

निबन्धों के नमूने

वर्णनात्मक लेख

भेड़

१. परिचय। २. प्राप्तिस्थान। ३. आकार। ४. गठन। ५. भेद तथा रंग। ६. स्वभाव। ७. लाभ। ८. उपसंहार।

१. भेड़ दूध पिलानेवाला और पागुर करनेवाला चौपाया है। इसके बच्चे को मेमना कहते हैं।

२. भेड़ संसार के उन देशों में, जहाँ हरे-भरे मैदान और चारागाहें हैं, पाई जाती है। भेड़ें भारत, यूरोप, दक्षिण अमेरिका और आस्ट्रेलिया में बहुत हैं।

३. इसका आकार बकरी से कुछ छोटा होता है। इसका सिर छोटा होता है। इसका सारा शरीर घने बालों से ढका हुआ रहता है। ऊन काट लेने पर बकरी की तरह छोटे-छोटे बाल

हो जाते हैं। इसके खुर फटे हुए होते हैं। इसके पैर पतले होते हैं तथा दो टेढ़े सींग होते हैं।

४. इसके शरीर का गठन मजबूत होता है। भेड़ देखने में सुन्दर होती है। पुरुष-भेड़ खूब अधिक मजबूत होते हैं। अपने शारीरिक गठन और मजबूती के कारण दो नर-भेड़ आपस में लड़ पड़ते हैं और छुड़ाने पर ही शान्त होते हैं।

५. भेड़ के कई भेद हैं। भारत में पाये जानेवाली भेड़ को देशी कहते हैं। इसके अलावा स्पेन, पुर्त्तगाल की मेरनो और दुम्बा हैं। भेड़ें भूरी, उजली, काली, तथा चितकबरी कई रंगों की होती हैं।

६. यह झुण्ड में रहनेवाला चौपाया है। यह सीधी तथा डरपोक होती है। यह घास-पात तथा कई प्रकार के अन्नों को खाती है। भेड़ों को भेड़ियाधसान प्रसिद्ध है। यदि एक भेड़ कुएँ में गिरे तो सब भेड़ें गिर पड़ेंगी। मादा भेड़ एक बार कई बच्चे देती है।

७. इसके रोएँ से आसनी, कम्बल आदि बनाये जाते हैं। भेड़ के गोबर से अच्छी खाद तैयार होती है। इसका मांस भी खाया जाता हैं।

८. भेड़ के मांस में शक्तिवर्द्धक तत्त्व मिलते हैं। भेड़ अधिक पालनी चाहिये, क्योंकि इसके रोएँ बड़े लाभदायक होते हैं।

कबूतर

१. सूरत-शकल और साधारण वर्णन। २. प्रकार तथा भेद। ३. स्वभाव। ४. उपकार। ५. उपसंहार।

सभी पालतू कबूतर जंगली कबूतरों के वंशज हैं। ये संसार के प्रायः गर्मस्थानों में पाये जाते हैं। इनमें पुरवी, लक्का, शीराजी, गिरहबाज, यामोज और गलफूला आदि मुख्य हैं। पुरवी का पीछे की ओर सिर हिलाना और दुम फैलाकर नाचना देखने योग्य होता है।

तेजी से उड़ने के लिये हमारे यहाँ का गिरहबाज कबूतर प्रसिद्ध है। यूरोप में एक तरह के कबूतर को चिट्ठी ले जाने का काम सिखाया जाता है। वे बहुत अधिक उड़ते हैं। उत्तरी अमेरिका में ऐसे कबूतर हैं जो देश-विदेश की सैर किया करते हैं। वे एक साथ लाखों की संख्या में आकाश में उड़ते हैं।

ऐसा झुण्ड यदि किसी जंगल में उतर जाता है तो वहाँ के पेड़-पौधों पर मानो पहाड़ टूट पड़ते हैं। बहुत पास-पास बैठने पर भी किसी-किसी झुण्ड के लिये तीस-पैंतीस मील लम्बी और चार-पाँच मील चौड़ी जगह की जरूरत होती है।

निकोबार द्वीप में एक प्रकार के कबूतर देखे जाते हैं। उनकी पीठ और डैनों का ऊपरी भाग बैगनी और हरे रंगों का मिला हुआ होता है। इन कबूतरों की गर्दन में चारों ओर से रोओं के गुच्छे निकले रहते हैं। ये पेरू पक्षी के आकार के होते हैं। मादा कबूतरी एक बार में एक ही अंडा देती है।

कबूतर का मांस खाया जाता है। इसके मल की दवा बनती है। कबूतर से हमलोगों को स्वावलम्बन और सहानुभूति की शिक्षा मिलती है।

उजला कबूतर शान्ति, अभिवृद्धि और स्वतंत्रता का प्रतीक माना जाता है। इसकी उपयोगिता प्रतिदिन बढ़ रही है।

मधुमक्खी

१. परिचय। २. प्राप्ति-स्थान। ३. आकार-प्रकार तथा काम। ४. स्वभाव। ५. लाभ।

१. चींटी की भाँति मधुमक्खी भी छोटा कीड़ा है। यह अंडे से पैदा होती है।

२. मधुमक्खियाँ वसन्त ऋतुवाले देशों में होती हैं। ये दीवारों और पेड़ों की डालों पर छत्ते बनाकर रहती हैं।

३. मधुमक्खियाँ सुन्दर और सुनहले रंग की होती हैं। ये तीन प्रकार की हैं। काम करनेवाली, रानी और मक्खा। काम करनेवाली मक्खियाँ दुबली और छोटी होती हैं। इनका काम मधु इकट्ठा करना, मोम बनाना, छत्ता तैयार करना, अंडों की खबरगिरी करना और बच्चों की सेवा करना है। रानी मक्खी लम्बी होती है और दिन-भर अंडे देती है। मक्खा थोड़ा मोटा-ताजा होता है। एक छत्ते में प्रायः डेढ़-दो हजार मक्खे होते हैं। ये छत्ते के मालिक कहलाते हैं।

४. मधुमक्खियाँ हरदम परिश्रम करती रहती हैं। ये मिलकर काम करती हैं और शत्रु पर एक ही बार हमला करती हैं। ये वसन्त और गर्मी में मधु जमा करती हैं और वर्षा तथा जाड़े में आनन्द से खाती हैं।

५. मधु पुष्टिकर और मीठी चीज है। यह दवाओं में पड़ता है। मधुमक्खियों से हमें मोम मिलता है जिससे कई चीजें बनती

है। मधुमक्खियों से हम रहन-सहन, मिलनसारी, परिश्रम, चतुराई और अग्रसोची होना सीखते हैं।

आजकल काठ के बने खास तरह के बक्सों में बारहों महीने मधुमक्खी का पालन किया जाता है। ग्राम-उद्योग के लिये मधु-मक्खी पालन एक उपयोगी और लाभदायक साधन है। इस दिशा में काफी उन्नति होनी चाहिये।

केला

संकेत—

१. परिचय—डालरहित, केवल छिलकों और पत्तोंवाला पौधा। २. प्राप्तिस्थान—भारत तथा अन्य गर्म देश। ३. उपजना—बड़े पौधे की जड़ के पास से कोंपल लेकर अलग रोपना। ४. आकार—१०-१२ फुट ऊँचा; ४-५ फुट लम्बा और प्रायः ३ फुट चौड़ा ...ना—तैयार पेड़ के सिरे से लम्बा-सा फलों का गुच्छा निकलना, घौद में फलों के कई गुच्छे, गुच्छे का नाम हत्था, केले के कई प्रकार—चिनिया, मोहनभोग, भोस, बतीसा, इत्यादि—पत्ते से थाली का काम, कच्चे केले की तरकारी, आटा, पकने पर मीठा, फलाहार, उत्सव और पर्व में केले के थंभों का व्यवहार।

गंगा नदी

संकेत—

१. परिचय। २. उत्पत्ति। ३. विस्तार तथा धारा। ४. सहायक नदियाँ। ५. किनारे पर के नगर। ६. उपकार। ७. अपकार। ८. उपसंहार।

१. गंगा नदी भारत की बड़ी नदियों में से एक। सभी नदियों से अधिक उपकारी। हिन्दू का, माता के नाम से पुकारना।

२. हिमालय पर्वत की गंगोत्री से। पुराणों में, भगवान् के चरणों से। राजा भगीरथ की तपस्या से।

३. पहाड़ी प्रदेश में बहुत सी छोटी-छोटी धाराओं के रूप में तीव्रगति से बहनेवाली। हरिद्वार के बाद समतल भूमि में बहनेवाली। आगे चलकर बहुत चौड़ा पाट। धारा धीमी। जल अथाह।

४. सहायक नदियों में यमुना, गोमती, सरयू, सोन, गंडक, कोशी मुख्य।

५. किनारे पर हरिद्वार, प्रयाग, काशी आदि तीर्थस्थान। कानपुर, गाजीपुर, पटना, भागलपुर आदि मुख्य शहर।

५. जल पीने के लिये शुद्ध। निकाली गई नहरों से खेत की सिंचाई। नावों और स्टीमरों के द्वारा व्यापार। मछलियों का रोजगार।

७. बाढ़। धन, जन तथा उपज नष्ट। चारो ओर त्राहि-त्राहि।

८. गंगाजल में कीड़े नहीं। जल में कीटाणुओं को नाश करने की अद्भुत क्षमता। जो संसार के किसी स्थान के जल में नहीं। गंगानदी बड़ी पवित्र नदी। देवनदी भी। प्रतिदिन स्नान करने से चर्मरोग नहीं। अन्य बीमारियाँ भी जल्दी नहीं। गंगा-स्नान बहुत पुण्य-कार्य।

धोबी का कपड़ा धोना।

संकेत—

घर-घर जाकर मैले कपड़े लाना, सबको सोडे, साबुन में भिंगोकर रखना, भट्ठी बोझना, सवेरे गधे पर लादकर घाट पर जाना। पानी से भिंगो-भिंगोकर साफ करना, धूप में पसारकर सुखाना, तह लगाना, गधे पर लादकर अपने घर लाना, दिन

बीते भोजन करना, कलप-इस्त्री करना, उन कपड़ों को घर-घर पहुँचाना, धुलाई का हिसाब करना। समाज का बड़ा उपयोगी काम, कपड़ा धोना हेय कार्य नहीं, कपड़ा धोना एक विशेष देश-कार्य।

हमारा स्कूल

संकेत—

१. स्थिति। २. घर। ३. प्रबन्ध। ४. शिक्षक। ५. विद्यार्थी। ६. पढ़ाई। ७. खेल-कूद। ८. पुस्तकालय। ९. उपसंहार।

१. शहर से दूर, खुले मैदान में, आपके बगीचे के निकट।

२. पक्का बना हुआ, कोठरियाँ, बनावट, कुँआ या नल-कूप, शुद्ध हवा तथा रोशनी आने योग्य।

३. बोर्ड, सरकारी, अर्द्धसरकारी या प्रबन्ध-समिति, जनता की सहायता और सहानुभूति।

४. शिक्षकों की संख्या, उनकी योग्यताएँ, विद्यार्थियों के साथ उनका व्यवहार।

५. छात्रों की संख्या, आपस में प्रेम भाव, छात्रों का शिक्षकों के साथ बर्ताव।

८. कहाँ तक की शिक्षा। पढ़ाने की सुविधा के लिये कौन-कौन साधन। कितने लड़के पास करना।

७. मैदान, खेल में छात्रों के साथ शिक्षकों का भाग लेना, खेलों के साधन, खेल में चोट लग जाने पर प्राथमिक चिकित्सा का प्रबन्ध।

८. किन-किन विषयों की पुस्तकें। पुस्तकों की कुल संख्या। पुस्तक ले जाने और लौटा लाने की व्यवस्था।

६. शिक्षकों का स्वभाव, स्कूल में समय-समय पर होने वाले मनोरंजन के कार्य, अधिकारियों और जनता का स्कूल के प्रति विचार।

दुर्गापूजा

संकेत—

१. परिचय—आश्विन शुक्लपक्ष दशमी। २. कारण—राम का लंका-प्रस्थान, विजय प्राप्त करके आना। ३. उत्सवविधि—रामलीला की रचना, प्रतिपदा से नवमी तक पवित्रता एवं संयम के साथ रहकर रामायण आदि का पाठ करना, नये वस्त्र पहनना, कलकत्ते की दुर्गापूजा और मैसूर का जुलूस प्रसिद्ध, सरकारी और अन्य संस्थाओं की छुट्टी, दुर्गा जी की मूर्त्ति बनाना, उनकी पूजा, नगर भर घूमना और विसर्जन। ४. उद्देश्य—रामचन्द्र का चरित्र जनता के सामने रखकर उनके आदर्श गुणों का पाठ पढ़ाना। ५. उपसंहार—दशमी यात्रा या किसी शुभ कार्य के आरम्भ करने का दिन, आपस में एक दूसरे से मिलने-जुलने का बढ़िया अवसर, नीलकंठ के दर्शन।

हरिहरक्षेत्र का मेला

संकेत—

१. स्थान—सोनपुर (सारन जिला, गंडक और गंगा के संगम पर) २. समय—कार्तिक की पूर्णिमा के दो-तीन दिन पहले से १५-२० दिनों तक। ३. विवरण—पूर्णिमा के दिन यात्रियों का गंगा और गंडक स्नान, हरिहरनाथ के दर्शन, भारत में सबसे बड़ा मेला, देशभर के सौदागर, दूकानों की सजावट, आसपास के

मकानों का अधिक किराया, हाथी, घोड़े, गाय, बैल, देशी-विदेशी चीजें, पंछी, साधु-महात्मा, संस्थाएँ और सभाएँ, खेल-सरकस, सेवा-समिति और पुलिस के काम, लोगों के रहने का प्रबन्ध, पानी पड़ने पर लोगों की दुर्दशा, बीमारियों का फूट पड़ना। ४—मेले का उद्देश्य—मेल-मिलाप, आजकल की दुर्गति। ५. उपसंहार—रेलगाड़ियों की कमी से गाड़ियों में भीड़ और धक्का, विशेष रेलगाड़ियाँ, मेले की भूमि से आमदनी, मेला उठना।

नाव का सफर

संकेत—

तिथि, संगी-साथी, तैयारी, घाट, नाव और मल्लाह, खेना, जल और थल के दृश्यों के वर्णन, कौतूहल, संगीत, किनारे या बालू पर जलपान की तैयारी, उपसंहार।

अगलग्गी

संकेत—

कहाँ आग लगी, कब, कारण, बुझाने का प्रबन्ध, देहात में विशेष हानि, शहर में, दमकल चौबीसों घंटे तैयार, हानि का विवरण, लोगों पर इस आग का असर, समाचारपत्रों में खबर, सरकारी सहायता, कोई विशेष बात।

नमक

संकेत—

१. परिचय—प्रिय पदार्थ, घर-घर में पहुँच, भोजन का स्वाद।
२. प्रकार—अबुज और खनिज नमक। पहला—समुद्र और

झील का पानी औटाकर, दूसरा—खानों से। ३. भेद—बोट, खड़िया, सेंधा, इत्यादि। ४. उपकार—सबसे अधिक महत्त्व-पूर्ण रस, तरकारियों में नमक, पाचन, दवा के काम में। ५. उपसंहार—महात्मा गाँधी का नमक-सत्याग्रह ! यहाँ की नोनिया जाति।

भूदान-यज्ञ

संकेत—

(१) भूमिका, (२) आरम्भ, (३) मुख्य सिद्धान्त, (४) विनोबाजी का तरीका, (५) सत्याग्रह और अहिंसा (६) ग्राम-स्वराज्य, (७) सर्वस्व-दान, (८) उपसंहार।

१. हमारा देश गरीब है। हमारे देश की आबादी बराबर बढ़ रही है। यह एक समस्या है। इससे भी बड़ी समस्या भूमि के असमान बँटवारे की है। कुछ लोगों के पास आवश्यकता से अधिक भूमि है, कुछ के पास एकदम नहीं है। इसलिये भूमि-हीन लोगों का मन उदास है। इसी कारण मनुष्य-मनुष्य के बीच एक लम्बी दूरी बन गई है। इस दूरी को कैसे दूर किया जाय ?

२. जब विनोबाजी तेलंगाना की ऐतिहासिक पैदल-यात्रा कर रहे थे, तब उन्होंने इस समस्या का हल निकाला। एक दिन हरिजनों की माँग पर उन्होंने गाँववालों से भूमि-दान की बात कही। गाँववालों ने उनकी बात मान ली और उन्हें पहला भूमि-दान मिला। वह १८ अप्रैल, १९५१ का चिरस्मरणीय दिन था। उसके बाद विनोबाजी को भूमि-दान-यज्ञ की कल्पना सूझी। उन्होंने अपने तेलंगाना-भ्रमण में इसे आजमाया। केवल दो महीने

में बारह हजार एकड़ जमीन मिल गई। इसका प्रभाव सारे देश पर पड़ा। तब से विनोबाजी पैदल घर-घर और गाँव-गाँव घूम-कर भूमि का दान माँग रहे हैं। विनोबाजी के साथ अन्य कार्य-कर्त्ता भी काम कर रहे हैं जिनमें प्रसिद्ध जनसेवी देशमान्य श्री जय-प्रकाश नारायण मुख्य हैं। अब भूदान-यज्ञ का काम सारे देश में हो रहा है।

३. भूदान-यज्ञ के दो मुख्य सिद्धांत हैं। एक यह कि सभी भूमि भगवान् की है और जितनी सम्पत्ति है वह भी उन्हीं की है। जो व्यक्ति अपने शरीर को भोजन देता है उसे अवश्य काम करना चाहिये। भारतवर्ष में ऐसा कोई भी व्यक्ति न रहे जिसके पास थोड़ी जमीन भी न हो। और, प्रत्येक व्यक्ति जो खाता-पीता है, काम करने योग्य है, उसे कम-से-कम चार घंटे प्रतिदिन काम करना चाहिये।

४. भूमिदान माँगने का विनोबाजी का तरीका सर्वथा मौलिक है। वे दया की भीख नहीं माँगते। वे दान देनेवालों से अपने उपहार को समय की माँग समझकर देने को कहते हैं। जमीन माँगते समय वे कहते है कि यदि आप परिवार में पाँच भाई हैं तो एक और छठा मुझे मान लीजिये। चार हों तो पाँचवाँ। वे कहा करते है कि मेरी भूख बहुत कम है। पर, दरिद्रनारायण को भूख बहुत ज्यादा है। इसलिये दरिद्रनारायण की भूख मिटाने के लिये मुझे पाँच करोड़ एकड़ जमीन की जरूरत है। विनोबाजी 'दान' शब्द का प्रयोग 'बराबर बँटवारा'—इस अर्थ में करते हैं। उनका कहना है कि जिसको जमीन मिलेगी वह मुफ्त खानेवाला नहीं है। वह जमीन पर मेहनत करेगा, अपना पसीना उसमें मिलायगा, तब खा सकेगा। इसलिये उसे दीन बनने का कारण

नहीं है। उसका अपना अधिकार हम उसे दिला रहे हैं। अतः हम विनय से, प्रेम से और वस्तुस्थिति समझकर माँगते हैं।

५. अपने उद्देश्य की पूर्त्ति के लिये विनोबाजी ने सत्याग्रह और अहिंसा का मार्ग अपनाया है। उनका विश्वास है कि प्रत्येक मनुष्य में दूसरे के प्रति प्रेम और त्याग की भावना है। कोई मनुष्य बुरा नहीं है। महात्मा गांधीजी ने जिस सत्याग्रह और अहिंसा को राजनीति में अपनाया था, विनोबाजी ने उसे सामाजिक क्षेत्र में अपनाया है। विनोबाजी एक सफल सत्याग्रही रह चुके हैं।

६. भूदान-यज्ञ का उद्देश्य केवल यहाँ-वहाँ जमीन लेकर उन्हें भूमिहीनों में बाँटकर छुट्टी पाना नहीं है। इसका सबसे बड़ा उद्देश्य ग्राम-राज्य की स्थापना है। छठा हिस्सा ज़मीन प्राप्त करना भूदान-यज्ञ का सबसे छोटा अंश है। जिन्हें जमीन दी जायगी, उन्हें काम के लिये साधन-सामग्री भी दिलानी होगी। उन्हें जमीन पर स्थिर करना होगा। केवल जमीन पा जाने से उनके और काम नहीं चलेंगे। जिन गाँवों में ज़मीन मिलेगी, उन गाँवों में खादी, ग्रामोद्योग, नई तालीम के द्वारा ग्राम-राज्य की स्थापना करनी होगी। आवश्यकता पड़ने पर नये सिरे से गाँव बसाये जायँगे। इस कार्य में सबका सहयोग अपेक्षित है। ग्राम-राज्य की स्थापना से लोग आत्मनिर्भर और स्वावलम्बन के पाठ सीखेंगे।

७. भूदान-यज्ञ के आगे का काम सम्पत्ति-दान-यज्ञ के बिना पूरा नहीं होगा। इसलिये विनोबाजी सम्पत्ति-दान भी चाहते हैं। जो सम्पत्ति देगा, उसके निर्देशानुसार उसका व्यवहार होगा। निश्चित की हुई रकम सम्पत्तिदान में जीवनभर देने की व्यवस्था

करनी होगी। विनोबाजी इस ओर अभी पूर्ण रूप से अग्रसर नहीं हुए हैं। जिनपर उनका विश्वास है उसीका सम्पत्ति-दान वे स्वीकार करते हैं। विनोबाजी चाहते हैं कि लोग इस यज्ञ के लिये सर्वस्व-दान कर दें। बोधगया सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर जब उन्होंने जीवन-दान का व्याख्यान किया तो श्री जयप्रकाशनारायण ने सर्वप्रथम अपना जीवनदान कर दिया। इसके पश्चात् स्वयं विनोबाजी ने भी अपना समस्त जीवन न्योछावर कर दिया। विनोबाजी श्रम-दान भी माँगते हैं। जिनके पास कुछ नहीं है वे श्रम-दान देते हैं। जो एकदम गरीब हैं उनका भी दान स्वीकार किया जाता है।

८. भूदान-यज्ञ क्रांतियों की क्रांति है। ऐसा आन्दोलन संसार में कहीं नहीं देखा गया। इसके द्वारा भारत की गरीबी दूर होगी और बेकार लोगों को काम मिलेगा। हम इस अनुष्ठान की सफलता चाहते हैं।

विवरणात्मक लेख
बुद्धदेव

जन्म तथा वंश—भगवान् बुद्ध का जन्म ईसा के जन्म के २५७ वर्ष पूर्व कपिलवस्तु नगर में हुआ था। वे शाक्य वंश के राजा शुद्धोदन के पुत्र थे। उनकी माता का नाम मायादेवी था। उनका पहला नाम सिद्धार्थ था। पीछे वे बुद्धदेव के नाम से प्रसिद्ध हुए।

लड़कपन और शिक्षा—लड़कपन से ही उनका मन संसार से हटने लगा था। बचपन में वे बहुत नम्र, विनयी तथा दयालु थे। आगे चलकर तो सभी गुणों से पूर्ण हो ही गये। अहिंसा

की ओर उनका आरम्भ से ही विशेष झुकाव रहा। सिद्धार्थ राजकुमार थे। एक राजकुमार के समान उनकी शिक्षा-दीक्षा हुई थी। उनका मन संसार से अलग देखकर उनके पिता डर गये कि कहीं वे वैरागी न हो जायँ। इसलिये यशोधरा नामक एक सुन्दर कन्या से उनका विवाह कर दिया। कुछ समय के बाद इन्हें राहुल नामक एक पुत्र हुआ।

वैराग्य तथा ज्ञान-प्राप्ति—संसार में सर्वत्र रोग, शोक, दुःख, क्लेश आदि देखकर इनको संसार से विरक्ति होने लगी। अतः, २९ वर्ष की आयु में सभी कुछ त्यागकर रात्रि में घर से निकल पड़े। वैशाली, राजगृह, उरुविल्ल आदि स्थानों के भ्रमण और शास्त्रों के अध्ययन करने पर भी उनके मन को शान्ति नहीं मिली। तब गया के समीप एक पीपल के वृक्ष के नीचे छः वर्षों तक कठोर तपस्या की। वहीं पर उनके हृदय में ज्ञान का उदय हुआ और मन को शान्ति मिली।

धर्म प्रचार और निर्वाण—संसार के मनुष्यों को शोक, क्लेश, जन्म-मरण आदि से छुड़ाने के लिये एक नये धर्म का प्रचार किया जिसका मुख्य उपदेश सत्य, अहिंसा और दया है। उनके धर्म का प्रचार खूब जोरों से हुआ। ८० वर्ष की अवस्था में कुशीनगर में उनका निर्वाण हो गया। बोधगया, कुशीनगर, कपिलवस्तु आदि स्थान बौद्धों के तीर्थस्थान हो गये। आजकल बौद्धधर्म के माननेवाले चीन, बर्मा, जापान, तिब्बत, लंका आदि देशों में हैं। भारत में भी बौद्धधर्म के कुछ अनुयायी हैं।

डा० सच्चिदानन्द सिन्हा

जन्म और शिक्षा—डा० सच्चिदानन्द सिन्हा का जन्म १० नवम्बर, सन् १८७१ ई० को विहार के आरे में हुआ था।

उनके परिवार का निवास-स्थान शाहाबाद जिले के मुरार नामक गाँव में था। पाँच वर्ष की अवस्था में वे एक मकतब में बैठाये गये और दो ही वर्ष बाद 'आरा जिला स्कूल' में भरती हो गये। वे काफी तेज थे और मन लगाकर पढ़ते थे। इसलिये उनका स्थान कक्षा में बराबर प्रथम रहता था। सन् १८८८ ई० में पटना के टी० के० घोष एकेडमी से प्रवेशिका परीक्षा पास कर वे पटना कालेज में भरती हुए। फिर कलकत्ता जाकर सिटी कालेज में पढ़ने लगे। पर, उनकी इच्छा विदेश जाकर शिक्षा प्राप्त करने की थी। उनकी मनोकामना पूरी हुई। वे इंगलैंड गये और वहाँ १६ जनवरी, १८६३ ई० को उन्हें बैरिस्टर की उपाधि मिली और शीघ्र ही वे भारत लौट आये

बैरिस्टर और पत्रकार—सन् १८६३ ई० के मई महीने में उन्होंने पटने में ही बैरिस्टरी शुरू की। सन १८६४ ई० की जनवरी में 'बिहार टाइम्स' नामक एक पत्र निकाला। इसका उद्देश्य बिहार में राष्ट्रीयता का प्रचार करना था। कुछ दिनों के बाद वे इलाहाबाद चले गये और बैरिस्टरी करने लगे। वे कायस्थ पाठशाला के अवैतनिक मंत्री और 'हिन्दुस्तान-रिव्यू' के सम्पादक हो गये। फिर 'इंडियन पीपुल' और 'लीडर' का सम्पादन किया। 'लीडर' अभीतक प्रकाशित हो रहा है और भारत के मुख्य पत्रों में से एक है। वे अपने जीवन के अन्तः काल तक 'हिन्दुस्तान रिव्यू' के सम्पादक थे।

सार्वजनिक कार्य—अबतक बिहार का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था। यह बंगाल के साथ था। बिहार को एक अलग प्रान्त बनाने के लिये उन्होंने अनेक प्रमुख व्यक्तियों के सहयोग से आंदोलन शुरू किया। उनको सफलता मिली। बिहार एक अलग प्रान्त हो गया। १९०६ ई० में भागलपुर में होनेवाले

बिहार प्रान्तीय राजनीतिक सम्मेलन के वे सभापति हुए। इस सभा में गोपालकृष्ण गोखले भी पधारे थे। १९१० ई० में उन्होंने बिहारी-छात्र-संघ और १९१२ में उत्तर प्रदेश सम्मेलन का सभापतित्व ग्रहण किया।

जन-सेवा के पुरस्कार स्वरूप जनता और सरकार ने उन्हें अनेक सम्मानित पदों पर बैठाया।

विशेषता—वे अत्यन्त ही अध्ययनशील और उदार थे। अपने लेखों और भाषणों के द्वारा उन्होंने भारतीयों के बीच राष्ट्रीयता का प्रचार करने के लिये जो प्रयत्न किया, वह स्तुत्य है। उन्होंने पटने में एक वृहत् पुस्तकालय की स्थापना की जो आज उनकी कीर्त्ति गा रहा है। भारतीय संविधान परिषद् के सभापति के निर्वाचन होने के पूर्व उन्होंने संविधान परिषद् के अध्यक्ष-पद को सुशोभित किया था।

मृत्यु—६ मार्च, १९५० ई० को उनका देहावसान हो गया। उनकी मृत्यु पर देशभर के नेताओं, महापुरुषों ने शोक संदेश भेजे थे।

विचारात्मक लेख

सचाई

१. प्रारम्भ। २. झूठ बोलने से हानि। ३. सत्य से लाभ। ४. सत्यकथन। ५. उपसंहार।

१. जिस चीज की जैसी जानकारी हो उसको ठीक-ठीक उसी तरह कहने का नाम 'सचाई' है।

२. झूठ बोलने से विश्वास उठ जाता है। यदि सबलोग झूठ बोलने लगें तो देश के सभी काम बंद हो जायँ। एक झूठ को छिपाने के लिये बीसियों झूठी बातें बनानी पड़ती हैं। झूठा चोरी आदि दूसरे बुरे काम की ओर झुकने लगता है।

३. सचाई मुँह की शोभा है। जो साँच बोलता है, उसका मन पवित्र हो जाता है। यदि कभी सच्चे का मन किसी बुरे काम की ओर जाय तो उसे यह खटका लगा रहेगा की कहीं कोई पूछ बैठा तो मुझे सच-सच कहना पड़ेगा। बस, यह ध्यान में आते ही वह उस काम से जरूर हट जायगा।

४. सत्य रहने पर भी अप्रिय बात बोलना उचित नहीं। यदि हमारे पास कोई एक आँख वाला मनुष्य आवे और उसको हम 'कनहू भाई' कहकर पुकारें तो उसका मन दुख जायगा।

५. यदि हम चाहते हैं कि सदा सच बोलें तो हमें चाहिये कि ईश्वर पर विश्वास करें, उसे सदा अपने समीप समझें; क्योंकि सब जगह ईश्वर का वास है। ईश्वर झूठे को समय पर अवश्य दंड देगा। जो ईश्वर से डरते हैं वे कभी नहीं झूठ बोलते।

परिश्रम

संकेत—

परिभाषा, परिश्रम की आवश्यकता, परिश्रम के भेद—शारीरिक, मानसिक, प्रत्येक से लाभ, शारीरिक परिश्रम करने की रीति, मानसिक परिश्रम करने की रीति, अधिक और अनियमित परिश्रम करने से हानि, विशेष बात।

ज्ञान प्राप्त करना

संकेत—

१. ज्ञान का प्रभाव—ज्ञान प्राप्त करना, मनुष्यत्व प्राप्ति, उन्नति-लाभ का एकमात्र उपाय, पशु और मनुष्य में भेद, प्रभुत्व

प्राप्ति, आंदर-मान। २. ज्ञान प्राप्त करने के उपाय—परिश्रम, अध्यवसाय, चिन्तनशीलता, सुसंग। ३. ज्ञानी और मूर्ख में भेद—ज्ञानी नम्र और अहंकार रहित, मूर्ख उद्धत और अहंकारी।

अभ्यास

(१) नीचे लिखे विषयों पर निबन्ध लिखो—
गाय, भैंस, बकरी, कुत्ता, बिल्ली, कौआ, कोयल, तितली, चींटी, छिपकिली।

(२) नीचे लिखे विषयों पर लेख लिखो—
ऊख, बाँस, फूल, धान, बड़ का पेड़।

(३) नीचे लिखे विषयों पर लेख लिखो—
सोना, लोहा, पत्थर का कोयला।

(४) इन विषयों पर लेख लिखो—
हिमालय पर विजय, दीवाली, कुम्भ मेला और ग्राम पाठशाला।

(५) अशोक की महिमा, जहाँगीर का न्याय, कुँवर सिंह की वीरता—इनपर एक-एक ऐतिहासिक लेख लिखो।

(६) जीवन-चरित लिखो।
महात्मा गांधी, सरदार पटेल, जवाहरलाल नेहरू, मदनमोहन मालवीय, डा० राजेन्द्र प्रसाद और महावीर प्रसाद द्विवेदी।

(७) यदि तुमने कहीं की यात्रा की हो तो उसका वर्णन करो।

(८) यदि तुमने किसी प्रकार की दुर्घटना होते देखी है तो उसका वर्णन करो।

(९) मोटरगाड़ी, रेलगाड़ी और समाचार पत्र पर एक-एक लेख लिखो।

(१०) व्यापार, समय, एकता और धर्म पर एक-एक लेख लिखो।

थोड़े से और लेख

लोहा

१ परिचय । २. प्राप्ति-स्थान । ३. आकार-प्रकार । ४. लाभ ।

१. ऐसा कोई भी घर नहीं है, जहाँ लोहे का एक टुकड़ा न हो । यह हमारे काम की चीज है । लोहा कठिन और धूसर वर्ण का होता है । लोहे में मुर्चा भी लग जाता है ।

२. बिहार के दक्खिन भाग और उड़ीसे के जिलों में लोहा खूब मिलता है । वहाँ के लोहे पर प्रायः 'ताता कम्पनी' का अधिकार है । बोकारो में भी लोहे का बड़ा कारखाना खुल रहा है ।

३. खान में लोहा दूसरी-दूसरी चीजों में मिला रहता है । लोग इसे आग की आँच से गला कर निकालते हैं ।

खान से जो लोहा गला कर निकालते हैं वह गलाया हुआ लोहा कहलाता है । गलाये हुए लोहे को फिर गला कर साफ करते हैं और पीट कर पीटा हुआ लोहा बनाते हैं । पीटे हुए लोहे को अधिक समय तक गर्म करके जल या तेल में डुबो कर 'इस्पात' बनाते हैं । इस प्रकार लोहे के तीन भेद हुए—'गलाया हुआ लोहा, पीटा हुआ लोहा, और इस्पात' ।

४. गलाये हुए लोहे से कड़ाह, पहिये, बटखरे, शहतीर इत्यादि ढलुवे पदार्थ ; पीटे हुए लोहे से काँटे, तार, खेती करने के औजार इत्यादि और इस्पात से चाकू, तलवार इत्यादि तरह-तरह की चीजें बनती हैं ।

सूई से लेकर जहाज तक सभी चीजें लोहे की बनी हैं ।

सभ्य-समाज की जान लोहा है। लड़ाई की जान लोहा है। शिल्प और व्यापार की जान लोहा है। रेल, जहाज, तार, सभी जगह लोहा है।

'लोहा' दवा के काम में भी आता है।

पत्थर का कोयला

१. परिचय। २. प्राप्ति-स्थान। ३. कोयला क्या है? ४. खान खोदना। ५. लाभ।

१. हमारी ईंटें पत्थर के कोयले से पकाई गई हैं। कोयला खनिज पदार्थ है।

हमारे देश में रानीगंज, आसनसोल, गिरिडीह और छोटानागपुर के कई स्थानों में कोयले की बहुत खान है।

३. विद्वानों को जाँच से मालूम हुआ है कि भूकम्प इत्यादि के कारण बहुत से जंगल नीचे धस गये हैं। उन्हीं जंगलों के पौधे अब कोयले होकर निकल रहे हैं। कहीं-कहीं जीव-जन्तुओं का कोयला भी निकलता है।

४. जब जाँच से पता लग जाता है कि अमुक स्थान में कोयला है तब खुदाई शुरू होती है। सुरंगें खोदकर सड़कें तैयार की जाती हैं। जगह-जगह पर चढ़ने-उतरने के लिये सीढ़ियाँ बनाई जाती हैं। पानी निकाल फेंकने के लिये खाइयाँ तैयार की जाती हैं। जिसमें भूमि धस न जाय, इसके लिये बीच-बीच में कोयले के खम्भे छोड़ दिये जाते हैं। खान में एक तरह का दीप जलाया जाता है जिससे खान में आग न लगने पावे। इसी प्रकार और बहुत-से उपाय किये जाते हैं।

५. कोयले से देश को बहुत ही उपकार हो रहे हैं। जहाज, रेलगाड़ी और कल-कारखाने सभी कोयले से चलते हैं। बहुत-सी जगहों में कोयले की आग से रसोई भी बनाई जाती है।

इतनी मिहनत से निकालने पर भी कोयला बहुत ही सस्ता बिकता है।

डाकघर

१. परिचय । २. प्रबन्ध का इतिहास । ३. लाभ । ४. डाकपिउन । ५. उपसंहार ।

१. हमारे भारत में छोटे-बड़े सभी शहरों में और देहातों में दो-दो तीन-तीन मीलों पर डाकघर हैं। डाक का प्रबन्ध सरकार-द्वारा, हमलोगों का किया हुआ है। आजकल हमलोगों में से कई तो बाहर रहते हैं, जिन्हें अपने घर समाचार भेजने होते हैं। या, घरवाले बाहर रहनेवाले के पास समाचार भेजते हैं। हमलोगों को बहुत-सी जरूरी चीजें बाहर से मँगानी पड़ती हैं। डाक-द्वारा ही हमारे ये सब काम हो रहे हैं।

२. भारत में कब से डाक का प्रबन्ध है, नहीं मालूम; परन्तु शेरशाह के समय में घोड़े पर डाक जाती थी। उस समय खर्च बहुत पड़ता था और समय भी निश्चित न था। आजकल का नया प्रबन्ध 'लार्ड डलहौसी' के समय से आरम्भ होता है। आजकल दौड़ाहे, घोड़ागाड़ी, हवागाड़ी, रेलगाड़ी और हवाई जहाज से डाक जाती है।

३. पाँच नये पैसे का कार्ड खरीदिये, उसपर समाचार लिखिये और पता लिखकर डब्बे में गिरा दीजिये। वह कार्ड

भारत में जहाँ चाहिये, पहुँच जायगा। अधिक समाचार लिखना हो तो तेरह नये पैसे का लिफाफा खरीदिये। यदि रुपया भेजना हो तो मनीआर्डर फार्म को भरकर फीस के साथ रुपया डाकघर में देकर रसीद ले लीजिये और घर बैठिये, रुपया पानेवाला रुपया पा जायगा। इसी प्रकार पार्सल से चीजें भेज सकते हैं। रजिस्ट्री लिफाफे में नोट भेज सकते हैं, परन्तु बीमा करना होगा। सेविंग बैङ्क में रुपया जमा करा सकते हैं, सूद मिलेगा। जरूरी समाचार कुछ ही मिनटों में तार-द्वारा भेज सकते हैं।

४. डाकघर से हमारे पास चिट्ठियाँ, पार्सल, मनीआर्डर इत्यादि जो दे जाता है, उसे डाकपिउन कहते हैं। वह सदा नियत दिन पर आता है। डाकपिउन को दरमाहा मिलता है। वह हम लोगों से कुछ नहीं माँगता। हाँ, बैरङ्गपत्रों का महसूल अवश्य लेता है।

५. सचमुच सभ्य-समाज का डाक ने बड़ा ही उपकार किया है। यदि १० दिन भी यह प्रबन्ध बिगड़ जाय तो भारत ही क्या, संसार में खलबली मच जाय। यदि डाक का प्रबन्ध टूट जाय तो सरकार को शासन करना कठिन हो जाय। कहिये, क्या कोई भी आदमी पाँच नये पैसे में हमारा पत्र दो चार कोस भी पहुँचा सकता है? नहीं। परन्तु डाक से पाँच नये पैसे में कितनी दूर? आठ-दस सौ कोस! हमारे ही पैसे से हमारा प्रबन्ध!

समाचार-पत्र

१. परिचय। २. कौन लिखता है। ३. जन्म का इतिहास। ४. समाचार-पत्र में क्या रहता है। ५. लाभ, हमारे देश में समाचार-पत्रों में रुचि नहीं। ६. संचालन। ७. सरकार और समाचार-पत्र।

१. समाचार-पत्र में खबरें रहती हैं। आजकल सुधार और उपदेश की बातें भी छपती हैं। यह नियत दिन पर निकलता है। कोई प्रतिदिन, कोई एक हफ्ते पर, कोई पन्द्रह दिन पर और कोई एक महीने पर निकलता है। हमारा 'बालक' पत्र और बाबूजी का 'हिमालय' पत्र दोनों एक महीने पर निकलते हैं।

२. समाचार-पत्र को कई आदमी निकालते हैं, परन्तु ऊपर एक ही का नाम रहता है, उसको 'सम्पादक' कहते हैं। इन दिनों हमारे 'बालक' पत्र के सम्पादक आचार्य श्रीरामलोचन-शरणजी हैं। 'हिमालय' का भी सम्पादन शरणजी ही करते हैं।

३. सबसे पहला समाचार-पत्र इटली के वेनिस नगर से निकला था। अब तो संसार के सभी देशों से समाचार-पत्र निकलते हैं। हमारे भारत से कई सौ पत्र निकलते हैं। हमारा 'बालक' तीस बरस से निकलता है और 'हिमालय' दो बरसों से।

४. कोई समाचार-पत्र राजा-प्रजा की बातें बतलाता है, कोई धर्म-चर्चा करता और कोई किसान की बातें कहता है। हमारा 'बालक' पत्र बच्चों की बातें कहता है और 'हिमालय' हिन्दी-साहित्य की।

५. समाचार-पत्र सबको पढ़ना चाहिये। इससे अपने देश की भलाई-बुराई मालूम होती रहती है। हम भी छुट्टी के समय

'बालक' पत्र पढ़ा करते हैं। हमारे देश में लोग माँग-माँगकर पत्र पढ़ते हैं, यह ठीक नहीं। सभी पढ़े-लिखे लोगों को एक-न-एक समाचार-पत्र मँगाकर पढ़ना चाहिये। अँगरेजों के देश में कुली भी अखबार खरीदता है। हम 'बालक' पत्र को सँभालकर रखते हैं, परन्तु बहुत-से लोग समाचार-पत्रों को दूकान पर बेच देते हैं। दूकानदार उनसे पुड़िया बाँधता है। अफसोस !

६. भारत में किसी व्यक्ति-विशेष के प्रबन्ध से 'समाचार-पत्र' चलता है। जहाँ वे मरे या उनका उत्साह घटा कि पत्र बन्द हुआ। हमारा 'बालक' अभी ठिकाने से चल रहा है, आगे ईश्वर जाने।

७. कभी-कभी सरकार 'सम्पादक' को जेल भी देती है। सम्पादक को उचित है कि सच्ची-सच्ची बातें लिखे और स्पष्ट लिखे कि सबकी समझ में आवे। 'हमारे बालक' की भाषा बहुत ही मीठी है। हमलोग रंग-विरंग के कपड़े और गहने पहनते हैं। हमारा 'बालक' भी बहुत सुहावना है, उसमें भी रंग-विरंग के चित्र हैं।

पुस्तक

संकेत—

१. परिचय—एक वही जिसमें अपने या दूसरे के मन के भाव। २. लाभ—एकान्त का मित्र, पुस्तकों में बुद्धिमान् लोगों की विचारी हुई अच्छी-अच्छी बातें, जिनके पढ़ने से उन्नति, चरित्र-सुधार, ज्ञान-प्राप्ति। ३. कैसी पुस्तकें पढ़ी जायँ ? बच्चों को बुरी पुस्तकें कभी नहीं, रामायण, महाभारत इत्यादि के आधार पर बनी पुस्तकें। ४. पुस्तकें किस प्रकार पढ़ी जायँ ? सोच समझकर, हरएक अध्याय का तत्त्व समझते हुए, उपयोगी

बातों को नोट-बुक में लिखते हुए, सभी पुस्तकों में सचाई, बुरी, दो ही एक पुस्तकों में रुकावट, अच्छी। हाँ, एक विषय की पूरी जानकारी के साथ अन्य विषयों की साधारण जानकारी उचित।

संकेत—

जल

१. जल का नाम जीवन, प्राकृतिक पदार्थ, आक्सीजन और हाइड्रोजन का मेल। २. कोई रंग नहीं, कोई आकार नहीं, गंध नहीं, तनिक भी दबनेवाला नहीं। ३. स्वच्छ जल की पहचान, रंग और गंध-रहित। ४. शरीर में और सारी पृथ्वी में पाँच भागों में तीन भाग जल। ५. सूर्य की गर्मी से भाफ, भाफ से समय पर वर्षा, 'वर्षा से कुएँ, तालाब, झरने, नदी इत्यादि जल से पूर्ण'। ६ सभी जीवों और पौधों का जल ही जीवन, सभी पदार्थों की पवित्रता जल ही से, जल के बिना सृष्टि असम्भव।

संकेत—

हवा

१. जल की भाँति हवा में भी दो मुख्य पदार्थ (आक्सीजन और नाइट्रोजन)। २. अदृश्य हवा के कार्यों का देखना, हवा के बिना पाँच मिनट भी जीना असम्भव, परन्तु पानी और भोजन के बिना कुछ दिनों तक जीना सम्भव। ३. हवा का सर्वत्र वास, कोई रूप-रंग नहीं, हवा का गर्मी से फैलना और सर्दी से सिकुड़ना, हवा में कोई गन्ध नहीं, गर्मी से अकुलाहट और हवा से जी को चैन। ४. वायु, पवन, आँधी, तूफान, बवंडर इत्यादि हवा के नाम। ५. स्वच्छ हवा से स्वास्थ्य, गन्दी हवा से बीमारी, साँझ-सबेरे स्वच्छ वायु में टहलना स्वास्थ्यवर्द्धक।

विद्या

१. विद्या क्या है? २. पूरी विद्या पाने का उपाय। ३. लाभ। ४. विद्या-प्राप्ति के स्थान।

१. विद्या का अर्थ है जानना। जो मनुष्य की छिपी हुई शक्तियों को खोल दे और जिससे किसी वस्तु का उचित ज्ञान प्राप्त हो जाय उसीका नाम विद्या है।

२. पुस्तकों का पढ़ना तो विद्या का केवल एक अंग है। यदि हम पूरी विद्या पाना चाहते हैं तो हमें चाहिये कि संसार की वस्तुओं को अच्छी रीति से देखें और पुस्तकों के सहारे उन पर विचार करें कि जो कुछ उनमें लिखा है, ठीक है या नहीं। यदि पढ़ने-लिखने से किसी वस्तु की ठीक-ठीक जानकारी नहीं हुई तो सब व्यर्थ।

३. जिसने विद्यारूपी गहना पहन लिया है उसे दूसरे गहने की जरूरत नहीं। राजा अपने देश में मान पाता है, परन्तु विद्वान् सभी जगह। दूसरे, धन के लिये ताले लगाने पड़ते हैं, विद्यारूपी धन के लिये नहीं। और धन खर्च करने से घटता है, परन्तु विद्यारूपी धन बढ़ता है। धन का बँटवारा होता है, परन्तु विद्या का नहीं। स्त्री, पुत्र, भाई स्वार्थ के प्रेमी हैं, परन्तु विद्या निःस्वार्थ प्रेम रखती है। धन से हम अमर नहीं हो सकते, परन्तु विद्या हमारे नाम को मरने के पीछे भी रखती है। विद्वान् विद्या के सहारे दूसरे के नाम को भी अमर करते हैं, परन्तु धनवाले नहीं।

सभ्य जातियों ने विद्या ही के बल से सभ्यता पाई है और रेल, तार, जहाज, तोप, विमान इत्यादि वस्तुएँ बनाई हैं तथा पृथ्वी के भीतर से सोना, चाँदी इत्यादि निकाल कर धनी हुई हैं।

जब तक हमारी आर्य जाति विद्या को भली-भाँति अपनाये रही, संसार भर में पूजी गई। हमारा ध्यान फिर विद्या की ओर गया है। सचमुच विद्या सर्वोत्तम धन है। यह अपनी उपमा नहीं रखती।

४. विद्या जहाँ मिल जाय, वहीं से सीख लेनी चाहिये। जिस प्रकार अपवित्र स्थान में पड़े हुए सोने को कोई नहीं छोड़ता, उसी प्रकार यदि अपने से नीच के पास भी विद्या हो तो अवश्य प्राप्त करनी चाहिये। जो विद्वान् है वही बड़ा है।

संगति

१. परिचय। २. संगति की आवश्यकता। ३. कैसी संगति। ४. अच्छी संगति। ५. बुरी संगति। ६. कुसंग से बचाव। ७. सत्संगति की आदत।

१. हम सदा लोगों में रहना पसन्द करते हैं, सदा दूसरों का साथ ढूँढ़ते हैं। संसार में शायद ही कोई मिलेगा जो अकेला रहना चाहता हो। अकेला रहना दुखदाई है। यही कारण है कि मनुष्य अपने मन के अनुसार संग पसंद कर लेता है।

२. जो भात हम खाते हैं उसके तैयार होने में सैकड़ों मनुष्यों के हाथ लगे हैं। हलवाहे से लेकर रसोइये तक। इतना ही नहीं, लुहार, बढ़ई, मजूरे इत्यादि भी उसमें लगे हैं। केवल भोजन ही नहीं, संसार की सभी चीजें संगति से ही मिलती हैं।

३. संगति से ही मनुष्य पर अच्छे और बुरे का फल पड़ता है। जो अच्छे लोगों के बीच में रहता है उसके संस्कार अच्छे

होते हैं और जो बुरों के साथ रहता है उसके बुरे ! इसलिये हमें उचित है कि अच्छों की संगति में रहें।

४. यह सत्संग ही का फल है कि फूलों के साथ कीड़े देवता के मस्तक पर चढ़ते हैं। दूध के साथ पानी बिक जाता है। पान के साथ पत्ते भी बड़ों के हाथ पहुँचते हैं। हवा के साथ-साथ बुरी चीजें भी अच्छी जगह पहुँच जाती हैं। चंदन के वन में दूसरी चीजें भी सुगन्धित हो जाती हैं। सचमुच सत्संग का फल बहुत ही बड़ा है। वे धन्य हैं जो सदा सत्संग ही में रहते हैं।

५. अपने घोड़े को गधों के घर में बाँध दीजिये और कुछ नहीं तो वह दुलत्ती चलाना अवश्य ही सीख जायगा। कोयले की दलाली कीजिये, हाथ जरूर ही काले हो जायँगे। किसी वस्तु को लेकर नमक के बोरे में रख दीजिये, कुछ दिनों के बाद वह भी नमक हो जायगी। यही हालत हमारे लिये भी है। यदि हम जुआरी, चोर इत्यादि का संग करेंगे तो हम भी उनके ऐसे जरूर हो जायँगे।

६. बुरी संगति में रहकर कोई भी अच्छा नहीं रह सकता। यदि संयोग से कोई बुरी संगति में पड़ जाय तो उसे उचित है कि वह अपनी दृढ़ता को न छोड़े। सदा अच्छे कामों में लगा रहे और ऐसी चाल चले कि बुरे भी सुधर जायँ।

७. माता-पिता को उचित है कि बच्चों पर बचपन ही से नजर रक्खें। किसी भी हालत में बुरी संगत में न जाने दें। बच्चों का हृदय कच्चा होता है, उनपर दूसरों का रंग शीघ्र ही चढ़ जाता है। यदि सत्संग में रहेंगे तो आगे चलकर वे 'पवित्र जीवन' बितावेंगे।

मित्रता

१. आवश्यकता। २. कैसे मनुष्यों में मित्रता हो सकती है। ३. सच्चे मित्र के लक्षण। ४. कपटी मित्र के लक्षण। ५. उपसंहार।

१. मनुष्य का स्वभाव है कि वह अकेला रहना नहीं चाहता। अकेला वही रहना चाहता है जो देवता है या पशु। अकेला रहना बहुत ही दुखदाई है। अकेला रहना कड़ा दंड समझा जाता है। यही कारण है कि किसी-न-किसी से हम मित्रता कर ही लेते हैं।

२. एक अवस्थावाले लोगों के बीच मित्रता होने की आशा रहती है। जिनकी इच्छा एक है, जो एक ही प्रकार के कार्य से अनुराग रखते हैं, उन्हीं में स्वाभाविक मित्रता होती है। बच्चे और बूढ़े में, धनी और निर्धन में तथा पंडित और मूर्ख में मित्रता होना असम्भव है।

३. सच्चा मित्र अपने मित्र की भलाई में सदा लगा रहता है। वह उसे बुरी राह से रोककर अच्छी राह पर ले जाता है। सच्चा मित्र अपने मित्र से बदला नहीं चाहता और न अपना कोई कार्य साधता है। वह लेन-देन में बहाना नहीं करता। वह दुःख में हाथ बँटाता है और अच्छे कामों में उत्साह दिलाता है। सच्चा मित्र, मित्र के लिये समय पड़ने पर प्राण तक निछावर कर देता है।

४. कपटी मित्र अपने मित्र के आगे मीठी-मीठी बातें बनाता है और पीछे उसकी शिकायत करता है। सुख में साथ देता है और दुख में छोड़ देता है। मतलब निकालने के लिये खूब प्रेम दिखलाता है और जहाँ मतलब सधा कि खिसक

पड़ता है । मौका लगने पर अपने मित्र के प्राण तक ले लेता है । ऐसे कपटी मित्र से सदा बचना चाहिये ।

५. जिसको सच्चा मित्र है वह सचमुच भाग्यशाली है। इसलिये हमें उचित है कि संसार में सुख से रहने के लिये सच्चे मित्र की खोज में रहें और जब मिल जाय तब उसे हीरे की कनी समझ जीवनरूपी अँगूठी में जड़ दें ।

सेवक सठ नृप कृपण कुनारी । कपटी मित्र शूल सम चारी ॥

उद्यम

१. उद्यमी पुरुष । २. हमारे धनी-मानी । ३. उद्यम से लाभ । उदाहरण । ४. उद्यम के लिये नियम ।

उद्योगी नर सिंह को, आवत सम्पति भूर ।
दैव दियो मिलि हैं जु नर, कहत सु ते अति कूर ॥

१. हम उद्यम को बहुत प्यार करते हैं; क्योंकि हमें फिक्र है कि उद्यम नहीं करेंगे तो खायँगे कहाँ से ! सवेरे उठकर नित्य-कर्म समाप्त किया और लगे उद्यम करने । इसी धुन में १२ बज गये । भोजन आया, आनन्द से खा रहे हैं । वाह ! खूब ही अच्छा है । ठीक है, भूख में जो मिल जाय वही अमृत है । फिर कार्य करने लग गये । जो खाया था, पच गया । सन्ध्या हुई । चारपाई पर जाते ही नींद आई । करवट फेरते ही भोर हो गया । वाह कैसा आनन्द है ! न दवा की जरूरत है न बीमारी की चिन्ता !

२. अच्छा, अब धनी पुरुषों की हालत देखिये । आठ-नौ बजे पलँग पर से उतरे । अच्छे-से-अच्छा भोजन निगला और गद्दी पर जा डटे । साँझ होती ही नहीं, दिन न हुआ शैतान की

शाँत हो गया । यदि यार-दोस्त आ गये तो ताश-शतरंज ही में जी बहला। फिर जा डटे बग्गी पर, बग्गी पर से उतरकर फिर आये गद्दी पर। रात हुई, भोजन किया, और लगे नींद की बाट जोहने । दिन सोना, रात सोना । नींद कहाँ से आवे ? यदि पलकें लगीं तो सपने ही देखते हैं। उसपर भी शिकायत यह कि भोजन पचता ही नहीं । लगे पाचक और दवाओं की सहायता लेने । एक-दो दिन की बात नहीं; बेचारी दवाएँ भी थक जाती हैं। भला ऐसे बाबुओं को आनन्द कहाँ ? रात-दिन रोगी बने रहते हैं। इसका कारण क्या है ? उद्यम से भागना।

३. काम न करने से शरीर गड़बड़ा जाता है और रोग गले पड़ जाते हैं। "खाली मन पिशाच का कारखाना"। यदि हम ख़ाली रहेंगे तो बुरी-बुरी बातें सोचा करेंगे ! इसलिये यदि हम इन बुराइयों से बचना चाहते हैं और यदि हम इस शरीर को स्वस्थ रखना चाहते हैं तो हमें उचित है कि सदा एक-न-एक अच्छा काम अपने हाथ में लिये रहें और एक मिनट भी व्यर्थ न जाने दें।

बाबू लंगटसिंह, पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर इत्यादि जितने नामी पुरुष हो गये हैं, वे सदा उद्यम में लगे रहते थे। काहिलों ने संसार में कुछ भी नहीं किया, इसलिये उनके नाम भी कोई नहीं जानता।

४. उद्यम के लिये प्रकृति के नियम को नहीं तोड़ना चाहिये। नदी की धारा के प्रतिकूल तैरने में डूब जाने का भय है। बहुत-से लोग विचारते हैं कि हम जल्दी-जल्दी कार्य करके या सदा काम में लगे रहकर अपना समय बचावेंगे, परन्तु यह एक भारी

भूल है। ऐसा करने से कार्य और स्वास्थ्य दोनों बिगड़ जाते हैं। बीच-बीच में आराम करते हुए दृढ़ता और नियम के साथ उद्यम करने ही से सफलता मिलती है।

दया

१. परिचय। २. दया क्यों करनी चाहिये। ३. हमारे बुरे व्यवहार और उनके फल। ४. हम दया कैसे दरसा सकते हैं?

१. किसी जीव को किसी प्रकार का दुःख नहीं पहुँचाना दया है।

२. हमारी-सी जान सभी जीवों की है। जिस प्रकार काँटा गड़ जाने से हमें दुःख होता है उसी प्रकार दूसरे जीवों को भी होता है। जिस तरह हम चाहते हैं कि कोई हमें दुःख न दे उसी तरह हमको भी चाहिये कि किसीको दुःख न पहुँचावें।

३. संसार के सभी जीव किसी-न-किसी तरह हमारी भलाई करते हैं। गाय हमें मोटा-ताजा और तन्दुरुस्त बनाती है। घोड़े की पीठ पर हम छैल-चिकनियाँ बने फिरते हैं। बैल हमारे खेत जोतकर अनाज उपजाते हैं। कुत्ते हमारे घर की रखवाली करते हैं। इत्यादि।

यदि कोई बच्चा अपने भाइयों और बहनों को दुःख देता है तो उसका बाप दण्ड देता है। संसार का बाप ईश्वर है, इसलिये सभी जीव भाई-भाई हुए। यदि हम किसी जीव को दुःख देंगे तो ईश्वर जरूर दण्ड देगा।

हमलोगों में से बहुतों का व्यवहार जीवों के साथ अच्छा नहीं। कितने तो जीवों को मार डालते हैं—शिकार में खुश होने के लिये और जीभ के लिये। जिन जीवों को हम पालते हैं उनसे काम तो बहुत लेते हैं और खाने को अच्छी तरह नहीं देते। न

अच्छा पानी पिलाते हैं और न अच्छी हवा में रखते हैं। बूढ़े होने पर कसाई के हवाले करते हैं। हा! कैसी निर्दयता है?

खूब याद रखिये, इन बुरे कार्यों के लिये ईश्वर जरूर हमें दंड देगा। निर्दय व्यक्ति ईश्वर का प्रेमी नहीं हो सकता। संसार के लोग भी उससे घृणा करते हैं। निर्दय पुरुष का मन पापमय हो जाता है और उसकी उन्नति रुक जाती है।

४. हम दया कैसे दरसा सकते हैं? जीवमात्र को सब प्रकार से सुखी रखना, जिसको कोई नहीं पूछनेवाला है उसको अवलम्ब देना, वस्त्र-हीन को वस्त्र देना, भूखे को भोजन देना, प्यासे को पानी देना, पीड़ितों की पीड़ा दूर करना, दूसरे के दुःख में दुखी होना और सुख में सुखी होना—इत्यादि कार्यों ही से हम दया दरसा सकते हैं।

विद्वान् अपने उपदेशों से, बलवान् बल से, शक्तिमान् शक्ति से, धनी धन से और असमर्थ मीठी बातों ही से दूसरों पर दया दिखला सकते हैं।

माता-पिता के प्रति हमारा कर्त्तव्य

१. माता-पिता हमारे लिये क्या करते हैं? २. हमको उनके लिये क्या करना चाहिये? ३. उदाहरण। ४. आजकल के युवक माँ-बाप को क्या समझ रहे हैं? ५. उपसंहार।

१. माँ-बाप हमारे साक्षात् देवता हैं। यदि हमारे बचपन में वे ध्यान न देते तो हमारे प्राण नहीं बचते। जाड़े के महीनों में रात को माँ की गोदी में सोना, उसके कपड़े में मल-मूत्र त्यागना, माँ का रात-भर भींगे कपड़े पर रहना और हमें सूखे कपड़े पर सुलाना—जब हम याद करते हैं, आँखों से आँसू गिरने लगते हैं।

बाप ने भी हमें गोद में लेकर पाला, उनकी धोती में मल-मूत्र त्याग दिया, उन्होंने हमें कपड़े-लत्ते दिये, भोजन का प्रबन्ध किया और पाठशाला में पढ़ने को बिठाया—इन बातों को विचारते ही ऐसा कहना पड़ता है कि माता के बाद पिता भी हमारे पूज्य देवता हैं।

यह सभी जानते हैं कि जब दुधमुँहा बच्चा बीमार पड़ता है तब माता आप दवा खाती है और उपवास करती है। बाप अपने बच्चे को सुखी देखने के लिये क्या-क्या नहीं करता—भीख भी माँगता है। क्या माँ और क्या बाप, दोनों अपने बच्चे के सुख के लिये प्राण तक देने को तैयार रहते हैं।

२. जब यह बात साबित है कि माता-पिता के समान हितैषी इस संसार में हमारा कोई भी नहीं, तब सोचना चाहिये कि हम उनकी की हुई भलाइयों का बदला क्या दें? हम बदला चुका ही नहीं सकते, इसलिये यह उचित है कि मन, वचन और कर्म से उनकी आज्ञा मानें, सदा सेवा में लगे रहें, देवता समझ कर उनकी भक्ति करे और जब वे बूढ़े हो जायँ तब उनकी सभी जरूरतों को पूरा करें तथा अपने को उनके बुढ़ापे की छड़ी बना दें।

३. भारतवासी सदा से अपने माता-पिता को देवता समझ कर पूजते आ रहे हैं। राम ने पिता की बात सत्य करने के लिये वन-गमन किया। भीम माता की आज्ञा पाकर राक्षस के मुँह में जाने से भी नहीं डरे। देवव्रत ने पिता की तृप्ति के लिये राज्य छोड़ दिया और विवाह तक नहीं किया, जिससे वे भीष्मपितामह के नाम से प्रातःस्मरणीय हो रहे हैं। अभी-अभी गांधीजी ने अपने माँ-बाप की सेवा का अनुपम उदाहरण सामने रक्खा है।

४. शोक है कि आजकल के पढ़े-लिखे लड़के माता-पिता का पालन करना बोझ समझते हैं। कितने तो उन्हें असभ्य और भोंदू समझते हैं और अपने जान-पहचान वालों को अपने 'माता-पिता' बताना लज्जा की बात समझते हैं! धिक् हमारी शिक्षा! क्या ऐसी अवस्था सचमुच पशु की नहीं?

५. हम लोगों को खूब समझ रखना चाहिये कि माता-पिता के आशीर्वाद और शाप ही में हमारा उदय और प्रलय है।

शिक्षक के प्रति विद्यार्थी का कर्त्तव्य

१. शिक्षक से विद्यार्थी का सम्बन्ध और उपकार। २. विद्यार्थी का कर्त्तव्य, पढ़ने के समय, पढ़ चुकने पर, उदाहरण। ३. शिक्षक के दिये हुए ज्ञान का बदला चुकाना।

१. माता-पिता हमें पाल-पोसकर बड़ा बनाते हैं सही; परन्तु रुखड़े पत्थर के समान। इस रुखड़े पत्थर को ज्ञान और उपदेश से छील-छालकर मनुष्य बनाना सच्चे शिक्षक का काम है। सच्चे शिक्षक के उपदेश से हममें मानसिक बल आता है, अच्छे-अच्छे गुण आते हैं और हम उन्नति के सच्चे नियमों को सीखते हैं।

२. हमें उचित है कि जब शिक्षक पढ़ाने लगें, उनकी बात ध्यान से सुनें। शिक्षक से बे-अदबी न करें, भेंट होने पर प्रणाम करें और नम्र बने रहें। शिक्षक जो आज्ञा करें, उसे उसी समय कर डालें। जिस कार्य के लिये मना करें, उसे कभी न करें।

यदि कभी कोई अनुचित कार्य हो जाय तो उसे तुरन्त स्वीकार कर लें। डरकर 'नहीं' कहना अपने में बुरे गुण भरना है।

जब हम पढ़-लिखकर अपनी जीविका में लगें तब हमको उचित है कि शिक्षक की खोज-खबर लिया करें। पंडित ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने इस बात को सच्चा करके दिखा दिया है। आपने विद्या, यश और धन पाकर देश में अगुए का स्थान पाया, परन्तु जब ये घर जाते थे, अपने प्रथम शिक्षक (पाठशाला के गुरु) की सेवा में अवश्य उपस्थित होते थे और उनकी कमी को सदा दूर किया करते थे।

३. सभी वस्तुओं का मोल है, परन्तु ज्ञान अमूल्य है। शिक्षक ने बहुत दुःख झेलकर हमें ज्ञान दिया है—गधे से आदमी वनाया है। इसका बदला चुकाने के लिये संसार में कोई भी धन नहीं है। इसलिये यह उचित है कि हम सदा उनके कृतज्ञ बने रहें तथा मन, कर्म और वचन से उनकी भक्ति किया करें।

आरुणि की गुरुभक्ति और एकलव्य की गुरु-दक्षिणा इसके सच्चे उदाहरण हैं।

एकहि अक्षर शिष्य के, जो गुरु देत बताय।
धरती पर सो द्रव्य नहीं, देकर ऋण उतराय ॥

समय

१. आरम्भ। २. आज का दिन। ३. समय का सदुपयोग। ४. समय बिताने के नियम। ५. एक मिनट भी अमूल्य है। ६. घड़ी। ७. उपसंहार।

१. समय की न ओर है न छोर। कहाँ से उत्पन्न होकर कहाँ लय हो जाता है, उसका कुछ ठिकाना नहीं। समय रेलगाड़ी से भी अधिक दौड़नेवाला है। चलती हुई रेलगाड़ी तो स्पष्ट देख पड़ती है, परन्तु जाता हुआ समय नजर नहीं आता।

रेलगाड़ी रोकने से रुक जाती है, परन्तु समय की प्रवल गति को रोकनेवाला इस सृष्टि में कोई उत्पन्न ही नहीं हुआ। समय अमूल्य है, उसका एक पल भी संसार-भर की सम्पत्ति लुटा देने से नहीं लौट सकता।

२. यदि हम चाहते हैं कि हमारी कीर्त्ति पर कलंक न लगे तो जो कुछ कार्य हमें करने हैं; यदि कर सकें तो उन्हें आज ही कर डालें, कल के लिये नहीं टालें। कौन जानता है कि कल क्या होगा। अतः, प्रतिदिन प्रातःकाल ही उठकर अपनी सारी शक्ति से काम में लग जाना चाहिये। आनेवाले कल तथा जानेवाले कल की परवा नहीं करनी चाहिये। यदि आज हम सावधानी से रहेंगे तो आनेवाला कल मजे में कटेगा।

३. समय को अच्छी तरह व्यय करने ही पर मानव-जीवन की सफलता निर्भर है। जिसने अपने जीवन का एक पल भी व्यर्थ नहीं खोया, वह भाग्यवान् है। जिसने वाल्यावस्था में विद्या नहीं पढ़ी, वह जवानी में क्या करेगा और जिसने युवावस्था में गृह-कार्य को सम्हालते हुए धर्म नहीं किया, वह बुढ़ापे में सिर धुन-धुनकर मर जायगा।

४. हर काम के लिये एक समय और हर समय के लिये एक काम निश्चित कर लेना चाहिये। समय न मिलने का कारण यह है कि हमलोग नियम से काम नहीं करते। जो नित्य नियमानुसार काम करते हैं वे कभी निठल्ले नहीं वैठ सकते। जब नियत समय आवेगा उन्हें अपने कार्य सूझ जायँगे। 'खाली मन पिशाच का कारखाना।'

५. बहुत से मनुष्य सदा घंटे बचाने की चेष्टा में रहते

हैं, परन्तु वे मिनटों की कुछ भी परवाह नहीं करते । कारणवश हमें कलकत्ते जाना है, यदि एक मिनट देर से स्टेशन पहुँचें तो क्या गाड़ी मिलेगी ? यदि हमारा मित्र इस लोक से विदा होने को है और हम एक मिनट देर करके जायँ तो क्या हमें मित्र से भेंट होगी ?

"का बरषा जब कृषी सुखाने । समय चूकि पुनि का पछताने ।"

६. हमारे भारतवासी घड़ी का महत्त्व कुछ नहीं समझते । इन लोगों ने घड़ी को एक भूषण समझ रक्खा है । हमारे जानते घड़ी लटकाना कोई भूषण नहीं, यह तो समय-दर्शक यन्त्र है । यह समयानुसार काम करनेवाले मनुष्यों को सुशोभित करती तथा दूसरों को मूर्ख बनाती और नकलबाज सिद्ध करती है ।

७. सभी सभ्य और उन्नतिशील देशों में समय का बड़ा विचार रहता है । उनके सब काम समय पर होते हैं और इसीसे बड़े-बड़े काम वे थोड़े समय में कर लेते हैं । समय और नियम का ध्यान रखकर जो काम करते हैं वे ही पूर्ण उन्नति करते और असाधारण सफलता प्राप्त कर आनन्द से अपनी जीवन-यात्रा समाप्त करते हैं ।

स्वच्छता

१. स्वच्छता क्या है ? २. प्राप्ति के उपाय । ३. आवश्यकता । ४. उपसंहार ।

१. मलिनता से दूर रहना 'स्वच्छता' है । मलिनताओं से— गंदगियों से—जो दूर रहता है, वही स्वच्छ है ।

२. हमारे चमड़े में असंख्य लोमकूप हैं, जिनसे सदा शरीर के दूषित पदार्थ बाहर निकलते हैं । अतः, यह उचित है कि हम नित्य समय पर मल-मूत्र त्यागकर मुँह धोवें, स्नान करें । बालों

और नखों को साफ रक्खें, और समय पर उन्हें कटवा दिया करें।

यदि हमारे वस्त्र निर्मल न रहें और हमारे बिछावन मैले रहें तो शरीर कभी स्वच्छ नहीं रह सकता। अतः, हमें चाहिये कि उन्हें ठीक समय पर धोबी से धुलवा दिया करें या अपने से धो लें। प्रतिदिन वस्त्रों और बिछावन को धूप दिखाना उचित है।

३. घर की मलिनता से हमारा स्वास्थ्य कभी ठीक नहीं रह सकता। अतः, घर, आँगन और पास की भूमि को सदा स्वच्छ रखना चाहिये। घर भी स्वास्थ्य के नियमों के अनुसार बनाना चाहिये।

भोजन और जल दोनों पदार्थ स्वच्छ न रहें तो हम रोगों के पंजे में पड़ जायँगे। हमलोगों को चाहिये कि सदा शुद्ध भोजन करें और शुद्ध जल पीवें। बाजार की पूड़ी, मिठाई और सड़ी-गली चीजों से सदा बचते रहना चाहिये।

४. देह की स्वच्छता से केवल शरीर की ही उन्नति नहीं होती; मानसिक उन्नति भी होती है। क्या धर्म-चर्चा और क्या जीविका—सभी स्वास्थ्य पर निर्भर हैं। रुपया-पैसा रोगी को सुख नहीं पहुँचा सकता, परन्तु जिसको स्वास्थ्य-धन है, वही सचमुच सुखी है। स्वास्थ्य-धन स्वच्छता पर निर्भर है। मलिनता शरीर में नाना प्रकार के रोग लाती है। संक्रामक रोगों की चपेट में मलिन मनुष्य ही पहले पड़ते हैं। शुद्ध रहना परमेश्वर की भक्ति करने से दूसरे दर्जे पर है। मलिन पुरुष सभ्य-समाज में घृणित समझा जाता है।

५. बहुत-से लोग स्वच्छता को विलासिता समझते हैं।

जिनकी ऐसी धारणा है, उन्होंने स्वच्छता का मर्म वास्तव में नहीं समझा है। हाँ, जिन्होंने वेष-भूषा का आडम्बर रच रक्खा है, उनकी बात न्यारी है। स्वास्थ्य-रक्षा के विचार से स्वच्छता के लिये जो उचित कर्त्तव्य है, हमलोगों को वही करना चाहिये।

देवाराधन

१. अर्थ। २. देवाराधन—मनुष्यमात्र का कर्तव्य। ३. हिन्दू-मुसल्मान और क्रिस्तान के आराध्यदेव। ४. देवाराधन से लाभ। ५. उपसंहार।

१. देवाराधन = देव + आराधन।

देव का अर्थ है देवता और आराधन के पर्याय हैं उपासना, सेवा, परिचर्या, शुश्रूषा। अतः, देवाराधन का अर्थ हुआ देवता की उपासना, देवता की सेवा, देवता की परिचर्या, देवता की शुश्रूषा।

२. संसार में कितनी भी जातियाँ क्यों न हों सभी अपने-अपने देवताओं की आराधना करती हैं और सभी अपने इष्टदेव को ईश्वर या उनका अंश समझती हैं। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान और क्या क्रिस्तान—ईश्वर की उपासना करना सभी का मुख्य और पहला कर्त्तव्य है।

३. हिन्दू ईश्वर की—देवी-देवताओं की पूजा सविधि किया करते हैं। उनके यहाँ नवधा-भक्ति का विशेष वर्णन है।

मुसलमान ईश्वर को 'खुदा' के नाम से पुकारते हैं। उनकी प्रार्थना और ध्यान में लगे रहते हैं।

क्रिस्तान भी ईश्वर को पूजते हैं। वे 'भगवान्' के ध्यान और प्रार्थना में लगे रहते हैं।

हिन्दू जिन-जिन वस्तुओं में विशेषता देखते हैं, उन्हें वे ईश्वर के अंश समझते हैं और देवता-स्वरूप मानते हैं।

४. सभी को उचित है कि वे मन, वचन और कर्म से अपने इष्टदेव की आराधना करें। इससे उनका मन शुद्ध हो जायगा और वे पापों से बच जायँगे। देवाराधन से मनुष्य धर्मिष्ठ बनते हैं। उनमें धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय-निग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध इन दसों का समावेश हो जाता है, जिससे संसार की यात्रा भली-भाँति सम्पन्न होती है।

५. इनदिनों बहुत से लोग देवाराधन में आडम्बर दिखलाते हैं। इसी दुर्दशा के कारण सारे सद्गुण उनसे दूर होते जा रहे हैं। इसका असर समाज पर बुरी तरह से पड़ता है, जिससे हमारा जीवन कलंकों से आच्छादित-सा दीख पड़ता है। अतः, हमलोगों को आडम्बर से दूर रहना चाहिये।

नशे से हानि

१. नशेबाज का मस्तिष्क और शरीर। २. उसका चित्त। ३. उसका रोग। ४. उसकी चाह। ५. उसका धर्म। ६. डाक्टरों की राय।

१. नशे से मस्तिष्क को क्षोभ और बुद्धि को जड़ता प्राप्त होती है। इससे शरीर पर बड़ा ही बुरा प्रभाव पड़ता है तथा रक्त में गर्मी आ जाती है जिससे मन में कुछ उमंग-सी जान पड़ती है। उस उमंग में मनुष्य को अपना-पराया कुछ भी नहीं सूझता; वह जो चाहे कर बैठता है। उसके उत्तम आचार-विचार सब भ्रष्ट हो जाते हैं।

२. नशेबाज का चित्त ठिकाने नहीं रहता, अतएव वह अपने दैनिक कार्यों का उचित रूप से सम्पादन नहीं कर सकता

है। उसका बहुमूल्य समय यों ही निकल जाता है और अन्त में पछताने के सिवा उसके हाथ कुछ भी नहीं लगता।

३. नशे से मनुष्य की पाचन-शक्ति बिगड़ जाती है, जिससे शरीर रोगों का घर हो जाता है। इसकी चाट ऐसी बुरी होती है कि बिना इसके कल नहीं पड़ती। ज्यों-ज्यों यह चाट बढ़ती जाती है, शरीर शिथिल होता जाता है और हाथ-पैर बेकाम होते जाते हैं। देखा गया है कि जो बड़े शराबी हैं उन्हें लकवा, वातरोग, मूत्ररोग, चर्मरोग और कम्पवायु इत्यादि बहुत-सी बीमारियाँ हो गई हैं और उन्होंने इस संसार को शीघ्र ही अपने से खाली कर दिया है।

४. नशेबाज अपनी चाह को रोक नहीं सकता, इसलिये वह अपनी सारी सम्पत्ति इसीके पीछे स्वाहा कर देता है और निर्धन हो जाता है तब वह चोरी, कपट इत्यादि नाना प्रकार के दुराचारों के पाले पड़ जाता है तथा उसके बाल-बच्चे भूखों मारे-मारे फिरते हैं।

नशेबाज धर्म को चुनौती देता है। हमारे धर्मशास्त्रों ने नशे को परम निषिद्ध माना है। सामाजिक प्रथा भी इस दुर्व्यसन को घृणा की दृष्टि से देखती है और नशेबाज का मान नहीं करती।

५. बड़े-बड़े डाक्टरों ने इस बात को सिद्ध कर दिया है कि शराब, स्पिरिट, भाँग, गाँजा, चरस, चंडू, मदक, तम्बाकू इत्यादि से शरीर को कोई लाभ नहीं, बल्कि बड़ी भारी हानि है। अतः, बुद्धिमानों को उचित है कि वे नशीली चीजों से अलग रहें और इस बात को ध्यान में रक्खें कि नशेबाज की आयु बड़ी नहीं होती तथा वह अपना सुनाम नहीं छोड़ जाता।

गुरु-भक्ति

१. गुरु। २. गुरु-भक्ति। ३. आवश्यकता। ४. गुरु-भक्ति के कार्य। ५. उदाहरण।

१. गुरु शब्द का व्यापक अर्थ 'भक्तिभाजन या पूजनीय व्यक्ति' है, परन्तु इसका साधारण अर्थ विद्यादाता या मंत्रदाता लिया जाता है। लोक में वयोवृद्ध पूजनीय हैं। परिवार के भीतर हमारी अवस्था से बड़े सभी गुरु हैं। ईसा, मूसा, बुद्ध, मुहम्मद, गांधी इत्यादि संसार के धर्मगुरु हैं। व्यास, वाल्मीकि, शेक्सपियर, गेटे और सुकरात इत्यादि शिक्षा-गुरु हैं। गुरुओं में हमारे माता-पिता का स्थान बहुत ही बड़ा है। मंत्रदाता और विद्यादाता का स्थान पिता के समान है।

२. उपर्युक्त गुरुजनों के प्रति अनुराग के साथ सम्मान प्रदर्शित करना,ही गुरु-भक्ति है। भक्ति-भाजन की भक्ति करना संसार के सभी धर्मशास्त्रों का सिद्धान्त है। भक्तिहीनता से मनुष्य अहंकारी और अविनयी हो जाते हैं। मदोन्मत्त मनुष्य पशु के समान हैं।

३. हमारे वयोवृद्ध संसार की बहुत-कुछ जानकारी रखते हैं, जिसके सहारे वे हमारी बुद्धि का सुधार करते रहते हैं। पिता-माता की कृपा का फल हमारा यह जीवन है। उन्हींके स्नेह और यत्न से हम इस जीवन-संग्राम के लिये शक्ति प्राप्त कर सके हैं। मन्त्रदाता परलोक में सद्गति-लाभ के लिये राह बतलाते है। इसी प्रकार धर्म-गुरु और शिक्षा गुरु के भी कार्य हैं।

४. गुरुजनों की आज्ञा का पालन, उनके प्रिय कार्यों को कर देना, उनकी सेवा, उनके समीप विनीत भाव से रहना इत्यादि

गुरु-भक्ति के कार्य हैं। गुरुजनों के सामने उद्दण्डता दिखलाना एकदम अनुचित है। उनकी आज्ञा नहीं मानना भारी पाप है।

५. रामचन्द्र और भीष्म की पितृ-भक्ति, लक्ष्मण और भरत की भ्रातृ-भक्ति, एकलव्य और उपमन्यु की गुरु-भक्ति, पांडवों की मातृ-भक्ति, हनुमान की प्रभु-भक्ति इत्यादि उत्तम दृष्टान्त हैं।

सचमुच भक्तिहीन व्यक्ति के हृदय की अवस्था बहुत ही बुरी रहती है, उसके चित्त में किसी गुण का सम्यक् विकास नहीं होता।

उत्साह

१. आरम्भ। २. उत्साही। ३ उत्साह में विश्वास। ४. उदाहरण। ५. अन्त।

१. कभी हम अपने हृदय को काम करने में लगा हुआ देखते हैं और कभी उसे शिथिल पाते हैं, कभी उसे उमंगों से भरा देखते हैं और कभी हमारा हृदय चेष्टा से रहित जान पड़ता है। या यों कहो कि हृदय में कभी चेतनता रहती है और कभी उसमें शिथिलता। जब हृदय में चेतना आती है तब उस अवस्था को उत्साह की अवस्था कहते हैं।

२. उत्साह से भरा हुआ हृदय ठीक उस जहाज के समान है जो समुद्र की अनन्त जलराशि पर लहराता हुआ जा रहा है। जिसके हृदय में उत्साह है उसे हरदम विजय की आशा बनी रहती है, वह अपने जीवन को खेल समझता है। जो अनुत्साही है उसकी आँखों के सामने सदैव अँधेरा छाया रहता है। उसे अपना जीवन भी भार जान पड़ता है और उसे संसार असार जान पड़ता है। सचमुच उत्साह में जीवन है और अनुत्साह में मरण है।

३. जिन्हें उत्साह में विश्वास है, वे कभी निराश नहीं होते और न विफलताओं से घबराते हैं। वे अपनी राह आप बनाते हैं और दूसरों के लिये आदर्श बनते हैं। वे पराये मुँह की ओर देखना भी नहीं जानते। उनकी चाल-ढाल और बात-चीत में आनन्द की झलक दिखाई देती है। कर्म ही उत्साही का विशाल क्षेत्र है और निरन्तर उद्योग ही उसका अमोघ अस्त्र है।

४. सोलह बरस का अभिमन्यु उत्साही था, जो भीम और युधिष्ठिर के विचलित होने पर भी चक्रव्यूह भेदने के लिये आगे बढ़ा था। नेपोलियन उत्साही था, जिसने आल्प्स पहाड़ को सेना सहित पार किया था। बालक लव और कुश उत्साही थे, जिन्होंने रामजी के छक्के छुड़ा दिये थे। उत्साह ही के सहारे आज आकाशचारी वीर वायुयानों में उड़ते-फिरते हैं। वीर अपने प्राणों को हथेली पर रखकर काम करते हैं।

५. उत्साही पतितों को उठाता है और मृतकों को जिलाता है तथा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों फलों को दिलाता है। कार्य करनेवाली यदि कोई शक्ति है तो वह अदम्य उत्साह ही है। पुरुष-वीर दृढ़तारूपी कवच और उत्साहरूपी अस्त्र-शस्त्र लेकर मानसिक दुर्बलताओं की सेना का नाश कर देता है।

सच्चरित्रता

१. आरम्भ। २. सच्चरित्रता मनुष्य की निज की सम्पत्ति। ३. चरित्र की छाया। ४. चरित्र-रक्षा। ५. उपसंहार।

१. गौतम राजपाट छोड़कर राजा से रंक हो गये। हिंसा के विपरीत उन्होंने अपना स्वर उठाया। लोग उनके विरुद्ध हो गये। परन्तु, फिर भी वे बुद्धभगवान् हुए। प्रह्लाद पर विपत्तियों

का पहाड़ टूटा, परन्तु उसका बाल भी बाँका न हुआ। पांडव कौरवों की सुसंगठित सेना से लोहा लेने में समर्थ हुए। अभी-अभी गांधीजी ने अनुपम आदर्श संसार को दिखाया है और भारत को स्वतन्त्र करके प्राण छोड़े। वे क्यों सफल हुए? सच्चरित्रता के बल पर वे सफल हुए।

२. सच्चरित्रता मनुष्य की निज की सम्पत्ति है। संसार के सब सद्गुण एक ओर और सच्चरित्रता दूसरी ओर रखकर तौलिये। सच्चरित्रता का ही पलड़ा भारी रहेगा। यदि धन चला जाय तो कुछ हर्ज नहीं, यदि स्वास्थ्य चला जाय तो थोड़ा हर्ज हुआ, परन्तु यदि सच्चरित्रता चली गई तो सब चला गया। यदि किसीने शास्त्रों का अध्ययन किया, धर्म के तत्त्व को पहचाना, परन्तु उसके अनुकूल आचरण न किया तो सब गुड़ गोबर हो गया। किसी गधे पर ग्रन्थों का बोझ लाद दिया जाय तो क्या वह विद्वान् हो जायगा? चरित्रवान् का अल्पज्ञान भी चरित्र-हीन के अगाध पांडित्य से बढ़कर है।

३. चरित्र-निर्माण के लिये ही हम विद्याध्ययन करते हैं, साधुओं की संगति करते हैं, ग्रन्थों का मनन करते हैं और पुराणों का पारायण करते हैं। हम कुछ करें या न करें, हमारा चरित्र मानव-समाज पर निरंतर अपनी छाप छोड़ता रहता है। एक दीप्तिमान् तपस्वी के तेज को देखकर देखनेवाले के मन में जिस प्रकार प्रकाश की भावना का उदय होता है उस प्रकार एक शराबी के विकृत वदन को देखकर अन्धकार की रेखा उसके सामने प्रत्यक्ष खिंची हुई दीख पड़ती है।

४. विपत्तियों के पहाड़ टूट पड़े हैं; धन, जन, सर्वस्व हरण हो गया है, नंगी तलवार सरपर नाच रही है, हाथियों के

पाँवों तले कुचला गया है, तो भी चरित्रवान् अपने चरित्र पर अटल है। सच्चरित्र को दबानेवाली शक्ति आजतक न उत्पन्न हुई और न उत्पन्न होगी, वह अजेय है। भीष्म के पास एक चरित्र है, वे उसके बल पर कृष्ण को चुनौती देते हैं। उनके सामने कृष्ण अपना व्रत छोड़कर रथ का चक्र धारण करते हैं और भीष्म हँस देते हैं। महात्मा में चरित्र-बल है, संसार की शक्तियाँ उनको दबाने में लग पड़ती है; परन्तु वे अटल भाव से मुसकुराते रहते हैं।

५. मनुष्य-जन्म पाकर सबसे पहले हमें चरित्र-बल प्राप्त करना चाहिये। सांसारिक वैभव और सम्पत्ति पीछे की बातें हैं। समाज में विष का बीज बोनेवाले एक सम्पत्तिशाली वकील से अपने खेत पर परिश्रम करके रूखी-सूखी खानेवाला एक चरित्रवान् किसान कहीं अच्छा है। चरित्र की पवित्रता के लिये किसी विशेष वायुमण्डल की आवश्यकता नहीं। अपने धर्म को पहचानने और निश्छल भावना से काम करने से सच्चरित्रता की—शील की रक्षा सर्वत्र हो सकती है।

व्यायाम

परिभाषा, व्यायाम की आवश्यकता, तरह-तरह के व्यायाम, व्यायाम करने की रीति, व्यायाम करने का स्थान, व्यायाम नहीं करने से हानि, व्यायाम बिना आजकल के युवकों की अवस्था।

व्यापार

१. आरम्भ—खरीदने और बेचने के धन्धे का नाम व्यापार, खेती के बाद जीवन-निर्वाह का एक अच्छा उपाय। २. व्यापारी के गुण—व्यापारी में सब गुणों का होना, मनुष्य, देश और

जरूरत की जानकारी, धन्धे का ज्ञान, बोलने की चतुराई और अपने शरीर का भरोसा। ३. लाभ—व्यापार में लक्ष्मी का वास, व्यापारी का देश धनी, उदाहरण—अँगरेज, व्यापारी को जो खुशी वह नौकरों और गुलामों को नहीं, व्यापार से असभ्य भी सभ्य, व्यापारी का मन धर्म की ओर, व्यापारी के उत्साह से बड़े-बड़े काम बायें हाथ का खेल। ४ हमारे व्यापार की उन्नति—अपनी वस्तुओं के अपनाने से, देश का पक्का और बाहर का कच्चा माल खरीदने से, अपने देश से पक्का माल तैयार करके बाहर भेजने से। ५. उपसंहार—उत्तम खेती, मध्यम बान, निषिद्ध चाकरी, भीख निदान।

विभेद और तुलना

शहर और गाँव

१. परिचय। २. स्वभाव में मिलान। ३. स्वास्थ्य में मिलान। ४. भोजन में मिलान। ५. पोशाक में मिलान। ६. परिश्रम में मिलान। ७. बर्ताव में मिलान। ८. शिक्षा में मिलान। ९ उपसंहार।

१. गाँव के बसनेवाले अपने गाँव की प्रशंसा करते हैं और शहर के बसनेवाले शहर की। वे जो कुछ कहें—बेचनेवाली अपने दही को खट्टा नहीं कहती, परन्तु दोष और गुण दोनों में हैं।

२. शहर के रहनेवाले संसार के कामों में बड़े चतुर होते हैं; क्योंकि उन्हें अच्छे-बुरे सब तरह के लोगों से व्यवहार करने का मौका मिलता है। देहात के रहनेवाले सीधे-सादे और सच्चे होते हैं। देहात में कोई ठगा नहीं जाता, परन्तु शहर में लोग बात-बात में ठगे जाते हैं।

३ शहर के रहनेवाले अधिकतर कमजोर और पीले रहते हैं। कारण, शहर में जगह की कमी और कल-कारखानों तथा तेल वगैरह अधिक जलने के कारण जलवायु अच्छी नहीं रहती। देहात के रहनेवाले मजबूत और नीरोग होते हैं, क्योंकि उन्हें जगह की कमी नहीं और न उन्हें बुरी जलवायु ही मिलती है। गाँव की हरी-भरी शोभा में उनका मन खुस रहता है, परन्तु शहरवालों को यह शोभा नसीब नहीं।

४. शहरवालों को भोजन ताजा नहीं होता। वे देहात से आई हुई 'वासी तरकारियाँ, फल, मूल और दूध-घी' पाते हैं। शहरवाले दूध-घी में प्रायः कुछ-न-कुछ मिला दिया करते हैं, जिससे वे बुरे हो जाते हैं। शहरवाले जो कुछ खाते हैं जीभ के लिये, जिनसे स्वास्थ्य नहीं सुधरता। देहातियों का भोजन सादा होता है। वे अच्छा दूध, अच्छा घी, टटकी तरकारियाँ इत्यादि खाते हैं। देहातियों का भोजन शरीर को नीरोग करता है, परन्तु शहरवालों का भोजन जीभ को चटोर बनाता है।

५. शहरवाले गरीब-से-गरीब क्यों न हों, पेट खाली रहने पर भी कोट और जूता जरूर पहनेंगे और घड़ी, छड़ी अवश्य रक्खेंगे। शहरवाले ४ सेर की गठरी के लिये कुली जरूर करेंगे। देहातियों का पहनावा केवल धोती और गमछा है, जूता पहनेंगे भी तो जाड़े में ओस से बचने के लिये। लाठी हाथ में और दस-पाँच सेर की गठरी काँख में।

६. शहर में खर्च अधिक, इसलिये सवेरे से आधी रात तक प्रायः सभी परिश्रम में लगे रहते हैं। देहात में खर्च कम, इसलिये केवल अनाज बोने और काटने के समय अधिक मिहनत करनी पड़ती है।

७. देहात के लोग आपस में एक दूसरे को प्रेम से सहायता